cÖv\_wgK Bmjvg wk¶v

**[বাংলা]**

مناهج أولية في العلوم الشرعية

[باللغة البنغالية]

‡jLK : Aveyj Kvjvg Avhv` Av‡bvqvi

تأليف: أبو الكلام أزاد أنوار

m¤úv`bv : bygvb web Aveyj evkvi

مراجعة : نعمان بن أبوالبشر

## 

## Bmjvg cÖPvi ey¨‡iv, iveIqvn, wiqv`

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة الرياض

[الإسلام بين يدي الملايين! شعار حملناه لنشر الإسلام الصحيح والفقه في الدين المستمد من الكتاب والسنة بفهم سلف هذه الأمة بعشرات لغات العالم](http://www.islamhouse.com/)

cÖv\_wgK Bmjvg wk¶v

|  |  |
| --- | --- |
| welq m~Px | الفهرس |
| cÖ\_g Aa¨v : gymwjg AvKx`vn  (gymwj‡gi †gŠwjK ag© wek¦vm) | أولا : عقيدة كل مسلم |
| wØZxq Aa¨vq : cÖv\_wgK wdKvn (gvQv‡qj wk¶v) | ثانيا: مبادئ في الفقه |
| Z…Zxq Aa¨vq : Av`e, gvmv‡qj I whKi (Bmjvgx ms¯‹…wZ) | ثالثا : آداب ، و فضائل وأذكار |
| PZz\_© Aa¨vq : mxivZzb bex | رابعا : قبسات من السيرة النبوية |
| cÂg : wbe©vwPZ nv`xm | خامسا : أحاديث مختارة |

أولا

عقيدة كل مسلم

cÖ\_g Aa¨vq

gymwjg AvKx`vn

cÖ\_g cvV الوحدة الأولى

Bmjv‡gi i“Kbmg~n أركان الإســـلام

عن ابن عمر رضي الله عنهما قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: بني الإسلام على خمس: شهادة أن لا إله إلا الله، وأنّ محمداً رسول الله، وإقام الصلاة، وإيتاء الزكاة، والحج، وصوم رمضان. رواه البخاري : 8

Avãyj­vn web Dgi iv. †\_‡K ewY©Z, ivj mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg e‡j‡Qb : Bmjv‡gi wfwË cuvPwU : G mv¶¨ †`qv †h, Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ mwZ¨Kvi †Kvb gvÔe~` ev Dcvm¨ †bB Ges gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg Avj­vni ivm~j, mvjvZ Kv‡qg Kiv, hvKvZ Av`vq Kiv, nR Kiv, ighvb gv‡m wmqvg cvjb Kiv|

nv`x‡mi wk¶v ما يتعلق بالحديث

|  |  |
| --- | --- |
| Bmjv‡gi i“Kb mg~n | أركان الإســـلام |
| 1Ñ G mv¶¨ †`qv †h, Avj­vn e¨ZxZ mwZ¨Kvi †Kvb gvÔe~` †bB Ges gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg Avj­vni ivm~j| | 1- شهادة أن لا إله إلا الله، وأن محمداً رسول الله. |
| 2Ñ mvjvZ Kv‡qg Kiv| | 2- إقام الصلاة. |
| 3Ñ hvKvZ Av`vq Kiv| | 3- إيتاء الزكاة. |
| 4Ñ nR Kiv| | 4- الحج. |
| 5Ñ ighvb gv‡m wmqvg cvjb Kiv& | 5- صوم رمضان. |

Bmjv‡gi msÁv : ب- معنى الإســلام

معنى الإســلام هو: الاستسلام لله بالتوحيد، والانقياد له بالطاعة، والبراءة من الشرك وأهله.

Bmjvg n‡”Q : g‡bÑcÖv‡Y Avj­vni GKvZ¡ev‡`i ¯^xK…wZ †`qv, Bev`‡Zi gva¨‡g Zuvi AvbyMZ¨ Kiv I wkiK Ges gykwiK‡`i mv‡\_ m¤úK© wQbœ Kiv|

Kvwjgv‡q kvnv`v‡Zi A\_© : ج- معنى الشهادتين

1- معنى لا إله إلا الله : لا معبود بحق إلا الله.

1Ñ jv Bjvnv Bj­vj­vû Gi A\_© n‡”Q : Avj­vn e¨ZxZ mwZ¨Kvi †Kvb gvÔe~` †bB|

2- معنى محمد رسول الله : لا متبوع بحق إلا رسول الله صلى الله عليه وسلم.

2Ñ gynv¤§`yi ivm~jyj­vn Gi A\_© nj: ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg e¨ZxZ AbymiY‡hvM¨ Avi †Kvb †bZv †bB|

د- راوي الحديث: هو عبد الله بن عمر بن الخطاب رضي الله عنهما من كبار الصحابة وقد روى أحاديث كثيرة.

eY©bvKvix : wZwb Avãyj­vn web Dgi web LvËve iv. whwb kxl©¯’vbxq mvnvex Ges eû nv`xm eY©bvKvix|

cvV mvivsk I wk¶v :

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1- Bmjv‡gi i“Kb cuvPwU| G¸‡jv e¨ZxZ Bmjvg cwic~Y© nq bv| |  | 1- أركان الإسلام خمسة لا يتم الإســلام إلا بها. |
| 2- Bmjv‡gi Aš—f©y³ nIqvi Kvwjgv : G mv¶¨ †`qv †h, Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ mwZ¨Kvi †Kvb Dcvm¨ †bB Ges gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg Avj­vni ivm~j| |  | 2- كلمة الدخول في الإســلام هي شهادة أن لا إله إلا الله وأن محمداً رسول الله. |
| 3- gymwjg mvjvZ Kv‡qg K‡i Ges G e¨vcv‡i AjmZv K‡i bv| |  | 3- المسلم يقيم الصلاة ولا يتكاسل عنها. |
| 4- gymwjg hvKvZ Av`vq K‡i| G †\_‡K weiZ \_v‡K bv| |  | 4- المسلم يؤدي الزكاة ولا يتخلف عنها. |
| 5- evBZzj­vn ch©š— †cuŠQ‡Z m¶g e¨w³i Dci nR Kiv dih| |  | 5- الحج إلى بيت الله الحرام لمن استطاع إليه سبيلا. |
| 6Ñ gymwjg ighvb gv‡m wmqvg cvjb K‡i| |  | 6- المسلم يصوم رمضان. |
| 7Ñ Avãyj­vn web Dgi GKRb mvnvex| wZwb A‡bK nv`xm eY©bv K‡i‡Qb| |  | 7- عبد الله بن عمر بن الخطاب من الصحابة، وقد روى أحاديث كثيرة. |
| 8Ñ Bmjvg Avgv‡`i‡K Avj­vni AvbyMZ¨ I GKZ¡ev‡`i ¯^xK…wZ cÖ`v‡bi wb‡`©k †`q Ges Aeva¨Zv I wkiK †\_‡K eviY K‡i| |  | 8- الإســلام يأمرنا بطاعة الله وتوحيده وينهانا عن معصيته والإشراك به. |

Cgv‡bi i“Kbmg~n : (ب) أركان الإيمان

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يوما بارزا للناس، فأتاه رجل، فقال : يا رسول الله! ما الإيمان؟ قال: أن تؤمن بالله وملائكته وكتبه ولقائه ورسله ، وتؤمن بالبعث والآخر (أخرجه البخاري : 50 ومسلم ك 9)

Avey ûivBiv iv. †\_‡K ewY©Z, wZwb e‡jb : ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg GKw`b Rbmg‡¶ Avm‡jb| wVK ZLbB GK †jvK G‡m ejj, Bqv ivm~jyj­vn! Cgvb wK? wZwb ej‡jb, Cgvb n‡”Q : Avj­vn ZvAvjv, Zuvi †d‡ikZv, Zuvi wKZve, Zvi mv‡\_ mv¶vr Ges Zuvi ivm~jM‡Yi cÖwZ wek¦vm ¯’vcb Ges g„Zz¨i ci cybi“Ìv‡bi cÖwZ wek¦vm ivL‡e| (eyLvix, gymwjg)

nv`xm wk¶v : ما يتعلق بالحديث

Cgv‡bi i“Kb QqwU : ا- أركان الإيمان ستة وهي

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1 . Avj­vni cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 1- الإيمان بالله |
| 2. †d‡ikZvM‡Yi cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 2- الإيمان بالملائكة |
| 3. wKZvemg~‡ni cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 3- الإيمان بالكتب. |
| 4. ivm~jM‡Yi cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 4- الإيمان بالرسل. |
| 5. wKqvgZ w`e‡mi cÖwZ wek¦vm ¯’vcb |  | 5- الإيمان باليوم الآخر. |
| 6. ZvK`x‡ii fvj g‡›`i cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 6- الإيمان بالقدر خيرة وشره. |

ب- معنى الإيمان : التصديق الجازم بوجود الله، والإقرار بربوبيه وألوهيته، وأسمائه وصفاته.

Cgv‡bi A\_©: Avj­vn ZvAvjvi Aw¯—‡Z¡i cÖwZ `„p wek¦vm ¯’vcb Ges Zvi cÖfyZ¡, Dcvmbv I Zuvi wba©vwiZ bvg I ¸Ymg~n ¯^xKvi K‡i †bqv|

cvV mvivsk I wk¶v

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1- Cgv‡bi i“Kb QqwU, G¸‡jv e¨ZxZ Cgvb cwic~Y© nq bv| |  | 1- أركان الإيمان ستة لا يتم إلا بها |
| 2Ñ Avj­vni Aw¯—‡Z¡ wek¦vm ¯’vcb Ges ¯^xK…wZ cÖ`vb AZ¨vek¨K| |  | 2- الإيمان بوجود الله والإقرار به واجب . |
| 3Ñ †d‡ikZv‡`i Aw¯—Z¡ Ges Zviv b~i Øviv m„ó, G g‡g© wek¦vm ¯’vcb| |  | 3- الإيمان بوجود الملائكة وأنهم خلقوا من نور. |
| 4Ñ mKj Hkx MÖ‡š’i cÖwZ Cgvb| |  | 4- الإيمان بجميع الكتب السماوية. |
| 5Ñ Avgv‡`i ivm~j gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg mn c~e©eZ©x mKj ivm~jM‡Yi cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 5- الإيمان بجميع الرسل السابقين ورسولنا محمد صلى الله عليه وسلم. |
| 6Ñ ZvK`x‡ii fvjÑg‡›`i cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 6- الإيمان بالقضاء والقدر خيره وشره. |
| 7Ñ wKqvgZ w`e‡mi cÖwZ wek¦vm ¯’vcb| |  | 7- الإيمان باليوم الآخر. |
| 8Ñ Cgvb n‡”Q †gŠwLK ¯^xK…wZ, Avš—wiK wek¦vm Ges A½ÑcÖZ¨‡½i Avg‡ji mgwó, hv AvbyMZ¨ I ÔBev`‡Zi gva¨‡g e„w× cvq Avi cvcvPv‡ii gva¨‡g n«vm cvq| |  | 8- الإيمان إقرار باللسان وإعتقاد بالجنان وعمل بالجوارح ولأركان يزيد بالطاعة وينقص بالمعصية. |

cÖ\_g cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الأولى

1- اختر الإجابة الصحيحة وضع تحتها خطّاً.

1- mwVK DËi wbY©q K‡i bx‡P `vM `vI :

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Bmjv‡gi i“Kb : cuvPwU / QqwU / wZbwU |  | أكان الإســلام : خمسة / ستة / ثلاثة. |
| Cgv‡bi i“Kb : wZbwU / cuvPwU / QqwU |  | أركان الإيمان : ثلاثة / خمسة / ستة. |
| gymwjg Kv‡qg K‡i : hvKvZ/ mvjvZ/ wmqvg |  | المسلم يقيم: الزكاة/ الصلاة / الصوم. |
| gymwjg Av`vq Ki : mvjvZ/ hvKvZ/ wmqvg |  | المسلم يؤدي: الصلاة/ الزكاة/ الصوم |
| Avãyj­vn web Dgi : mvnvex / Zv‡eqx / Z‡e Zv‡eqx |  | عبد الله بن عمر من: الصحابة / التابعين / تابع تابعين |

2- صل من العمود الأول مع يناسبه في المعمود الثاني.

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| (1) |  | (2) |
| الإسلام هو : |  | الإيمان إقرار باللسان وأعتقاد بالجنان وعمل بالجوارح والأركان يزيد بالطاعة وينقص بالمعصية. |
| الإيمان هو : |  | الإستسلام والإنقياد لله تعالى. |
| راوي حديث أركان الإيمان : |  | عبد الله بن عمر رضي الله عنهما. |
| معنى لا إله إلا الله : |  | لا متبوع بحق إلا رسول الله. |
| راوي حديث أركان الإسلام : |  | أبو هريرة رضي الله عنه. |
| معنى محمد رسول الله |  | لا معبود بحق إلا الله. |

2| 1g As‡k D‡j­wLZ ev‡K¨i mv‡\_ 2q As‡ki mwVK I Dchy³ evK¨ hy³ Ki :

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| (1) |  | (2) |
| Bmjvg n‡”Q : |  | †gŠwLK ¯^xK…wZ, Avš—wiK wek¦vm Ges A½ÑcÖZ¨‡½i Avg‡ji mgwó, hv AvbyMZ¨ I Bev`‡Zi gva¨‡g e„w× cvq Avi Aeva¨Zv I cvcvPv‡ii gva¨‡g n«vm cvq| |
| Cgvb n‡”Q : |  | Avj­vn ZvAvjvi AvbyMZ¨ I ek¨Zv ¯^xKvi Kiv| |
| AviKvbyj Cgv‡bi nv`xm eY©bvKvix : |  | Avãyj­vn web Dgi iv. |
| jv Bjvnv Bj­vû Gi A\_©: |  | ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e¨ZxZ AbymiY‡hvM¨ Avi †Kvb Dchy³ †bZv †bB |
| AviKvbyj Bmjv‡gi nv`xm eY©bvKvix : |  | Ave~ ûivBiv iv. |
| gynv¤§v`yi ivm~jyj­vn Gi A\_© : |  | Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ mwZ¨Kvi †Kvb gvÔey` †bB| |

ج ـ أكمل الفراغات بما يناسبها من الكلمات أعلا :

wbgœ wjwLZ kãmg~n †\_‡K Dchy³ kã Øviv k~b¨¯’vb c~iY Kiv :

* الإسلام ـ شهادة أن لا أله إلا الله ـ محمدا رسول الله ـ الصلاة وإيتاء ـ وصوم رمضان ـ أبي هريرة ـ يوما ـ رجل ـ يا رسول الله ـ بالله ـ ملائكته ـ كتابه ـ لقائه ـ البخاري : 8
* عن ابن عمر رضي الله عنهما قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بنى ـ على خمس : ـــ وأن ــــــ ، وإقام ـــــ ، ــــــ الزكاة والحج ، ـــــ رواه ـــــــــ.
* عن ـــــــ رضي الله عنه قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ــــ بارزا للناس ، فأتاه ــــ، فقال ـــــ ، ما الإيمان ؟ قال : أن تؤمن ـــــ ، و ــــــ ، ـــــــ و ـــــــ ، ورسله ، وتؤمن بالبعث الآخر ـــــ الحديث. أخرجه البخاري : 50 ومسلم : 9.

wØZxq cvV : الوحدة الثانية

ZvInx`Ñ msÁv I cÖKvi : (1) التوحيد: معناه وأنواعه

معنى التوحيد هو : إفراد الله بالربوبية و الألوهية وكمال الأسماء والصفات.

msÁv: Avj­vn ZvAvjv‡K cÖfyZ¡, Dcvmbv, ¸Y I mËvMZ bv‡gi DrK‡l© GKK e‡j †g‡b †bqv|

ZvInx` wZb cÖKvi : أنواع التوحيد ثلاثة

1. توحيد الربوبية وهو : توحيد الله بأفعاله سبحانه.

1ÑZvInx`yi i“e~weq¨vn : A\_©vr Avj­vn ZvAvjv‡K wbR K‡g© GK e‡j ¯^xKvi Kiv|

مثل الخلق ، فلا خالق إلا الله.

†hgb: LvjK ev m„wó Kiv : myZivs Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ Avi †Kvb m„wóKZ©v †bB| Avj­vn ZvAvjv e‡jb :

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿62﴾: (الزمر : 62)

ÒAvj­vn me wKQyi mªóv Ges wZwb me wKQyi Kg© weavqK|Ó (m~iv AvhÑhygvi : 62)

والرزق: فلا رازق إلا الله.

wiwhK `vb Kiv, myZivs Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ Avi †Kvb wiwhK `vZv †bB|

Avj­vn ZvAvjv e‡jb:

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا.(هود: 6)

ÒAvi c„w\_ex‡Z wePiYKvix mK‡ji wiwh‡Ki `vwqZ¡ Avj­vniB|Õ (m~iv û`: 6)

والتدبير : فلا مدبر إلا الله.

Zv`exi ev cwiPvjbv Kiv: myZivs Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ Avi †Kvb cwiPvjK I e¨e¯’vcK †bB| Avj­vn ZvAvjv e‡jb :

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ (السجدة : 5)

ÒwZwb AvKvk †\_‡K c„w\_ex ch©š— mgy`q welq cwiPvjbv K‡ib|Ó (m~iv mvR`vn : 5)

ولا محي ولا مميت إلا الله.

Ges Avj­vn ZvAvjv e¨ZxZ Avi †Kvb Rxeb I g„Zz¨ `vbKvix †bB|

Avj­vn ZvAvjv e‡jb :

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴾ (سورة يونس: 56)

ÒwZwbB Rxeb I giY `vb K‡ib Ges ZuviB wbKU †Zvgv‡`i cÖZ¨veZ©b Ki‡Z n‡e|Ó (m~iv BDbym : 56)

2 ـ توحيد الألوهية: وهو توحيد الله بأفعال العباد التي أمرهم بها. مثل الدعاء، والخوف ، والتوكل، والإستعانة، والإستغاثة، فلا ندعو إلا الله.

2Ñ ZvInx`yj Djywnq¨vn: Zv n‡jv Avj­vn ZvAvjvi wb‡`©wkZ Kvh©vw` m¤úv`‡bi †¶‡Î ev›`v Avj­vn‡K GK Rvb‡e| †hgb : `yÔAv, fq, ZvIqv°zj, mvnvh¨ cÖv\_©bv Ges dwiqv` Kiv| myZivs Avgiv Avj­vn e¨ZxZ KvD‡K WvwK bv Ges Kv‡iv wbKU `yÕAv Kwi bv|

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ (سورة عافر : 60)

Ò†Zvgv‡`i cÖwZcvjK e‡j‡Qb, †Zvgiv Avgv‡K Wv‡Kv, Avwg mvov †`e|Ó (m~iv Mv wdi : 60)

ولا نتوكل إلا على الله :

Avi Avgiv †Kej Avj­vni DciB fimv Kwi, wZwb e‡jb :

وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴾ (سورة المائدة : 23)

Ò †Zvgiv Avj­vni DciB fimv Ki, hw` †Zvgiv gyÕwgb nI|Ó (m~iv gvwq`v : 23)

ولا نستعين إلا بالله :

Ges Avgiv Avj­vni wbKUB mvnvh¨ cÖv\_©bv Kwi, Avj­vn e‡jb:

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾ (الفاتحة : 5)

ÔAvgiv GKvgvÎ AvcbviB ÔBev`Z Kwi Ges GKgvÎ Avcbvi wbKUB mvnvh¨ cÖv\_©bv Kwi|Ó (m~iv dvwZnv : 5 )

3 ـ توحيد الأسماء والصفات: وهو الإيمان بكل ما ورد في القرآن والأحاديث الصحيحة من أسماء الله وصفاته، والتي وصف بها نفسه أو وصفه بها رسوله على الحقيقة.

3Ñ ZvInx`yj Avmgv Iqvm wmdvZ ejv nq : KziAvb I mnxn nv`x‡m Avj­vn ZvAvjvi †h mKj bvg I ¸Y wZwb wb‡R A\_ev Zuvi ivm~j D‡j­L K‡i‡Qb, †m¸‡jvi Dci c~Y© wek¦vm ¯’vcb Kiv|

وأسماء الله كثيرة، منها: الرحمن، الرحيم، السميع، البصير، العزيز، الحكيم، العليم، الملك، القدوس، السلام، المؤمن، المهيمن، البارئ، المصور، العزيز، الخالق.

Avj­vn ZvAvjvi bvg A‡bK : †hgbÑ ingvb, inxg, mvgx, evmxi, Avhxh, nvKxg, ÔAvjwg, gvwjK, KzÏym, mvjvg, gywgb, gynvBwgb, evix, gymvIwei, Lv‡jK| Bikv` n‡”Q -

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿22﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿23﴾ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿24﴾ (سورة الحشر : 22-24)

ÒwZwbB Avj­vn, wZwb e¨ZxZ †Kvb Bjvn †bB| wZwb A`„k¨ I `„k¨‡K Rv‡bb| wZwb Amxg `qvgq I cig `qvjy| wZwbB Avj­vn, wZwb e¨ZxZ †Kvb Bjvn †bB, wZwbB AwacwZ, cweÎ, kvwš— I wbivcËvweavqK, AvkÖq`vZv, civµgkvjx I cÖej gvnvZ¥¨kxj| Zviv hv‡K kixK w¯’i K‡i Avj­vn Zv †\_‡K cweÎ| wZwbB Avj­vn m„Rb KZ©v, D™¢veK, iƒc`vZv, DËg bvgmg~n ZvivB| b‡fvgÊj I f~gÊ‡j hv wKQy Av‡Q, meB Zuvi cweÎZv †NvlYv K‡i, wZwb civµgkvjx, cÖÁvgq|Ó (m~iv nvki : 22Ñ24)

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿11﴾ (سورة الشورى : 11)

Ò†Kvb wKQyB Zuvi m`„k bq, wZwb me© †kÖvZv me©`ªóv|Ó (m~iv ïiv Ñ 11)

ومن صفاته : العلم، والرحمة، والعزة، والحياة، والمغفرة، والإرادة، والقهر والسمع، والبصر وغيرها كثيرة مما ورد في القرآن الكريم أو أحاديث النبي صلى الله عليه وسلم.

Zuvi ¸Ymg~n : †hgbÑ Bjg, ingZ, BhhZ, Rxeb, ¶gv, B”Qv, †µva, kÖeY, I `k©bmn A‡bK hv KziAvb I nv`x‡m ewb©Z n‡q‡Q|

cvV mvivsk I wk¶v : نستخلص ونتعلم من الدرس ما يلي

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1- ZvInx` wZb cÖKvi| ZvInx`yi i“e~weq¨vn, ZvInx`yj Dj~wnq¨vn I ZvInx`yj Avmgv Iqvm wmdvZ| |  | 1- أنواع التوحيد ثلاثة هي : الربوبية والألوهية والأسماء والصفات. |
| 2- GKgvÎ Avj­vnB m„wóKZ©v, wiwhK`vZv, AwaKZ©v †es e¨e¯’vcK| |  | 2-الخالق والرازاق والمالك والمدبر هو الله وحده. |
| 3Ñ Avj­vn e¨ZxZ Ab¨ Kv‡iv wbKU `yÕAv Kie bv| GKgvÎ Avj­vn ZvAvjvi DciB ZvIqv°zj Kie Ges GKgvÎ Zuvi Kv‡QB mvnvh¨ PvBe| |  | 3- لا أدعو غير الله، ولا أتوكل إلا على الله، ولا أستعين إلا بالله. |
| 4Ñ Avj­vn Qvov Kv‡iv wbKU mvnvh¨ cÖv\_©bv Kie bv| |  | 4- لا أطلب العون إلا من الله. |
| 5Ñ gymwjg Avj­vni wbKU `yÔAv K‡i, Zuvi Dci fimv K‡i Ges Zuv‡K fq K‡i| |  | 5- المسلم يدعو الله ويتوكل عليه ويخاف منه. |
| 6Ñ Avj­vn ZvAvjvi ¸Yvewj GKgvÎ Zvi †¶‡ÎB cÖ‡hvR¨| G¸‡jv m„wó Rx‡ei ¸Yvewj m`„k bq| |  | 6- صفات الله تعالى تليق بجلاله وعظمته وليست كصفات المخلوقين. |
| 7Ñ gymwjg Avj­vn ZvAvjvi bvg I ¸Yvewji gva¨‡g Zuvi cÖksmv K‡i| |  | 7- المسلم يثنى على الله بأسمائه صفاته. |

Avj­vn ZvAvjv mKj e¯‘i m„wóKZ©v : الله خالق كل شيء

KweZv : نشيد

من أنزل الأمطارا وفجر الأنهارا

وأنبت الأزهارا تزخرف الجبال؟!

من زين السماء وجمل الفضاء

وأرسل الضياء ليرسم الظلال؟!

من أنطق اللسان وأسمع الأذانا

وعلم الإنسان وأبدع الجمال؟!

ذاك العظيم في علاه من أبدع الكون سواه؟!

(I‡i) †K bvgvj evwiaviv

wbS©wiYxi †mªvZaviv

†K dzUvj Kzmyg ivwR

†h mvRvj f~aiwMwi|

EaŸ©‡jv‡Ki AjsKiY

gnvk~‡b¨i †kvfv ea©b

†K cvVvj `xwß cÖfv

wPÎY Ki‡Z wek¦ Qvqv|

†K †kLvj fvlvÁvb

m„Rb Kij kveK Kvb

gvbyl Kij Ávbevb

Avbj aivq iƒc-bvg

gh©v`vevb wZwb AZxe gnxqvb

Ki‡e †K m„Rb

wZwb wfbœ G emyÜiv `xc¨gvb?

wkiK : msÁv I cÖKvi (ب) الشرك : معناه وأنواعه

أ ـ الشرك هو : جعل شريك لله تعالى في روبيته وألوهيته، بأن يدعو مع الله غيره، أو يصرف له شيئاً من أنواع العبادة :كالذبح والنذر والخوف والرجاء والمحبة والتوكل وغيرها.

wkiK ejv nq, i“e~weq¨vZ I Dj~wnq¨v‡Zi †¶‡Î Avj­vn ZvAvjvi Askx`vi ¯’vcb Kiv| †hgb, Avj­vni mv‡\_ Ab¨ Kv‡iv wbKU wKQy cÖv\_©bv Kiv| A\_ev R‡en, gvbœZ, fq, Avkv, gynveŸZ, ZvIqv°zj mn hveZxq ÔBev`‡Zi †h †Kvb GKwU Avj­vn e¨ZxZ A‡b¨i Rb¨ wb‡e`b Kiv| wkiK wbwl× nIqv cÖm‡½ Avj­vn ZvAvjv e‡jb:

إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴾ (سورة المائدة : 72)

Òwbðq †h e¨w³ Avj­vni mv‡\_ Askx`vi w¯’i K‡i, Avj­vn Zvi Rb¨ RvbœvZ nvivg K‡i †`b Ges Zvi evm¯’vb nq Rvnvbœvg| AZ¨vPvix‡`i †Kvb mvnvh¨Kvix †bB|Ó (m~iv gvwq`v : 72)

wkiK `yB cÖKvi : ب ـ الشرك نوعان

1ـ شرك أكبر يخرج من الملة كدعاء غير الله والتقرب بالذبائح والنذور لغير الله من القبور والجن والشياطين والخوف من الموتى أو الجن والشياطين ورجاء عير الله.

1Ñ wki‡K AvKei ev eo wkiK : hv mswk­ó e¨w³‡K Øxb †\_‡K †ei K‡i †`q| †hgb : MvBi“j­vni wbKU `yÔAv Kiv| wR¡b kqZvb I Kei RvZxq MvBi“j­vni D‡Ï‡k¨ R‡en, gvbœZ BZ¨vw`i gva¨‡g ˆbKU¨ AR©b Kivi †Póv Kiv| wR¡b kqZvb A\_ev g„Z e¨w³‡`i fq Kiv, MvBi“j­vni wbKU wKQy Avkv Kiv|

2- شرك أصغر، وهو لا يخرج من الملة وهو وسيلة إلى الشرك الأكبر كالحلف بغير الله وقول ما شاء الله وشئت والرياء.

2- wkiK AvmMi ev †QvU wkiK : GwU mswk­ó e¨w³‡K Øxb †\_‡K †ei K‡i bv| Z‡e wki‡K AvKei ch©š— †cuŠQvi gva¨g| †hgb : MvBi“j­vni bv‡g kc\_ Kiv| ما شاء الله وشئت (Zzwg Ges Avj­vn Pv‡nZv) RvZxq K\_v ejv, wiqv Z\_v †jvK †`Lv‡bv Bev`Z|

أمور يجب االحذر منها والإبتعاد عنها:

KwZcq welq hv †\_‡K mZK© \_vKv Ri“wi :

1- تعليق التمائم والحروز على الرقبة أو اليد أو الرجل أو الجسم بغرض الشفاء شرك.

1Ñ Av‡ivM¨ jv‡fi D‡Ï‡k¨ Mjv, nvZ, cv ev kix‡ii †h †Kvb ¯’v‡b ZvÕexhÑ KeP BZ¨vw` †Svjv‡bv wkiK|

وعن عقبة بن عامر مرفوعا : من تعلق تميمة فلا أتم الله له، ومن تعلق ودعة فلا ودع الله له. رواه أحمد

DKevn web Avwgi iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡ib : †h e¨w³ ZvÕexh Szjvq Avj­vn ZvAvjv †hb Zvi D‡Ïk¨ cyY¨ bv K‡ib| Avi †h e¨w³ Kz`„wó †\_‡K AvZ¥i¶vi‡\_ k•L, Kwo Szjvq Avj­vn †hb Zv‡K kvwš—‡Z bv iv‡Lb| (Avng`)

وفي رواية من تعلق تميمة فقد أشرك.

Ab¨ GKwU nv`x‡m Av‡Q, †h e¨w³ ZvÕexh Szjvq, †m wkiK K‡i|

2- وضع أصباغ أسود على جبهة الطفل بقصد رد العين وحمايته شرك.

2Ñ Kz`„wó (Awbó) †\_‡K wndvh‡Zi R‡b¨ wkï‡`i Kcv‡j Kv‡jv wZjK AvuKv wkiK|

3- إتيان المنجمين والعرافين والسحرة وتصديقهم شرك.

3- hv`yKi, MYK I †R¨vwZlxi Øvi¯’ nIqv Ges Zv‡`i K\_v wek¦vm Kiv wkiK|

في مسلم عن بعض أزواج النبي صلى الله عليه وسلم: من أتى عرافا فسأله عن شيء فصدقه لم تقبل له صلاة أربعين يوما.

mnxn gymwj‡g ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi †Kvb GK ¯¿x †\_‡K ewY©Z, †h e¨w³ MY‡Ki wbKU G‡m †Kvb wel‡q wR‡Ám K‡i Ges Zvi e³e¨ wek¦vm K‡i Zvi Pwj­k w`‡bi mvjvZ Keyj n‡e bv|

4- دعاء غير الله من الأموات والأحياء شرك.

4Ñ RxweZ ev g„Z †Kvb MvBi“j­vni wbKU `yÔAv Kiv wkiK|

5- التمسح بالقبور وتقديم القرابين لها شرك.

5Ñ eiKZ jv‡fi D‡Ï‡k¨ Kei ¯úk© Kiv, Dc‡XŠKb Dc¯’vcb Kiv wkiK|

cvV mvivsk I wk¶v : نستخلص ونتعلم من الدرس ما يلي

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1- wkiK GKwU eo ¸bvn| |  | 1- الشرك من أعظم الذنوب |
| 2- wkiK †bK Avgj webó K‡i |  | 2- الشرك يحبط العمل. |
| 3- wkiK mswk­ó e¨w³‡K Rvnvbœv‡g cÖ‡ek Kivq Ges RvbœvZ †\_‡K ewÂZ K‡i| |  | 3- الشرك يدخل صاحبه النار ويحرمه من الجنة. |
| 4- wkiK Avµvš— gykwiK‡K Avj­vn ¶gv Ki‡eb bv| |  | 4- المشرك لا يغفر الله له. |
| 5- ZvexhÑ KeP wkiK| |  | 5- التمائم والحروز شرك. |
| 6- MvBi“j­vni wbKU `yÔAv Kiv wkiK| |  | 6- دعاه غير الله شرك |
| 7Ñ Kei †Quvqv, g„Z e¨w³‡`i wbKU `yÔAv Ges mvnvh¨ cÖv\_©bvi D‡Ï‡k¨ Ke‡i hvIqv wkiK| |  | 7-الذهاب إلى القبور بقصد التمسح بها ودعاء الأموات والاستعانة بهم شرك. |
| 8- DcKvi Ges AwbóKvix GKgvÎ Avj­vn ZÔAvjv| Abyiƒcfv‡e `vZv I cÖwZ‡ivaKvixI GKgvÎ Avj­vn ZvAvjv| |  | 8- النافع هو الله والضار هو الله، والمعطي هو الله والمانع هو الله. |
| 9- Mv‡qe ev A`„k¨ m¤ú‡K© GKgvÎ Avj­vn ZvAvjvB Rv‡bb| |  | 9- الذي يعلم الغيب هو الله وحده. |

wØZxq cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الثانية

1- صل كل عبارة من العمود (أ) مع ما يناسبها من العمود (ب)

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| (ب) |  | (1) |
| * توحيد الله بأفعال العباد : * توحيد الله بأفعاله. * العلم ، القدرة ، الإرادة. * السميع، الرحمن ، الملك. * من صفات المؤمنين. * بأسمائه و صفاته. * لا يخرج من الملة ويفضي إلى الأكبر. * يخرج صاحبه من الملة ويخلد في النار. |  | * توحيد الربوبية : * توحيد الألوهية : * من أسماء الله تعالى: * من صفات الله تعالى : * المسلم يثني على الله : * التوكل على الله والخوف منه ودعاؤه: * الشرك الأكبر : * الشرك الأصغر |

1|(ب) Kjv‡g D‡j­wLZ mwVK evK¨wU (أ) Kjv‡gi ev‡K¨i mv‡\_ hy³ Ki|

|  |  |
| --- | --- |
| (أ) | (ب) |
| \* ZvInx`yi i“e~weq¨vn : | \* Bev`Z I Dcvmbvi †¶‡Î Avj­vn ZvAvjv‡K Zvi mKj K‡g© GK e‡j ¯^xKvi Kiv| |
| \* ZvInx`yj Djywnq¨vn : | \* Avj­vn ZvAvjv‡K Zvi mKj K‡g© GK e‡j ¯^xKvi Kiv| |
| \* Avj­vn ZvAvjvi mËvMZ wKQy bvg : | \* ÔBjg, Kz`iZ, Biv`vn |
| \* Avj­vn ZvAvjvi ¸YMZ wKQy bvg : | \* mvgx, ingvb, gvwjK |
| \* gymwjg Avj­vn ZvAvjvi cÖksmv K‡i : | \* gyÕwg‡bi ¸Yv¸Y| |
| \* Avj­vni Dci ZvIqv°zj Kiv, Zv‡K fq Kiv Ges Zvi wbKU `yÕAv Kiv : | \* Zvi bvg I ¸Ymg~‡ni gva¨‡g| |
| \* wki‡K AvKei ev eo wkiK : | \* Øxb †\_‡K †ei K‡i bv, Z‡e eo wkiK ch©š— †cuŠ‡Q †`q| |
| \* wki‡K AvmMi ev †QvU wkiK : | \* mswk­ó e¨w³‡K Øxb †\_‡K †ei K‡i Ges Abš— Kv‡ji R‡b¨ Rvnvbœvgx evbvq| |

2- أكمل الفراغات بما يناسبها من الكلمات التالية :

2Ñ wb‡gœ ewY©Z Dchy³ kã Øviv k~b¨¯’vb c~iY Ki :

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| شرك | الذنوب | العمل | النار |
| wkiK | ¸bvn | †bK Avgj | Rvnvbœvg |

|  |  |
| --- | --- |
| 1- DcKvi I Av‡ivM¨ jv‡fi Rb¨ ZvÕexh KeP aviY Kiv ......| | 1-تعليق التمائم والحروز للنفع والشفاء.... |
| 2Ñ Kz`„wó n‡Z AvZ¥i¶v‡\_© wkïi Kcv‡j Kv‡jv wZjK A¼b Kiv .....| | 2- وضع أصباغ أسود على جبهة الطفل لرد العين..... |
| 3- hv`yKi, MYK I †R¨vwZlxi Øvi¯’ nIqv Ges Zv‡K wek¦vm Kiv....| | 3- إتيان الكهان والمنجمين والسحرة وتصديقهم...... |
| 4Ñ MvBi“j­vni wbKU `yÔAv Kiv.....| | 4- دعاء غير الله ....... |
| 5Ñ wkiK RwoZ e¨w³‡K cÖ‡ek Kivq....| | 5- الشرك يدخل صاحبه.......... |
| 6Ñ wkiK webó K‡i.....| | 6- الشرك يحبط.............. |
| 7Ñ wkiK GKwU eo ......| | 7- الشرك من أعظم |

33- ضع خطا تحت ما يماثل الكلمات في العمود (أ) في عبارات السطر المقابل لها.

|  |  |
| --- | --- |
| \* شرك | \* الذبح والنذر لغير الله شرك. |
| \* الغيب | \* الذي يعلم الغيب هو الله. |
| \* العبادة | \* التوكل والنذر لله من أنواع العبادة. |
| \* العون | \* المسلم لا يطلب العون إلا من الله. |
| \* يثني | \* المسلم يثني على الله بأسمائه صفاته. |
| \* الشرك | \* الشرك من أعظم الذنوب. |

3| (أ) Kjv‡gi D‡j­wLZ k‡ãi Abyiƒc kã hv (ب) Kjv‡ji ev‡K¨ ewY©Z n‡q‡Q Zvi bx‡P `vM `vI|

|  |  |
| --- | --- |
| (أ) | (ب) |
| wkiK | MvBi“j­vni D‡Ï‡k¨ R‡en I gvbœZ Kiv wkiK| |
| Mv‡qe | GKgvÎ Avj­vn ZvAvjvB Mv‡qe Rv‡bb| |
| ÔBev`Z | Avj­vni Dci ZvIqv°zj Ges Zvi D‡Ï‡k¨ gvbœZ Kiv GKwU ÔBev`Z| |
| mvnvh¨ | gymwjg GKgvÎ Avj­vn ZvAvjvi Kv‡Q mvnvh¨ cÖv\_©bv K‡i| |
| cÖksmv | gymwjg GKgvÎ Avj­vn ZvAvjvi bvg I wmdv‡Zi gva¨‡g Zvi cÖksmv K‡i| |
| wkiK | wkiK GKwU eo ¸bvn| |

4- ما الفرق بين التوحيد والشرك؟

4Ñ ZvInx` I wki‡Ki g‡a¨ cv\_©K¨ wK?

5- اكتب في دفترك واحفظ نشيد (الله خالق كل شيء).

5Ñ الله خالق كل شيء (Avj­vn ZvAvjv mKj e¯‘i m„wóKZ©v) bvgK KweZvwU †Zvgvi LvZvq wj‡L gyL¯’ Ki|

Z…Zxq cvV : الوحدة الثالثة

wZbwU g~jbxwZ : الأصول الثلاثة

wZbwU g~jbxwZ n‡”Q :

1- معرفة العبد ربه :

cÖ\_g g~jbxwZ : ev›`v Zvi ie ev cÖwZcvjK m¤ú‡K© Rvb‡e

فإن قيل من ربك؟ أقول: ربي الله الذي رباني وربى جميع العالمين بنعمه وهو معبودي ليس لي معبود سواه. والدليل قوله تعالى: الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (الفاتحة)

hw` cÖkœ Kiv nq †Zvgvi ie †K? Avwg eje: Avgvi ie Avj­vn whwb Avgv‡K mgMÖ wek¦ RMr‡K ¯^xq Ki“Yv Øviv cÖwZcvjb K‡ib| wZwbB Avgvi gvÕey` wZwb e¨ZxZ Avgvi Avi †Kvb gvÕe~` †bB|

`wjj: ÒAvj­vn ZvAvjvi evYx : mg¯— cÖksmv Avj­vniB R‡b¨ whwb mg¯— wek¦RM‡Zi ie|Ó(m~iv dvwZnv : 2)

وإن قيل بم عرفت ربك؟ أقول : بآياته ومخلوقاته: ومن آياته الليل والنهار والشمس والقمر ومن مخلوقاته والسماوات السبع والأرضون السبع ومن فيهن وما بينهما.

hw` †Zvgv‡K cÖkœ Kiv nq Kx‡mi gva¨‡g Zzwg †Zvgvi ie‡K Rvb‡j?

Avwg eje: (Avwg Avgvi ie‡K †R‡bwQ) Zuvi wb`k©bmg~n I m„wó ivwRi gva¨‡g| Zuvi wb`k©bmg~‡ni g‡a¨ i‡q‡Q w`evÑivwÎ I P›`ªÑm~h©, Avi Zvi m„wó RM‡Zi g‡a¨ i‡q‡Q mß b‡fvgÊj I f~gÊj Avi hv wKQy Gi wfZ‡i Ges hv wKQy GZ `y f‡qi ga¨¯’‡j weivR Ki‡Q|

Avj­vn ZvAvjv e‡jb :

وَمِنْ آَيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿37﴾ (سورة فصلت : 37)

ÒAvi Zvi wb`k©bmg~‡ni g‡a¨ i‡q‡Q ivÎÑw`b I m~h©ÑP›`ª, †Zvgiv P›`ªÑ m~‡h©i KvD‡K mvR`vn Ki bv| mvR`vn Ki ïay †mB Avj­vn‡K whwb †m¸‡jv m„wó K‡i‡Qb, hw` †Zvgiv cÖK…Zc‡¶ ZviB ÔBev`Z K‡i \_vK|Ó (m~iv nvÑgxg mvR`vnÑ37)

wØZxq g~jbxwZ : kiqx cÖgvYvw` mn Øxb Bmjvg m¤ú‡K© Rvbv| Gi K‡qKwU ¯—i i‡q‡Q|

Øx‡bi ¯—i wZbwU : مراتب الدين ثلاثة

(1) الإســلام: وهو الإستسلام لله بالتوحيد والإنقياد له بالطاعة والبراءة من الشرك وأهله.

(1) Bmjvg n‡”Q: g‡bÑ cÖv‡Y Avj­vni GKvZ¡ev‡`i ¯^xK…wZ †`qv, Bev`‡Zi gva¨‡g Zuvi AvbyMZ¨ Kiv I wkiK Ges gykwiK‡`i mv‡\_ m¤úK© wQbœ Kiv|

(2) الإيمان: وهو أن تؤمن بالله وملائكته وكتبه ورسله وباليوم الآخر وتؤمن بالقدر خيره وشره من الله تعالي.

(2) Cgvb n‡”Q : Avj­vn ZvAvjvi cÖwZ, Zuvi †d‡ikZvKz‡ji cÖwZ, Zvi wKZvemg~‡ni cÖwZ, Zuvi ivm~jM‡Yi cÖwZ, wKqvgZ w`e‡mi cÖwZ Ges Avj­vn KZ©…K wba©vwiZ ZvK`x‡ii fvjÑg‡›`i cÖwZ wek¦vm ¯’vcb Kiv|

(3) الإحسان وهو : أن تعبد الله كأنك تراه فإن لم تكن تراه فإنه يراك.

(3) Bnmvb n‡jv : Zzwg Ggbfv‡e Avj­vni ÔBev`Z Ki‡e †hb Zzwg Zv‡K †`L‡Z cv”Q| Avi Zzwg hw` Zv‡K †`L‡Z bv cvI Z‡e wZwb‡Zv †Zvgv‡K †`L‡Z cv‡”Qb| Bikv` n‡”Q :

بَلَى مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿112﴾ (سورة البقرة : 112)

nu¨v, †h e¨w³ wb‡R‡K Avj­vni D‡Ï‡k¨ mgc©Y K‡i‡Q Ges †m mr Kg©kxj, Zvi R‡b¨ Zvi cvjb KZ©vi wbKU cyi¯‹vi i‡q‡Q| Zv‡`i fq †bB Ges Zviv wPwš—ZI n‡e bv| (m~iv evKvivn: 112)

3- معرفة العبد نبيه محمدا صلى الله عليه وسلم، وهو محمد بن عبد الله بن عبد المطلب بن هاشم وهاشم من قريش وقريش من العرب والعرب من ذرية إسماعيل بن إبراهيم الخليل عليه وعلى نبينا أفضل الصلاة والسلام. أرسله الله إلى الناس كافة وخاتم النبيين.

Z…Zxq g~jbxwZ: ev›`v ¯^xq bex gynv¤§` (mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg) m¤ú‡K© Rvb‡e| wZwbÑ gynv¤§` web Avãyj­vn web Avãyj gyËvwje web nvwkg| nvwkg KzivBk es‡kv™¢yZ| KzivBk Avi‡ei GKwU m¤£vš— esk| AvieMY Beivnxg Ljxjyj­vni cyÎ BmgvB‡ji eskai| Avj­vn ZvAvjv Zvi I Avgv‡`i bexi Dci mvjvZ I mvjvg el©Y Ki“b| Avj­vn ZvAvjv Zv‡K mgMÖ gvbeRvwZi wbKU †kl bex K‡i †cÖiY K‡i‡Qb| Bikv` n‡”QÑ

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا (سورة الأعراف : 158)

Ò(†n bex!) Avcwb ejyb, †n gvbe mKj! Avwg †Zvgv‡`i mK‡ji cÖwZ Avj­vni †cÖwiZ ivm~j|Ó (m~iv Avj AvÔivd : 158)

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿40﴾ (سورة الأحزاب : 40)

Ògynv¤§` †Zvgv‡`i †Kvb e¨w³i wcZv bvb; eis wZwb Avj­vni ivm~j Ges †kl bex| Avj­vn me© wel‡q ÁvZ|Ó (m~iv Avnhve t 40)

خصائص الرسالة المحمدية

wimvjv‡Z gynv¤§vw`qvi ˆewkó

1- هي خاتمة الرسالات السماوية السابقة، قال تعالى:

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿40﴾ (سورة الأحزاب : 40)

1- GwU c~e©eZ©x mKj Hkx wimvjv‡Zi mgvcbKvix: Avj­vn ZvAvjv e‡jb :

Ògynv¤§` †Zvgv‡`i †Kvb e¨w³i wcZv bvb; eis wZwb Avj­vni ivm~j Ges †kl bex| Avj­vn me© wel‡q ÁvZ|Ó (m~iv Avnhve t 40)

2- ناسخة لرسالات السابقة. قال تعالى : وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآَخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿85﴾ (سورة آل عمران : 85)

2- c~e©eZ©x mKj wimvjv‡Zi iwnZKvix : Avj­vn ZvAvjv e‡jb : Ô†h †jvK ag© wn‡m‡e Bmivg e¨ZxZ Ab¨ wKQy Zvwjg K‡i KLbI Zv MÖnY Kiv n‡e bv Ges Av‡Liv‡Z †m n‡e ¶wZMÖ¯—|Õ (m~iv Avj ÔBgivb : 85)

قال صلى الله عليه وسلم: والذي نفس محمد بيده، لا يسمع بي أحد من هذه الأمة يهودي ولا نصراني ثم يموت ولم يؤمن بالذي أرسلت به إلا كان من أصحاب النار. أخرجه مسلم

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡j‡Qb, †m mËvi Kmg hvi nv‡Z Avgvi Rxeb, D¤§‡Zi Bqvû`x, L„÷vb †hB Avgvi m¤ú‡K© ïbj, AZtci Avgvi AvbxZ Øx‡bi Dci Cgvb bv G‡bB g„Zz¨ eiY Kij †mB Rvnvbœvg evmx n‡e| (gymwjg)

3- عامة للثقلين : الجن والإسن

3- G wimvjvZ wR¡b gvbe mK‡ji R‡b¨ e¨vcK|

cvV mvivsk I wk¶v : نستخلص من الدرس ونتعلم ما يلي

|  |  |
| --- | --- |
| 1- `vmZ¡ ïay GK Avj­vni R‡b¨ wbw`©ó| | 1- العبودية لا تكون إلا لله وحده. |
| 2- ev›`v ¯^xq i‡ei cwiPq Zvi wb`k©bv ejx I m„ó RM‡Zi gva¨‡g jvf K‡i| | 2- العبد يعرف ربه بآياته ومخلوقاته. |
| 3Ñ ÔBjg n‡”Q : hyw³ cÖgvY mn Avj­vn ZvAvjv, ¯^xq bex Ges Øxb Bmjv‡gi cwiPq jvf Kiv| | 3- العلم هو معرفة الله ومعرفة نبيه ومعرفة دين الإســلام بالأدلة. |
| 4Ñ ÔBjg Abyhvqx ÔAvgj Kiv, Øx‡bi cÖwZ `vIqvZ †`qv Ges G c‡\_ K‡ói Dci ˆah© aviY Kiv IqvwRe| | 4- يجب العمل بالعلم والدعوة إليه والصبر على الأذى فيه. |
| 5Ñ gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg me©‡kl bex, Zvi ci Avi †Kvb bex †bB| | 5- محمد صلى الله عليه وسلم خاتم الأنبياء ولا نبي بعده. |
| 6Ñ Øxb Bmjvg cieZ©x mKj Hkx wimvjv‡Zi iwnZKvix| | 6- دين الإســلام ناسخ لجميع الرسالات السماوية السابقة. |
| 7Ñ ivZÑw`b Ges P›`ªÑ m~h© Avj­vni wb`k©Yvejxi Ab¨Zg| | 7- الليل والنهار والشمس والقمر من آيات الله. |
| 8Ñ mß b‡fvgÊj I f~gÊj Ges hv wKQy Gi g‡a¨ Av‡Q Avi hv GZ `y f‡qi ga¨¯’‡j weivR Ki‡Q meB Avj­vni m„ó RM‡Zi Aš—f©y³| | 8- السماوات السبع والأرضون السبع ومن فيهن وما بينهما من مخلوقات الله. |
| 9Ñ gymwjg c~e©eZ©x mKj Hkx wimvjv‡Zi cÖwZ Cgvb Av‡b| Z‡e wimvjv‡Z gynv¤§vw`qv e¨ZxZ Ab¨ †Kvb wimvjv‡Zi AvbyMZ¨ K‡i bv| | 9- المسلم يؤمن بجميع الرسالات السماوية السابقة ولا يتبع إلا رسالة نبينا محمد صلى الله عليه وسلم. |

Z…Zxq cvV ch©v‡jvPbv : تقويد الوحدة الثالثة

ا- اختر الإجابة الصحيحة من الفقرة (ب) مع ما يناسبها من الفقرة (أ)

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| 1- يعرف العبد ربه | بآياته. |
| بمخلوقاته. |
| بآياته ومخلوقاته. |
| 2- من آيات الله | السماوات. |
| الشمس |
| 3- الإحسان. | الإستسلام والانقياد. |
| التصديق الجازم. |
| أن تعبد الله كأنك تراه فإن لم تكن تراه فإنه يراك. |
| 4. المسلم يؤمن | بجميع الرسالات السابقة ولا يتبع إلا رسالة محمد صلى الله عليه وسلم. |
| بالرسالات السابقة ويتبعها. |
| برسالة محمد صلى الله عليه وسلم فقط |

(ب) As‡ki mwVK DËiwU (أ) As‡ki mv‡\_ mvwR‡q wjL|

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| ev›`v Zvi ie m¤ú‡K© Rvb‡e : | Zuvi wb`k©‡bi gva¨‡g |
| Zuvi m„wói gva¨‡g |
| Zuvi wb`k©b I m„wói gva¨‡g |
| Avj­vn ZvAvjvi wb`k©bmg~n †\_‡K : | mß AvKvk |
| m~h© |
| Bnmvb A\_© : | AvbyMZ¨ Kiv, AvZ¥mgc©Y Kiv |
| AUj wek¦vm |
| Zzwg ÔBev`Z Ggbfv‡e Ki‡e †hb Zzwg Zuv‡K †`LQ| hw` Zzwg Zuv‡K bvI †`L Z‡e wZwb †Zvgv‡K †`L‡Qb| |
| gymwjg wek¦vm ¯’vcb K‡i : | c~‡e©Kvi mKj bex‡`i wimvjv‡Zi Dci Ges AbyKiY K‡i ïay †kl bex †gvnv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi wimvjv‡Zi| |
| Av‡MKvi bex‡`i Dci Ges Zuv‡`iB AbyKiY K‡ib| |
| ïaygvÎ gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi wimvjv‡Zi Dci |

(2)ما هي الأصول الثلاثة؟

2| wZbwU g~jbxwZ wK ?

(3) ما هي مراتب الدين؟

3| Øx‡bi ¯—img~n wK ?

(4) أكتب في دفترك معنى : الإسلام- الإيمان.

4| †Zvgvi LvZvq Bmjvg I Cgv‡bi msÁv wjL|

(5) هل رسالة النبي صلى الله عليه وسلم عامة أم خاصة؟ وما الدليل؟

5| Avgv‡`i bexi AvMgb mgMÖ we‡k¦i Rb¨ bvwK ïay we‡kl †Kvb m¤úÖ`v‡qi Rb¨? cÖgvY `vI|

ثاينا

مبادئ في الفقه

wØZxq Aa¨vq

gmv‡qj wk¶v

cÖ\_g el© : مقرر السنة الأولى

cÖ\_g cvV . الوحدة الأولى

Ihyi weeiY : الوضوء وما يتعلق به قبله وبعدة

B‡¯—Ävi Av`emg~n t آداب قضاء الحاجة

1- أن لا يستصحب شيئا فيه اسم الله.

1- Avj­vni bvg Av‡Q Ggb †Kvb wRwbm mv‡\_ bv ivLv|

2- البعد والإستتار عن الناس لئلا يسمع له صوت أو تشم له رائحة.

2- †jvK P¶zi Avov‡j, `~ieZ©x ¯’v‡b P‡j hvIqv hv‡Z gvbyl †Kvb cÖKvi kã ev `yM©Ü bv cvq|

3- التسمية والاستعاذة عند الدخول لحديث أنس قال : كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا أراد أن يدخل الخلاء قال : بسم الله، اللهم إني أعوذ بك من الخبث والخبائث. رواه الجماعة.

3- Uq‡j‡U cÖ‡e‡ki c~‡e© wemwgj­vn I `yAv cov|

`jxj : Avbvm iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Uq‡j‡U cÖ‡e‡ki c~‡e© wb‡æv³ `yÔAv co‡ZbÑ

بسم الله ، اللهم إني أعوذبك من الخبث والخبائث.

4- أن يكف عن الكلام مطلقا،

4- me iKg K\_v ejv n‡Z weiZ \_vKv|

5- أن لا يستقبل القبلة.

5- wKejvi w`K n‡q bv emv|

6- أن لا يبول في الماء الراكد أو الماء الجاري.

6- Ave× Ges cÖevn gvb cvwb‡Z †ckve bv Kiv|

7- gvbyl PjvP‡ji iv¯—v I wekÖvgvMv‡i †ckve Kiv n‡Z weiZ \_vKv|

7- أن يتجنب ظل الناس وطريقهم.

8- bvcvKx `~i Kivi Rb¨ wXjv Kzj~L ev cvwb e¨envi Kiv| Z‡e nvo e¨envi Kiv hv‡e bv|

8- الأستجمار حتى إزالة النجاسة بأحجار أو جامد أو ماء ويتجنب العظم.

9- Wvb nvZ Øviv cweÎZv AR©b n‡Z weiZ \_vKv|

9- أن لا يستنجي بيمينه.

IHYy : والوضوء

والوضوء هو : طهارة مائية تتعلق بالوجه واليدين والرأس والرجلين.

IHYy n‡”Q: cvwb Øviv AR©b‡hvM¨ cweÎZv hv gvby‡li gyLgÊj, `yÕnvZ, gv\_v I `yÕcv‡qi mv‡\_ m¤ú„³|

Ihyi kZ©vewj : شروط الوضوء

|  |  |
| --- | --- |
| 1. gymwjg nIqv | 1- الإسلام. |
| 2. †evakw³ m¤úbœ nIqv| | 2- العقل. |
| 3. fvjÑg›` wePvi Kivi †hvM¨Zv \_vKv| | 3- التمييز. |
| 4. wbqZ Kiv| | 4- النية. |
| 5. Ihyi c~‡e© bvcvKx `~i Kiv ev KzjyL e¨envi Kiv| | 5- الإستنجاء أو الإستجمار قبله. |
| 6. cvwb cweÎ I nvjvj nIqv| | 6- طهورية الماء وإباحته. |
| 7. kix‡i cvwb †cuŠQ‡Z evav †`q Ggb e¯‘ `~i Kiv| | 7- إزالة ما يمنع وصول الماء إلى البشرة. |

Ihyi dihmg~n فروض الوضوء

قال سبحانه وتعالى :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آَمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ (المائدة : 6)

Ò†n gyÕwgbMY! hLb †Zvgiv mvjv‡Zi B”Qv Ki, ZLb ¯^xq gyLgÊj I n¯—mg~n KbyB ch©š— †aŠZ Ki Ges gv\_v gv‡mn Ki Avi `yÕ cv‡qi UvLbymn †aŠZ Ki|Ó (m~iv gvwq`v : 6)

من الآية الكريمة نستخلص فروض الوضوء :

Avqv‡Zi Av‡jv‡K Ihyi dihmg~n :

|  |  |
| --- | --- |
| 1| mg¯— gyL †aŠZ Kiv| | 1- غسل الوجه. |
| 2| `yÕnvZ KbyB mn †aŠZ Kiv| | 2- غسل اليدين إلى المرفقين. |
| 3| gv\_v gv‡mn Kiv| | 3- مسح الرأس. |
| 4| `yÕcv UvLby mn †avqv| | 4- غسل الرجلين إلى الكعبين. |
| 5| avivevwnKZv wVK ivLv| | 5- الترتبيب. |
| 6| G‡Ki ci GK K‡i hvIqv| | 6- الموالاة |

Ihyi mybœvZmg~n : سنن الوضوء

|  |  |
| --- | --- |
| 1| Ihyi ïi“‡Z wemwgj­vn cov| | 1- التسمية في أوله. |
| 2| wgmIqvK Kiv| | 2- السواك. |
| 3| `yÕnv‡Zi Kwâmn wZb evi †aŠZ Kiv| | 3- غسل الكفين ثلاثة. |
| 4| wZb evi Kzwj Kiv| | 4- المضمضمة ثلاثا. |
| 5| wZb evi bv‡K cvwb †`qv| | 5- الإستنشاق والاسنثار ثلاثا. |
| 6| `vwo wLjvj Kiv| | 6 – تخليل اللحية. |
| 7| A½ywj wLjvj Kiv| | 7 - تخليل الأصابع. |
| 8| mg¯— A½ wZbevi K‡i †avqv | 8- عسل الأعضاء ثلاثا. |
| 9| Kvb gv‡mn Kiv| | 9- مسح الأذنين. |
| 10| Wvb w`K †\_‡K ïi“ Kiv| | 10- التيامن. |

Ihy f‡½ KviY : نواقض الوضوء

|  |  |
| --- | --- |
| 1| cvqLvbvÑ†ckv‡ei iv¯—v w`‡q †Kvb wKQy †ei nIqv| | 1- كل ما خرج من السبيلين : القبل أو الدبر. |
| 2| Mfxi wb`ªv| | 2- النوم المستغرق |
| 3| cvMj ev gvZvj nIqv | 3- زوال العقل. |
| 4| j¾v¯’vb ¯úk© Kiv| | 4- مس الفرج. |

Ihyi †k‡l `yÔAv . دعاء الفراغ من الوضوء

عن عمر رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : ما منكم من أحد يتوضأ فيسبغ الوضوء ثم يقول : أشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله إلا فتحت له أبواب الجنة الثمانية، يدخل من أيها شاء.

Dgi iv. †\_‡K ewY©Z ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : †Zvgv‡`i †KD cwic~Y©iƒ‡c IHYy K‡i wb‡æv³ †`vÕAv cvV Ki‡j Zuvi Rb¨ Rvbœv‡Zi AvUwU `IhyvB Ly‡j †`qv nq| †hwU w`‡q B”Qv cÖ‡ek Ki‡Z cvi‡e|

أشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(gymwjg)

cÖ\_g cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الأولى

1- اكتب في دفترك واحفظ آداب قضاء الحاجة.

1| †Zvgvi LvZvq B‡¯—Ävi Av`emg~n wjL :

2- بما ذا تعرف الوضوء؟

2| Ihyi msÁv wjL|

3- صل من الفقرة (أ) مع ما يناسبها من مجموعات الفقرة (ب)

(أ) (ب(

|  |  |
| --- | --- |
| 1- من آداب قضاء الحاجة. | غسل الوجه.  غسل اليدين إلى المرافقين.  مسح الرأس |
| 2- من فروض الوضوء: | إن لا يستقبل القبلة.  أن لا يبول في الماء الراكد أو الماء الجاري.  أن يتجنب ظل الناس وطريقهم. |
| 3- من سنن الوضوء: | الإستنجاء أو الإستجمار قبله.  طهورية الماء وإباحته.  إزالة ما يمنع وصول الماء إلى البشرة. |
| 4- من شروط الوضوء. | غسل الكفين ثلاثا.  المضمضة ثلاثا.  الإستنشاق والإستنثار ثلاثا. |

3| (ب) As‡ki mwVK DËiwU (أ) As‡ki mv‡\_ wgjvI :

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| †Pnviv †aŠZ Kiv| | B‡¯—Ävi Av`e : |
| `yB nv‡Zi KbyB mn †aŠZ Kiv| |
| gv\_v gv‡mn Kiv| |
| wKejvi w`‡K gyL K‡i bv emv| | Ihyi dih : |
| e× cvwb Ges cÖevn gvb cvwb‡Z †ckve bv Kiv| |
| gvbyl PjvP‡ji iv¯—v I Zv‡`i wekÖvgvMv‡i †ckve Kiv n‡Z weiZ \_vKv| |
| bvcvKx `~i Kiv ev Kzj~L e¨envi Kiv& | Ihyi mybœvZ : |
| cvwb cweÎ I nvjvj nIqv| |
| kix‡i cvwb †cuŠQ‡Z evav †`q Ggb e¯‘ `~i Kiv& |
| `yB nv‡Zi Kwâ mn wZbevi †aŠZ Kiv| | Ihyi kZ© : |
| wZb evi Kzwj Kiv| |
| wZb evi bv‡K cvwb †`qv| |

4- ماذا تقول عند قراغك من الوضوء؟

4| Zzwg Ihyi †k‡l wK `yÔAv co‡e?

wØZxq el© : مقرر السنة الثانية

wØZxq cvV : والوحدة الثانية

Avhvb : الأذان

تعريفه: هو الإعلام بدخول وقت الصلاة بألفاظ مخصوصة.

msÁv: wbw`©ó kã Øviv mvjv‡Zi Iqv‡³i †NvlYv †`qv‡K Avhvb ejv nq|

فضله: عن معاوية أن النبي صلى الله عليه وسلم : قال : إن المؤذنين أطول الناس أعناقا يوم القيامة. رواه أحمد ومسلم وابن ماجة

Avhv‡bi dhxjZ:

gyqvweqv iv. n‡Z ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb, wbðqB gyqvw¾bMY wKqvgZ w`e‡m m‡e©v”P gh©v`vi AwaKvix n‡eb| (Avng`, gymwig I Be‡b gvhvn)

كيفية الأذان: تربيع التكبير الأول، وتثنية الباقي، وإفراد كلمة التوحيد، لحديث عبد الله بن زيد، أنه رأى رجلا يلقنه كلمات الأذان والإقامة، فلما أصبح أخبر النبي صلى الله عليه وسلم فقال : إنها لرؤيا حق إن شاء الله. ثم أمره أن يلقن بلال بن رباح فقال: فليؤذن به فإنه أندى صوتاً منك. (رواه أحمد وابو داود وابن ماجة والترمذي وقال : حسن صحيح.

Avhv‡bi c×wZ: cÖ\_‡g Pvievi Avj­vû AvKevi, Zvici Ab¨ evK¨¸wj `yB evi Ges me †k‡l GKevi ÔjvÑBjvn Bj­vnÕ ejv&

cÖgvY : Avãyj­vn web hv‡q` iv. ¯^‡cœ †`L‡jb, GK e¨w³ Zv‡K AvRvb I BKvg‡Zi evK¨¸wj wk¶v w`‡”Qb, mKv‡j wZwb ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K welqwU Rvbv‡j wZwb e‡jb, wbðq GwU mZ¨ ¯^cœ BbkvAvj­vn| Zvici †ejvj web ivevn‡K evK¨¸wj wk¶v`v‡bi wb‡`©k †`b Ges e‡jb, GB evK¨¸wj w`‡q †m Avhvb †`‡e| KviY, †m †Zvgvi †P‡q D”P AvIqv‡hi AwaKvix| (Avng`, Avey `vD`, Be‡b gvhvn Ges wZiwghx)

Avhv‡bi evK¨mg~n : كلمات الأذان

الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله الله أكبر

أشهد أن لا إله إلا الله أشهد ان لا إله إلا الله

أشهد أن محمدا رسول الله أشهد أن محمدا رسول الله

حي على الصلاة حي على الصلاة

حي على الفلاح حي على الفلاح

ألله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله.

BKvgv‡Zi c×wZ : صفة الإقامة

تثنية التكبير الإول والأخير وقد قامت الصلاة وإفراد سائر كلماتها.

ïi“‡Z Ges †k‡l ÔAvj­vn AvKeviÕ `yB evi, ÔK`KvgvwZmmvjvnÕ `yB evi Avi Ab¨ mKj evK¨ GKevi K‡i ej‡Z n‡e| †hgbÑ

الله أكبر الله أكبر

أشهد أن لا إله إلا الله

أشهد أن محمدا رسول الله

حي على الصلاة

حي على الفلاح

قد قامت الصلا ة

قد قامت الصلاة

ألله أكبر الله أكبر

لا إله إلا الله.

mvjv‡Zi weeiY : الصلاة

الصلاة: هي عبادة تتضمن أقوالا وأفعالا مخصوصة مفتتحة بالتكبير، مختتمة بالتسليم.

msÁv: mvjvZ Ggb wKQy K\_v I KvR wewkó Bev`‡Zi bvg, hv ZvKexi Øviv ïi“ nq Ges mvjvg Øviv †kl nq|

Zvkvû` : التشهد للصلاة

التحيات لله، والصلوات، والطيبات، الســلام عليك أيها النبي ورحمة الله وبركاته، السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين. أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدا عبده ورسوله. البخاري ومسلم.

`yiƒ` cov : الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم بعد التشهد

اللهم صل على محمد وعلى آل محمد كما صليت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم إنك حميد مجيد اللهم بارك على محمد وعلى آل محمد كما باركت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم إنك حميد مجيد. البخاري مع الفتح : 6/4087

dih mvjvZmg~n : فروض الصلاة

dih mvjvZ cuvP Iqv³ : فروض الصلاة خمسة

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| Iqv³ | ivKÔAvZ | العدد | الوقت |
| 1| †hvni | Pvi ivKÔAvZ | أربع ركعات | الظهر |
| 2| Avmi | Pvi ivKÔAvZ | اربع ركعات | العصر |
| 3| gvMwie | wZb ivKÔAvZ | ثلاث ركعات | المغرب |
| 4| Bkv | Pvi ivKÔAvZ | أربع ركعات | العشاء |
| 5| dRi | `yB ivKÔAvZ | ركعتان | الفجر |

mvjv‡Zi Iqv³mg~n : أوقات الصلوات الخمس

|  |
| --- |
| وقت صلاة الظهر : يبتدئ من زوال الشمس عن وسط السماء ويمتد إلى أن يصير ظل كل شئء مثله.  †hvn‡ii mvjv‡Zi mgq : ga¨vKvk †\_‡K m~h© cwðg w`‡K X‡j covi mv‡\_ mv‡\_ Avi¤¢ nq Ges cÖ‡Z¨K e¯‘i Qvqv Zvi mgcwigvY nIqv ch©š— evwK \_v‡K| |
| وقت صلاة العصر : يدخل بصيرورة ظل الشئء مثله بعد فيء الزوال، ويمتد إلى غروب الشمس.  Avm‡ii mvjv‡Zi mgq : Avmjx Qvqv e¨ZxZ cÖ‡Z¨K e¯‘i Qvovq hLb Zvi mgcwigvY nq ZLb †\_‡K AvQ‡ii Iqv³ Avi¤¢ nq Ges Zv m~h©v¯— ch©š— evwK \_v‡K| |
| وقت صلاة المغرب : إذا غابت الشمس ويمتد إى مغيب الشفق الإحمر.  gvMwi‡ei mvjv‡Zi mgq : m~h©v¯— †\_‡K wb‡q cwðg AvKv‡ki jvwjgv A`„k¨ nIqv ch©š—| |
| وقت صلاة العشاء : يدخل بمغيب الشفق الأحمر، ويمتد إلى نصف الليل.  Gkvi mvjv‡Zi mgq : cwðg AvK‡ki jvwjgv A`„k¨ nIqv †\_‡K Avi¤¢ nq Ges Aa© ivwÎ ch©š— evKx \_v‡K| |
| وقت صلاة الفجر : من طلوع الفجر الصادق ما لم تطلع الشمس.  dR‡ii mvjv‡Zi mgq : mye‡n mv‡`K †\_‡K Avi¤¢ K‡i m~‡h©v`q ch©š—| |

حديث أوقات الصلاة mvjv‡Zi mgq m¤úwK©Z nvw`m :

عن عبد الله بن عمر رضي الله تعالى عنهما أن النبي صلى الله عليه وسلم قال : وقت الظهر إذا زالت الشمس، وكان ظل الرجل كطوله، ما لم يحضر العصر، ووقت العصر ما لم تصفر الشمس، ووقت المغرب، ما لم يغب الشفق الأحمر ، ووقت صلاة العشاء إلى نصف الليل الأوسط، ووقت صلاة الصبح من طلوع الفجر ما لم تطلع الشمس. رواه مسلم.

Avãyj­vn web Dgvi iv. ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb, †hvni mvjv‡Zi mgq nj, hLb m~h© cwðg AvKv‡k †n‡j c‡o Ges gvby‡li Qvqv ˆ`‡N©¨i mgvb nq| Avi Zv Avmi mvjv‡Zi mgq Dcw¯’Z nIqv ch©š— Ae¨vnZ \_v‡K| Avm‡ii mgq m~h© jvj nIqv ch©š—| gvMwie mvjv‡Zi mgq cwðg AvKv‡ki jvwjgv A`„k¨ nIqv ch©š—| ÔBkv mvjv‡Zi mgq, Aa© ivwÎ ch©š—| dhi mvjv‡Zi mgq mye‡n mvw`K †\_‡K Avi¤¢ K‡i m~‡h©v`q ch©š—| (gymwjg)

mvjv‡Zi kZ©vejx : شروط الصلاة

|  |  |
| --- | --- |
| 1| gymjgvb nIqv| | 1- الإســـلام. |
| 2| †evakw³m¤úbœ nIqv| | 2- العقل. |
| 3| evjÑg›` eySvi †hvM¨Zv \_vKv| | 3- التمييز. |
| 4| cweÎZv AR©b Kiv| | 4- رفع الحديث. |
| 5| bvcvKx `~i Kiv| | 5- إزالة النجاسة. |
| 6| mvZi XvKv| | 6- ستر العورة. |
| 7| mgq nIqv| | 7- دخول الوقت. |
| 8| wKejvgyLx nIqv| | 8- استقبال القبلة. |
| 9| wbqZ Kiv| | 9- النية. |

mvjv‡Zi i“Kbmg~n : أركان الصلاة

|  |  |
| --- | --- |
| `uvov‡Z m¶g e¨w³i `uvwo‡q mvjvZ Av`vq Kiv| | القيام مع القدرة. |
| ZvKex‡i Zvnixgv ejv| | تكبيرة الإحرام. |
| m~iv dvwZnv cov| | قراءة الفاتحة. |
| i“K‚Õ Kiv | الركوع. |
| i“K‚Õ n‡Z DVv| | الرفع منه. |
| i“K‚Õi ci †mvRv n‡q `uvov‡bv| | الاعتدال بعد الركوع. |
| mvZ A‡½i Dci mvR`vn Kiv| | السجود على الأعضاء السبعة. |
| mvR`vn n‡Z DVv| | الرفع منه. |
| `yB mvR`vni gvSLv‡b emv| | الجلسة بين السجدتين. |
| mKj KvR axiÑw¯’iZvi mv‡\_ mgvß Kiv| | الطمأنينة في جميع الأفعال. |
| †kl ˆeV‡K Zvkvû` cov| | التشهد الأخير. |
| Zvkvû‡`i D‡Ï‡k¨ emv| | الجلوس له. |
| `yiƒ` cov| | الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم. |
| `yB mvjv‡g mvjvZ †kl Kiv| | التسليمتان. |

bvgv‡hi mybœvZmg~n : سنن الصلاة

|  |  |
| --- | --- |
| `yB nvZ DVv‡bv | رفع اليدين. |
| Wvb nvZ evg nv‡Zi Dci †i‡L ey‡Ki Dci A\_ev bvwfi Dci ivLv| GUv weï× gZ| | وضع اليد اليمينى على اليسرى على الصدر أو فوق السرة على الأرجح. |
| mvjvZ ïi“i `yÕAv cov, †hgbÑ  اللهم باعد بينى وبين خطاياي كما باعدت بين المشرق والمغرب اللهم نقني من خطاياي كما ينقى الثواب الأبيض من الدنس اللهم اغسلني من خطاياي بالثلج والماء والبرد | دعاء الاستفتاح : اللهم باعد بينى وبين خطاياي كما باعدت بين المشرق والمغرب، اللهم نقني من خطاياي كما ينقى الثواب الأبيض من الدنس اللهم اغسلني من خطاياي بالثلج والماء والبرد. روابه البخاري ومسلم. |
| †kl ˆeV‡K `yAv cov| | الدعاء في التشهد الأخير:  رَبَّنَا آَتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآَخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ. (البقرة : 201) |
| m~iv dvwZnvi ci AwZwi³ wKivAvZ cov| | قراءة ما زاد عن الفاتحة. |
| i“Kz I mvR`vq GKev‡ii †ewk Zvmexn cov| | ما زاد عن واحدة في تسبيح الركوع والسجود. |
| cÖ\_g Zvkvû‡` Ges `yB mvR`vni gv‡S Wvb cv Lvov K‡i evg cv‡qi Dci evm| | الجلوس على الرجل اليسرى ونصب الرجل اليمنى في التشهد الأول وبين السجدتين. |

mvjvZ f‡½ KviYmg~n : مبطلات الصلاة

|  |  |
| --- | --- |
| mvjv‡Z B”QvK…Z K\_v ejv| | الكلام العمد. |
| AÆnvwm †`qv| | الضحك. |
| LvIqv I cvb Kiv| | الأكل أو الشرب. |
| mZi Ly‡j hvIqv| | إنكشاف العورة. |
| mvjv‡Z evievi Ab\_©K KvR Kiv| | العبث الكثير المتوالي في الصلاة. |
| IHYy f½ nIqv| | إنتقاض الطهارة. |

wØZxq cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الثانية

1- صل من الفقرة (أ) بما يناسبها من الفقرة (ب)

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| وقت صلاة الظهر. | من طلوع الفجر الصادق ما لم تطلع الشمس. |
| وقت صلاة العصر. | إذا غابت الشمس ويمتد إلى مغيب الشفق الأحمر. |
| وقت صلاة المغرب. | يدخل بمغيب الشفق الأحمر، ويمتد إلى نصف الليل. |
| وقت صلاة العشاء. | يدخل بصيرورة ظل الشئء مثله بعد فيء الزوال ويمتد إلى غروب الشمس. |
| وقت صلاة الفجر. | من زوال الشمس عن وسط السماء ويمتد إلى أن يصير ظل كل شئء مثله. |

1| (ب) As‡ki mwVK DËiwU (أ) As‡ki mv‡\_ wgwj‡q wjL :

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| †hvn‡ii Iqv³ : | myewn mvw`K †\_‡K ïi“ K‡i m~‡h©v`‡qi c~e© ch©š—| |
| Avm‡ii Iqv³ : | m~h©v¯— †\_‡K jvwjgv A`„k¨ nIqv ch©š—| |
| gvMwi‡ei Iqv³ : | jvwjgv A`„k¨ nIqv †\_‡K ïi“ n‡q ga¨ivZ ch©š—| |
| Bkvi Iqv³ : | Qvqv Avmjx e¨ZxZ e¯‘i Qvqv mgcwigvY nIqv †\_‡K ïi“ n‡q m~h©v¯— ch©š—| |
| dR‡ii Iqv³ : | m~h© X‡j cov †\_‡K ïi“ n‡q e¯‘i Qvqv mgcwigvY nIqv ch©š—| |

2- ضع الحكم المناسب إمام كل عبارة مما يلي:

2| Lvwj RvqMvq mwVK DËiwU emvI :

(من أركان الصلاةر من شروط الصلاةمن أركان الصلاة- من شروط الصلاة- من سنن الصلاة – من فروض الصلاة – من مبطلات الصلاة) .

* صلاة الظهر ....................
* ستر العورة – دخول الوقت- استقبال القبلة – النية .........
* القيام مع القدرة – تكبيرة الإحرام – قراءة الفاتحة ..........
* دعاء الاستفتاح – رفع اليدين ..........
* إنكشاف العورة – العبث الكثير المتوالي في الصلاة – إنتقاض الطهارة ..........

3| k~b¨¯’vb c~iY Ki : 3- أكمل الفراغات التالية بما يناسبها

(التحيات ....... والصلوات و ................ السلام ................. أيها ............. ورحمة الله و .............. السلام .............. وعلى .......... الله ................... أشهد ...................... وأشهد ................

4- اكتب في دفترك واحفظ كلمات الأذان والإقامة.

4| †Zvgvi LvZvq mvjv‡Zi mgq m¤úwK©Z nv`xmLvbv wj‡L gyL¯’ Ki|

5| mvjv‡Zi msÁv wjL | 5- ما معنى الصلاة؟

6- اكتب في دفترك واحفظ كلمات الأذان والإقامة.

6| †Zvgvi LvZvq Avhvb I BKvgv‡Zi evK¨mg~n wj‡L gyL¯’ Ki|

7- اكتب في ذفترك واحفظ الصلاة الإبراهيمية بعد التشهد.

7| †Zvgvi LvZvq `yiƒ‡` Beªvnxg wj‡L gyL¯’ Ki|

Z…Zxq el© : مقرر السنة الثالثة

Z…Zxq cvV : الوحدة الثالثة

mvjv‡Zi dhxjZ : فضل الصلوات

Avj­vn ZvAvjv e‡jb :

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ (العنكبوت : 45)

mvjvZ Kv‡qg Ki, wbðq mvjvZ g›` I Lvivc KvR †\_‡K weiZ iv‡L| (m~iv AvbKveyZ : 45)

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : أرأيتم لو أن نهرا بباب أحدكم يغتسل منه كل يوم خمس مرات، هل يبقى من درنه شيء؟ قالوا: لا يبقى من درنه شيء، قال فذلك مثل الصلوات الخمس يمحو الله بهن الخطايا. متفق عليه.

Avey ûivBiv iv. n‡Z ewY©Z, wZwb e‡jb, Avwg ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K ej‡Z ï‡bwQ, ejZ †`wL hw` †KD Zvi evwoi mvg‡bi b`x‡Z ˆ`wbK cuvPevi †Mvmj K‡i Zvi kix‡i †Kvb gqjv \_vK‡Z cv‡i? Zviv DËi w`‡jb, bv Zvi kix‡i †Kvb gqjv \_vK‡Z cv‡i bv| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg ej‡jb, GwUB cuvP Iqv³ mvjv‡Zi `„óvš—| mvjv‡Zi Øviv Avj­vn ZvAvjv mKj cÖKvi ¸bvn gvd K‡i †`b| (eyLvix I gymwjg)

فضل صلاة الصبح والعصر

dRi I Avm‡ii mvjv‡Zi dhxjZ :

عن أبي موسى رضي الله عنه : أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: من صلى البردين دخل الجنة. متفق عليه

Avey g~mv iv. n‡Z ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : †h e¨w³ `yÕwU VvÛvi mg‡qi mvjvZ Av`vq K‡i †m Rvbœv‡Z cÖ‡ek Ki‡e|Ó (eyLvix I gymwjg)

dR‡ii mybœv‡Zi ¸i“Z¡ : تأكيد سنة الصبح

عن عائشة رضي الله عنها عن النبي صلى الله عليه وسلم قال : ركعتا الفجر خير من الدنيا و ما فيها. (وراه مسلم )

Av‡qkv iv. n‡Z ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : dR‡ii `yÕ ivKvAvZ `ywbqv Ges Zvi g‡a¨ hv wKQy Av‡Q Zvi †\_‡K DËg| (gymwjg)

RvgvAv‡Z mvjvZ Av`v‡qi dhxjZ : فضل صلاة الجماعة

عن ابن عمر رضي الله عنهما: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: صلاة الجماعة أفضل من صلاة الفذ بسبغ وعشرين درجة. متفق عليه.

Be‡b Dgi iv. n‡Z ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : RvgvAv‡Z mvjvZ Av`vq Kiv GKvKx Av`vqK…Z mvjvZ A‡c¶v gh©v`vi w`K w`‡q mvZvk ¸Y †ewk DËg| (eyLvix, gymwjg)

RygyAvi mvjvZ : صلاة الجمعة

RygyAvi mvjv‡Zi mgq : وقتها

ذهب الجمهور من الصحابة والتابعين إلى أن وقت الجمعة هو وقت الظهر أي بعد الزوال.

Rgû‡i mvnvev I Zv‡eqxb‡`i g‡Z RygyAvi Iqv³ Avi †hvn‡ii mvjv‡Zi Iqv³ GKB| A\_©vr m~h© cwðg AvKv‡k X‡j hvIqvi ci|

لحديث سلمة بن الأكوع رضي الله عنه قال: كنا نصلي مع رسول الله صلى الله عليه وسلم. يوم الجمعة ثم ننصرف وليــس للحيطان ظل نستظل به. متفق عليه واللفظ للبخاري وفي لفظ لمسلم: كنا نجمع معه إذا زالت الشمس ثم نرجع نتتبع الفيء.

RygyAvi mvjv‡Zi c×wZ : LyZevi ci `yÕivKvÔAvZ mvjvZ Av`vq Ki‡e|

RygyAvi mvjv‡Zi dhxjZ : فضل صلاة الجمعة

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم. من توضأ فأحسن الوضوء ثم أتى الجمعة فاستمع وأنصت غفر له ما بينه وبين الجمعة وزيادة ثلاثة أيام، ومن مس الحصى فقد لغا. (رواه مسلم )

Avey ûivBiv iv. n‡Z ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : †h e¨w³ DËgiƒ‡c Ihy K‡i RygÔAvi mvjv‡Z G‡m Pzc †\_‡K LyZev ï‡b, Zvi GK RygyAv n‡Z Ab¨ RygyAvi ga¨eZ©x mgq Ges Av‡iv AwZwi³ wZb w`‡bi ¸bvn gvd K‡i †`qv nq| Avi †h e¨w³ K¼i mivj †m ev‡R KvR Kij| (gymwjg)

RygyAvi mvjv‡Zi mybœvZ : ســـنة الجمعة

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : إذا صلى أحدكم الجمعة فليصل بعدها أربعا. (رواه مسلم)

Avey ûivBiv iv. n‡Z ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : hLb †Zvgv‡`i †KD RygyAvi mvjvZ Av`vq K‡i †m †hb Zvi c‡i Pvi ivKÔAvZ mvjvZ Av`vq K‡i| (gymwjg)

C‡`i mvjvZ : صلاة العيدين

C‡`i mvjv‡Zi mgq : وقت صلاة العيد

من ارتفاع الشمس قدر ثلاثة أمتار إلى الزوال. قال به الشوكاني وابن قدامة ولم يخالف فيه أحد ويسن تقديم الأضحى ليتسع وقت الأضحية، وتأخير الفطر ليتسع وقت إخراج صدقة الفطر.

m~h© wZb wgUvi cwigvY Dc‡i DVv †\_‡K ïi“ K‡i cwðg AvKv‡k, †n‡j cov ch©š—| Avj­vgv kvIKvbx Ges Be‡b Kz`vgvn& G gZ †cvlY K‡ib| G wel‡q †KD wØgZ †cvlY K‡ibwb| C`yj AvRnvi mvjvZ ZvovZvwo Av`vq Kiv DËg hv‡Z Kzievbx Ki‡Z AwaK mgq cvIqv hvq Ges C`yj wdZ‡ii mvjvZ †`ix K‡i cov DËg hv‡Z m`Kv wdZi Av`vq Ki‡Z †ewk mgq cvIqv hvq|

C‡`i mvjv‡Z Avhvb BKvgvZ : الأذان والإقامة للعيدين

عن ابن عباس وجابر قالا : لم يكن يؤذن يوم الفطر ولا يوم الأضحى. متفق عليه.

Be‡b AveŸvm I Rv‡ei iv. e‡jb, C`yj wdZi I C`yj Avhnvi mvjv‡Z Avhvb †`qv nZ bv| (eyLvix I gymwjg)

C‡`i mvjv‡Zi c×wZ : صفة صلاة العيدين

wb‡gœi nv`xm Øviv Avgiv C‡`i mvjv‡Zi c×wZ m¤ú‡K© Rvb‡Z cvwi|

عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما، أن النبي صلى الله عليه وسلم. صلى يوم العيد ركعتين لم يصل قبلهما ولا بعد هما. أخرجه السبغة.

وللبخاري ومسلم من حديث أبي سعيد كان النبي صلى الله عليه وسلم يخرج يوم الفطر والأضحي إلى المصلى إلى المصلى و أول شيء يبدأ به الصلاة ثم ينصرف فيقوم مقابل الناس فيعظم ويأمرهم.

Be‡b AveŸvm iv. n‡Z ewb©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg C‡`i w`b `yB ivKvÔAvZ mvjvZ Av`vq K‡ib| Zvi c~‡e© Ges c‡i Avi †Kvb mvjvZ Av`vq K‡ibwb|

Bgvg eyLvix I gymwjg Avey mvC` iv. n‡Z nv`xm eY©bv K‡ib, imvj mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg C`yj wdZi I C`yj Avhnvi w`b C`Mv‡n wM‡q me©cÖ\_g mvjvZ Av`vq Ki‡Zb| AZtci gvby‡li w`‡K wd‡i `uvwo‡q w`KÑ wb‡`©kbv w`‡Zb Ges bmxnZ Ki‡Zb|

C‡`i mvjv‡Zi ZvKexi: التكبير في العيدين

سبع في الأولى وخمس في الأخرى والقراءة بعدهما كلتيهما لحديث عمر بن شعيب، وهذا أرجح الأقوال وإليه ذهب أهل العلم من الصحابة والتابعين والأئمة.

cÖ\_g ivKÔAv‡Z mvZ ZvKexi Ges wØZxq ivKAv‡Z cuvPwU Avi Dfq ivKvÔAv‡Z ZvKex‡ii ci wKivAvZ cov|

cÖgvY : Avgi Be‡b ïqvBe iv. Gi nv`xm GwUB me©vwaK AMÖvwaKvi †hvM¨ AwfgZ| weÁ mvnvex Zv‡eqx I BgvgMY G gZB †cvlY K‡ib|

mvjvZzj Rvbvhvn :صلاة الجنازة

وقتها: متى حضرت وشروطها كباقي الصلوات إلا الوقت وأركانها النية وقراءة الفاتحة سراً، والقيام مع القدرة والصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم والدعاء للميت والدعاء بعد التكبيرة الرابعة للمسلمين ثم السلام.

mvjvZzj Rvbvhvnvi mgq : hLb jvk Dcw¯’Z Kiv nq|

mvjvZzj Rvbvhvni kZ© : Iqv³ e¨ZxZ Ab¨vb¨ mvjv‡Zi kZ©mg~nB Gi kZ©|

Rvbvhvi mvjv‡Zi i“Kbmg~n : wbqZ Kiv, wbPz AvIqv‡R m~iv dvwZnv cov, `uvwo‡q bvgvh cov, bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi Dci `iƒ` cov, g„Z e¨w³i Rb¨ `yÔAv Kiv, PZz\_© ZvKex‡ii ci gymjgvbM‡Yi R‡b¨ `yÔAv Kiv, AZtci mvjvg wdiv‡bv|

mvjvZzj Rvbvhvn Av`v‡qi wbqg : كيفيتها

يقف الإمام حذاء رأس الرجل ووسط المرأة، وينوي ويشرع في قراءة الفاتحة في التكبير الأولى والصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم في الثانية والدعاء للميت في الثالثة والدعاء للمسلمين في الرابعة ثم يسلم.

g„Z e¨w³ cyi“ n‡j Bgvg mv‡ne jv‡ki gv\_v eivei Ges gwnjv n‡j Zvi gvS eivei `uvov‡eb, wbq¨Z Ki‡eb Ges cÖ\_g ZvKex‡ii ci m~iv dvwZnv co‡eb wØZxq ZvKex‡ii ci ivm~jyj­vni Dci `i“` co‡eb Z…Zxq ZvKex‡ii ci g„Z e¨w³i Rb¨ `yÔAv Ki‡eb, PZz\_© ZvKex‡ii ci gymjgvb‡`i Rb¨ `yÔAv Ki‡eb, AZt mvjvg wdiv‡eb|

* ليس لصلاة الجنازة أذان ولا إقامة ولا ركوع ولا سجود.
* Rvbvhvi bvgv‡h †Kvb Avhvb BKvgZ Ges i“Kz mvR`vn †bB|

cvV ch©v‡jvPbv I wk¶v : نستخلص ونتعلم مما سبق ما يلي

1- الذي يصلي تنهاه صلاته عن كل قبيح ومنكر.

1| mvjvZ gvbyl‡K mKj cÖKvi wbK…ó I Akvjxb KvR †\_‡K weiZ iv‡L|

2-الصلاة تطهر قلب الإنسان.

2| mvjvZ gvby‡li Aš—i cweÎ K‡i|

3- الصلاة تمحو الذنوب وسبب مغفرة الله للمصلي.

3| mvjvg ¸bvnmg~n wgwU‡q †`q|

4- المداومة على صلاة الصبح والعصر تدخل صاحبها الجنة.

4| dRi I Avmi mvjv‡Z wbqwgZ AskMÖnYKvix Rvbœv‡Z cÖ‡ek Ki‡e|

5- السنة قبل الفجر لها فضل عظيم وخير من الدنيا وما فيها.

5| dR‡ii c~‡e©Kvi mybœ‡Zi gnv dhxjZ i‡q‡Q Ges Zv `ywbqv I Zvi ga¨Kvi mewKQy †\_‡K DËg|

6- النبي صلى الله عليه وسلم كان أشد حرصا وتعهدا لها.

6| bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg dR‡ii mybœ‡Zi cÖwZ AwaK ¸i“Z¡ w`‡Zb|

7- صلاة المسلم مع الجماعة في المسجد تزيد على صلاته في بيته بسبع وعشرين درجة.

7| evwo‡Z mvjvZ Av`v‡qi Zzjbvq RvgvAv‡Z mvZvk ¸Y †ewk mvIqve cvIqv hvq|

8- إداء صلاة الجمعة مع الإستماع والإنصات للخطبة سبب لمغفرة ما بين الجمعتين.

8| g‡bv‡hvM mnKv‡i LyZev ï‡b RygyAvi mvjvZ Av`vq Kivi gva¨‡g ga¨eZ©x mg‡qi ¸bvnmg~n gvd n‡q hvq|

9- مس الحصى أو غيرها والكلام يلغي الجمعة.

9| K¼i A\_ev G RvZxq wKQy nUv‡bv Ges K\_v ejvi Kvi‡Y RygyAvi mvjv‡Zi mvIqve webó nq|

10- على المسلم أن يجلس في المسجد وعليه السكينة والوقار.

10| gmwR‡` Mv¤¢xh©Zv I w¯’iZvi mv‡\_ e‡m \_vKv DwPZ|

11- سنة الجمعة أربع ركعات في المسجد بعد صلاة الجمعة.

11| RygyAvi dih Av`v‡qi ci gmwR‡` Pvi ivKvÔAvZ mvjvZ Av`vq Kiv mybœZ|

12- ليس للجمعة سنة قلبها إلا ركعتين تحية المسجد قبل الجلوس.

12| RygyAvi c~‡e© `yÕivKvAvZ Zvwnq¨vZzj gmwR` e¨ZxZ †Kvb mybœZ †bB|

13- وقت صلاة الجمعة هو وقت صلاة الظهر بعد الزوال.

13| †hvn‡ii Iqv³B RygyAvi Iqv³, hLb m~h© cwðgvKv‡k X‡j c‡o|

14- صلاة الجمعة ركعتان بعد الخطبة.

14| LyZevi ci `yB ivKvÔAvZ mvjvZB RygyAvi mvjvZ|

15- وقت صلاة العيدين حين ترتفع الشمس ثلاثة أمتار، والسنة تعجيل الأضحى وتأخير الفطر.

15| m~h© wZb wgUvi cwigvY Dc‡i DV‡j C‡`i mvjv‡Zi mgq nq| Kzievbx C‡`i mvjvZ ZvovZvwo Ges C`yj wdZ‡ii mvjvZ †`wi K‡i cov mybœZ|

16- صلاة العيدين ركعتان قبل الخطبة.

16| C‡`i mvjvZ LyZevi c~‡e© `yB ivKÔAvZ co‡Z nq|

17- عدد التكبيرات في صلاة العبيد سبع في الأولى وخمس في الثانية.

17| C‡`i mvjv‡Z ZvKex‡ii msL¨v, cÖ\_g ivKÔAv‡Z mvZwU Ges wØZxq ivKÔAv‡Z cuvPwU|

18- عدد التكبيرات في صلاة الجنازة أربع.

18| Rvbvhvi mvjv‡Z ZvKexi PviwU|

19- صلاة العيد ليس لها أذان ولا إقامة.

19| C‡`i mvjv‡Z Avhvb I BKvgZ †bB|

20- صلاة الجنازة ليس لها أذان ولا إقامة ولا ركوع ولا سجود.

20| Rvbvhvi mvjv‡Z Avhvb, BKvgZ, i“KzÔ I mvR`vn †bB|

Z…Zxq cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الثالثة

1- أكمل الفراغات بما يناسبها من الكلمات التالية:

1| wbgœ wjwLZ kãmg~‡ni ga¨ †\_‡K Dchy³ kã Øviv k~b¨¯’vb c~iY Ki :

نهراً ـــــــ يغتسل ـــــ درنه ــــ الصلوات ــــ الخطايا ــــ البردين ـــــــ الفجر ـــــ الجماعة ـــــ الفذ ـــ فأحسن ـــــ فاستمع ــــ ثلاثة

1- أرأيتم لو أن ............... بباب أحدكم ......... منه كل يوم خمس مرات ، هل يبقى من ......... شيء؟ قالوأ لا يبقى من درنة شيء؛ قال فذلك مثل ................ الخمس يمحو الله بهن ............

2- صلاة ............ أفضل من صلاة ................. بسبع وعشرين درجة . متفق عليه.

3- من توضأ ............... الوضوء ثم أتى الجمعة ...... وأنصت غفرله ما بينه وبين الجمعة وريادة .............. أيام ومن مس الحصى فقد لغا. رواه مسلم.

2- صل من الفقرة (أ) بما يناسبها من الفقرة (ب)

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| \* الصلاة تمحو الذنوب وسبب  \* المداومة على صلاة الصبح والعصر  \* صلاة المسلم مع الجماعة تزيد عى  \* مس الحصى أو غيرها والكلام يلغي  \* على المسلم أن يجلس في المسجد وعليه  \* وقت صلاة الجمعة  \* وقت صلاة العيدين  \* صلاة الجمعة  \* صلاة العيدين  \* عدد التكبيرات في صلاة العيد  \* عدد التكبيرات في صلاة الجنازة  \* صلاة العيد ليس لها  \* صلاة الجنازة ليس لها | \* تدخل صاحبها الجنة.  \* مغفرة الله للمصلي.  \* صلاة الجمعة.  \* السكينة والوقار.  \* صلاته في بيته بسبع وعشرين درجة.  \* هو حين ترتفع الشمس ثلاثة أمتار.  \* وقت صلاة الظهر بعد الزوال.  \* ركعتان قبل الخطبة.  \* ركعتان بعد الخطبة.  \* أربع.  \* سبع في الأولى وخمس في الثانية.  \* أذان ولا إقامة ولا ركوع ولا سجود.  \* أذان ولا إقامة. |

2| (أ) As‡ki ev‡K¨i mv‡\_ (ب) As‡ki Dchy³ evK¨ wgjvI|

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| mvjvZ ¸bvn wgwU‡q †`q Ges Zv : | Av`vqKvix‡K Rvbœv‡Z cÖ‡ek Kivq| |
| dRi I Avmi mvjv‡Z wbqgvbyewZ©Zv : | gymj­xi ¶gvi KviY| |
| gymwj‡gi gmwR‡` wM‡q mvjvZ Av`vq Kiv : | RygyAvi mvjv‡Zi mvIqve| |
| K¼i ev G RvZxq wKQy nUv‡bv Ges K\_v ejv webó K‡i †`q: | N‡i Av`vqK…Z mvjvZ A‡c¶v mvZvk ¸Y †ewk mvIqve cvIqv hvq| |
| gymwj‡gi DwPZ gmwR‡` Ae¯’vb Kiv : | w¯’iZv I Mv¤¢xh©Zv mnKv‡i| |
| RygyAvi mvjv‡Zi mgq : | hLb m~h© wZb wgUvi cwigvY Dc‡i D‡V| |
| `yB C‡`i mvjv‡Zi mgq : | †hvn‡ii mvjv‡Zi mgqB, hLb m~h© cwðgvKv‡k X‡j c‡o| |
| RygyAvi mvjvZ : | LyZevi c~‡e© `yB ivKÔAvZ| |
| C‡`i mvjvZ : | LyZevi c‡i `yB ivKÔAvZ| |
| C‡`i mvjv‡Z ZvKexi msL¨v : | PviwU| |
| Rvbvhvi mvjv‡Z ZvKexi msL¨v : | cÖ\_g ivKÔAv‡Z mvZwU Ges wØZxq ivKÔAv‡Z cuvPwU| |
| C‡`i mvjv‡Z †bB †Kvb : | Avhvb, BKvgZ, i“K‚Ô I mvR`vn| |
| Rvbvhvi mvjv‡Z †bB †Kvb : | Avhvb I BKvgZ| |

ثالـــثا

آداب وفضائل وأذكار

Aa¨vq Z…Zxq

Av`e, dvhv‡qj I whwKi

Av`e I dvhv‡qj : أ- آداب وفضائل

1- إفشاء الســـلام

1| (mvjvg cÖPvi) :

عن عبد الله بن عمرو بن العاص رضي الله عنهما أن رجلا سأل رسول الله صلى الله عليه وسلم : أي الإسلام خير؟ قال : تطعم الطعام ، وتقرأ السلام على من عرفت ومن لم تعرف. متفق عليه.

Avãyj­vn Be‡b Avgi Be‡b Avm iv. †\_‡K ewY©Z, GK e¨w³ bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K wR‡Ám Kij : Bmjv‡g †Kvb ÔAvgjwU m‡e©vËg? DË‡i wZwb ej‡jb, gvbyl‡K Lvbv LvIqv‡bv Ges †PbvÑ A‡Pbv mKj‡K mvjvg †`qv| (eyLvix, gymwjg)

2- البشاسة والإبتسامة وحسن الخلق

2| cÖdzj­Zv, gyPwK nvwm I my›`i e¨envi

3- الأكل باليمين والشرب باليمين.

3| Wvb nv‡Z LvIqv I cvb Kiv|

لحديث عمر بن أبي سلمة يا غلام سم الله وكل بيمينك وكل مما يليك. متفق عليه

وعن ابن عمر رضي الله عنهما: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا يأكلن أحدكم بسماله ولا يشربن بها. فإن الشيطان يأكل بشماله وشرب بشماله. (رواه مسلم)

Dgi Be‡b Avey mvjvgvn iv. KZ©…K ewY©Z nv`x‡m Av‡Q, †n †Q‡j! wemwgj­vn ej Ges Wvb nv‡Z Lvevi LvI| †Zvgvi mvg‡b †\_‡K Lvevi MÖnY Ki| (eyLvix, gymwjg)

Be‡b Dgi ivn. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : †Zvgv‡`i †KD hv‡Z evg nv‡Z cvbvnvi bv K‡i| †Kbbv kqZvb evg nv‡Z Lvq I cvb K‡i| (gymwjg)

4| (gmwR‡` cÖ‡e‡ki `yÔAv) 4- دعاء دخول المسجد.

بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله اللهم افتح لي أبواب رحمتك. رواه مسلم وانظر صحيح الجامع وأبو داود.

5- الدعاء بعد الأذان

5| (Avhv‡bi `yAv)

اللهم رب هذه الدعوة التامة والصلاة القائمة آت محمدا الوسيلة ولفضيفة وابعثه مقاما محمودا الذي وعدته.

6- الحرص على الإحسان إلى الوالدين والأقارب والجيران والكبار والصغار.

6- wcZvÑgvZv, AvZ¥xq ¯^Rb, cÖwZ‡ekx, †QvU I eo‡`i cÖwZ m`&e¨envi|

7- التخلق بالأخلاق المشروعة لكل مسلم ومنها.

7| kwiqZ wba©vwiZ AvLjvK MÖnY Kiv|

الصدق، الأمانة، العفاف ، الحياء، الشجاعة، الكرام، الوفاء، مساعدة ذوي الحاجة.

†hgbÑ mZZv, AvgvbZ`vwi, hv”Tv, bv Kiv, j¾v, exiZ¡, `qv, A½xKvi i¶v Kiv I Afvex gvby‡li mvnvh¨Ñmn‡hvwMZv Kiv|

dvhv‡q‡j KziAvb : فضل القرآن

عن أبي أمامة رضي الله عنه قال : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : ارؤوا القرآن فإنه يأتي يوم القيامة شفيعا لأصحابه. رواه مسلم

Avey Dgvgv iv. †\_‡K ewY©Z, wZwb e‡jb, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : †Zvgiv KziAvb cvV Ki| †Kbbv Zv wKqvgZ w`e‡m wZjvIqvZKvixi R‡b¨ mycvwikKvix n‡e| (gymwjg)

تعاهد القرآن والتحذير من نسيانه

wbqwgZ KziAvb wZjvIqvZ I fy‡j hvIqv †\_‡K mveavbZv Aej¤^b :

عن أبي موسى رضي الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: تعاهدوا هذا القرآن فوالذي نفس محمد بيده لهو أشد تفلتاً من الإبل في عقلها. (متفق عليه)

Ave~ g~mv iv. KZ©…K ewY©Z; bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb: †Zvgiv KziAvb wZjvIqv‡Z hZœevb nI| Kmg †m mËvi, hvi nv‡Z gynv¤§v‡`i Rxeb; KziAv‡b Kvixg iwk‡Z euvav D‡Ui †P‡qI †ewk Qy‡U †h‡Z Pvq| (eyLvix, gymwjg)

وعن ابن عمر رضي الله عنهما: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: إنما مثل صاحب القرآن كمثل الإبل المعقلة إن عاهد عليها أمسكها وأن أطلقها ذهبت. متفق عليه.

Be‡b Dgi iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb : KziAvb gyL¯’Kvixi `„óvš— iwk‡Z euvav D‡Ui b¨vq| Zvi cÖwZ †Lqvj ivL n‡j a‡i ivLv hvq| Avi AmZK© n‡j cvwj‡q hvq|

whwKiÑ AvhKvi : ب- أذكار مشروعة

1| (mKvj-mÜ¨vi whwKi) 1- أذكار الصباح والمساء

كان النبي صلى الله عليه وسلم يعلم أصحابه يقول : إذا أصبح أحدكم فليقل : اللهم بك أصبحنا وبك أمسينا وبك نحيا وبك نموت وإليك النشور وإذا أمسى فليقل : أللهم بك أمسينا وبك أصبحنا وبك نحيا وبك نموت وإليك المصير. سلسلة الأحاديث الصحيحة للألباني.

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg mvnvexMY‡K whwKi wk¶v w`‡Z wM‡q e‡jb, †Zvgv‡`i †KD mKv‡j DcbxZ n‡j GB `yÕAv cvV Ki‡eÑ

اللهم بك أصبحنا وبك أمسينا وبك نحيا وبك نموت وإليك النشور.

Avi weKv‡j DcbxZ n‡j co‡e-

اللهم بك أمسينا وبك أصبحنا وبك نحيا وبك نموت وإليك المصير.

(wmjwmjvZzj Avnv`xwmm mnxnvn wjj Avjevbx)

2- من أذكار النوم : قراءة المعوذتين وآية الكرسي وقول : بأسمك اللهم أموت وأحيا. البخاري و مسلم.

2| Ny‡gi mgq `yÔAv : m~iv dvjvK, m~iv bvm, AvqvZzj Kzimx I GB `yÔAv باسمك اللهم أموت وأحيا (eyLvix gymwjg)

3- أذكار الاستيقاظ من النوم :

3| Nyg †\_‡K RvMÖZ nIqvi ci `yÔAv :

الحمد لله الذي أحيانا بعدما أماتنا وإليه النشور . البخاري ومسلم

4| Uq‡j‡U cÖ‡e‡ki `yÕAv : 4- دعاء دخول الخلاء

بسم الله اللهم أعوذبك من الخبث والخبائث. البخاري ومسل

5- دعاء دخول الخلاء.

5- Uq‡jU †\_‡K †ei nIqvi `yÔAv : غفرانك.

أخرجه أصحاب السنن إلا النسائي

6- أذكار بعد الصلاة :

أستغفر الله ، أستغفر الله ، أستغفر الله، اللهم أنت السلام ومنك السلام، تباركت يا ذا الجلال والإكرام. أخرجه مسلم.

6| mvjv‡Zi ci `yÔAv :

أستغفر الله ، أستغفر الله ، أستغفر الله، اللهم أنت السلام ومنك الصلا، تباركت يا ذا الجلال والإكرام (gymwjg)

من سبح الله دبركل صلاة ثلاثا وثلاثين، وحمد الله ثلاثا وثلاثين، وكبر الله ثلاثا وثلاثين وقال تمام المائة : لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير؛ غفرت خطاياه، ولو كانت مثل زبد البحر. صحيح سنن أبي داود للألباني.

†h e¨w³ cÖ‡Z¨K mvjv‡Zi ci 33 evi myenvbvj­vn, 33 evi Avjnvg`y wjj­vn, 33 evi Avj­vû AvKevi Ges wb‡æv³ `yÕAv cvV K‡i GKkZ evi c~Y© K‡i,

لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير.

Zvi ¸bvnmg~n mgy‡`ªi †dbv eivei n‡jI Avj­vn ZvAvjv ¶gv K‡i †`b| (mnxn mybv‡b Avey `vD`- Avjevbx)

Abykxjbx : تقويم الباب

1- صل من الفقرة (أ) بما يناسبها من الفقرة (ب)

1| (أ) As‡ki ev‡K¨i mv‡\_ (ب) As‡ki Dchy³ evK¨ wgjvI|

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| \* دعاء دخول المسجد.  gmwR‡` cÖ‡e‡ki `yÔAv | اللهم رب هذه الدعوة التامة والصلاة القائمة آت محمدأ لوسيلة. |
| * الدعاء بعد الأذان :   Avhv‡bi c‡ii `yÔAv | بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله اللهم افتح لي أبواب رحمتك. |
| * دعاء دخول الخلاء:   Uq‡j‡U cÖ‡e‡ki `yÔAv | غفرانك |
| * دعاء الخروج من الخلاء:   Uq‡jU †\_‡K †ei nIqvi `yÔAv | بسم الله اللهد إني أعوذبك من الخبث ولخبائث. |

2- ضع الكلمة المناسة مما يلي في الفراغ المخصص لها.

2| wb‡gœi kãmg~n †\_‡K Dchy³ kã Øviv k~b¨¯’vb c~iY Kiv :

أحيانا ـــــ بيمينك ـــــ السلام ــــ من صفات المؤمن ــــ تباركت ـــــ اللهم ــــ يليك ـــــ بشماله ــــ أستغفر الله.

* الحمد لله الذي .................... بعد ما أماتنا وإليه النشور.
* يا غلام سم الله وكل ............. وكل مما ...................
* تطعم الطعام ، وتقرأ ............. على من عرفت ومن لم تعرف
* الصدق، الإمانة، العفاف ، الحياء .......................
* أذكار بعد الصلاة إستغفر الله ، ..............، أستغفر الله، .............. أنت السلام ومنك السلام، ............. يا ذالجلال والإكرام.
* عن ابن عمر رضي الله عنهما : أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : لا يأكلن أحدكم........ ولا يشربن بها. فإن الشيطان يأكل بشماله ويشرب بشماله.

رابعا

قبسات من السيرة النبوية

PZz\_© Aa¨vq

mxivZzb bex

cÖ\_g el© : مقرر السنة الأولى

cÖ\_g cvV : الوحدة الأولى

نسب الرسول صلى الله عليه وسلم

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi esk cwiPq :

* هو محمد بن عبد الله بن عبد المطلب بن هاشم.

wZwb gynv¤§` Be‡b Avãyj­vn Be‡b Avãyj gyËvwje Be‡b nv‡kg|

تعرف أسرته صلى الله عليه وسلم بالأرة الهاشمية نسبه إلى هاشم وهاشم من قريش إلى عدنان.

nv‡k‡gi w`‡K m¤úK©hy³ K‡i bexRxi esk nv‡kgx esk wn‡m‡e cwiwPZ| Avi nv‡kg wQ‡jb KzivBk †Mv‡Îi hv Av`bvb ch©š— †cuŠ‡Q‡Q|

Rb¥ : مولده صلى الله عليه وسلم

* ولد محد صلى الله عليه وسلم في عام الفيل.

gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg n¯—xevwnbx aŸs‡mi eQi Rb¥MÖnY K‡ib|

تربى النبي صلى الله عليه وسلم في بأدية بني سعد ومكث فيها حتى السنة الرابعة أو الخامسة من عمره ووقعت له حادثة شق الصدر.

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg ebx mvÔ` †Mv‡Î jvwjZÑ cvwjZ nb Ges Pvi A\_ev cuvP eQi eqm ch©š— †mLv‡bB emevm K‡ib| Avi †mLv‡bB Zuvi e¶ we`x‡Y©i NUbv N‡U|

مرضعات النبي صلى الله عليه وسلم

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi `ya gvZv MY :

|  |  |
| --- | --- |
| ¯^xq gvZv Av‡gbv web‡Z Iqvnve | أمه آمنة بنت وهب |
| nvjwgn mvÔw`qvn | حليمة السعدية |
| Ave~ jvnv‡ei euv`x myqvBnve | ثويبة جارية أبي لهب |

gv‡qi g„Zz¨ : وفاة أمه صلى الله عليه وسلم

توفيت أمه آمنه بنت وهب بالأبواء بين مكة والمدينة بعد زيارة قبر زوجها عبد الله في يثرب، وكان عمره صلى الله عليه وسلم ست سنوات.

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi gvZv Av‡gbv gw`bv gybvIqvivq wbR ¯^vgx Avãyj­vn Gi Kei whqvi‡Zi ci †divi c‡\_ g°v I gw`bvi gv‡S Aew¯’Z AvenvIqv bvgK ¯’v‡b B‡š—Kvj K‡ib| ZLb bex gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi eqm wQj gvÎ Qq eQi|

`v`v I PvPvi ZË¡veav‡b : تحت كفالة جده وعمه

\* كفله جده عبد المطلب وكان يعطف عليه كثيرا ويقدمه على أبنائه ويجلسه على فراشه حتى مات جده.

gvZvÑ wcZvi g„Zz¨i ci `v`v Avãyj gyËvwje Zuvi jvjb cvj‡bi `vwqZ¡ fi MÖnY K‡ib| wZwb Zv‡K Lye mn Ki‡Zb| GgbwK wb‡Ri †Q‡j‡`i DciI Zuv‡K cÖvavb¨ w`‡Zb| wb‡Ri Avm‡b emv‡Zb| `v`vi g„Zz¨i c~e© ch©š— wZwb Zuvi ZË¡veav‡bB wQ‡jb|

كفله بعد جده عبد المطلب عمه أبو طالب وهو في الثامنة من عمره وكان يساعد عمه في رعي الأغنام والتجارة إلى الشام.

`v`v Avãyj gyËvwj‡ei g„Zz¨i ci PvPv Avey Zvwje Zuvi `vwqZ¡ †bb| ZLb Zvi eqm wQj AvU eQi| wZwb ¯^xq PvPv‡K eKix jvjbÑ cvjb I kvg †`‡ki e¨emv‡q mn‡hvwMZv Ki‡Zb|

زواجه صلى الله عليه وسلم من خديجة وأبناؤه

Lv`xRv iv. Gi mv‡\_ weevn Ges mš—vbvw` :

تزوج صلى الله عليه وسلم من خديجة رضي الله عنها وهو في الخامسة والعشرين من عمره وكل أولاده منها إلا إبراهيم.

cuwPk eQi eq‡m Lv`xRv iv. †K weevn K‡ib| GKgvÎ Beivnxg e¨ZxZ Zuvi me KqwU mš—vb Lv`xRvi †\_‡KB n‡q‡Q|

ولدت له خديجة أولا القاسم – وبه كان يكنى ـ ثم زينب ورقيه وأم كلثوم وفاطمة وعبد الله.

Kv‡mg Zuvi cÖ\_g mš—vb| Gi bv‡gB Zuvi Dcbvg Aveyj Kv‡mg| AZtci hqbe, i“KvBqv, D‡¤§ Kzjmyg, dv‡Zgv I Avãyj­vn Gi Rb¥ nq|

مات بنوه كلهم في صغرهم، أما البنات فكلهن أدركن الإسلام وهاجرن وأدركتهن والوفاة في حياته صلى الله عليه وسلم. إلا فاطمة توفيت بعده بستة أشهر.

Zuvi †Q‡ji mK‡jB evj¨ eq‡m gviv hvb| †g‡q‡`i mK‡jB Bmjvg MÖnY K‡i wnhiZ Kivi my‡hvM cvb| dv‡Zgv iv. e¨ZxZ Zv‡`i mK‡jB bexRxi RxeÏkvq gviv hvb| wZwb bexRxi B‡š—Kv‡ji Qq gvm ci g„Zz¨ eiY K‡ib|

صفاته صلى الله عليه وسلم قبل البعثة

beyIq¨vZ c~e© ¸Yvewj :

صائب الفكرة، سديد الرأي، أفضل قومه مروءة، وأحسنهم خلقا، وأعزهم جوارا، وأعظمهم حلما، وأصدقهم حديثا، عفيفا، كريما، بارا، وأفي العهد، أمينا حتى سماء قومه. الأمين.

wZwb wQ‡jb wPš—vq mwUK, wm×v‡š— wbf©yj, e¨w³‡Z¡ Abb¨, Pwi‡Î †kÖôZi, cÖwZ‡ekx wn‡m‡e AwZ gh©v`vevb, mnbkxjZvq mygnvb, mZ¨evw`Zvq gnË¡i| m”PwiÎ, e`vb¨Zv, cyY¨Kg©v, cÖwZkÖ“wZ i¶v I wek¦¯—Zvq Abycg Av`k©| Gme ¸‡Y gy» n‡q ¯^xq RvwZ Zuv‡K Avj-Avgxb Dcvwa‡Z f~wlZ K‡i|

بدء الوحي ونزوله عليه صلى الله عليه وسلم

Inx bvwh‡ji m~Pbv :

كان صلى الله عليه وسلم يتعبد في غار حراء في مكة المكرة.

wZwb g°vq Aew¯’Z †niv ¸nvq ÔBev`Z Ki‡Zb|

نزل عليه صلى الله عليه وسلم الوحي لما تكامل له أربعون سنة التي لها تبعث الرسل.

wbqgvbyhvqx Pwj­k eQi eq‡m wZwb beyqZ cÖvß nb|

أول ما نزل جبريل بالوحي من عند الله تعالي على رسول الله صلى الله عليه وسلم .

wReivBj Av. Avj­vn ZvAvjvi c¶ †\_‡K Iwn wb‡q AeZiY K‡ib|

أول ما نزل عليه قوله تعالى : اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿1﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿2﴾ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ﴿3﴾ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿4﴾ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿5﴾ (سورة العلق )

me© cÖ\_g m~iv ÔAvjv‡Ki cÖ\_g cuvPwU AvqvZ bvwhj nq : hvi A\_©Ñ cvV Ki“b, Avcbvi cvjb KZ©vi bv‡g, whwb m„wó K‡i‡Qb| m„wó K‡i‡Qb gvbyl‡K RgvU i³ †\_‡K| cvV Ki“b, Avcbvi cvjbK…Z gnv `qvjy| whwb Kjg Øviv wk¶v w`‡q‡Qb| wk¶v w`‡q‡Qb gvbyl‡K hv †m RvbZ bv| (m~iv AvjvK:1-5)

cÖ\_g Abykxjbx : تقويم الوحدة الأولى

1. اذكر نسب الرسول صلى لله عليه وسلم .

1| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi esk cwiPq D‡j­L Ki|

2- متى ولد النبي صلى الله عليه وسلم ؟

2| bex mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg KLb Rb¥MÖnY K‡ib?

3- من مرضعتا النبي صلى الله عليه وسلم غير أمه؟

3| bexRxi gv e¨ZxZ Ab¨ `yÕRb `ya-gvi bvg D‡j­L Ki?

4- من هي أمه صلى الله عليه وسلم ومتى توفيت؟

4| bexRxi gv‡qi bvg wK? wZwb KLb gviv hvb?

5- اختر الإجابة الصحيحة من الفقرة (ب) مع ما يناسبها من الفقرة (أ) وضع تحتها خطأ.

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| توفيت آمنة بنت وهب: | * بالأبواء. * في مكة. * في المدينة. |
| كفله صلى الله عليه وسلم | * عمه أبو طالب. * جده عبد المطلب * بنو سعد. |
| تزوج صلى الله عليه وسلم من خديجة وهو في: | * الرابعة والعشرين. * الخامسة والعشرين من عمره. * السادسة والعشرين. |
| أدركت الوفاة بناته كلهن في حياته إلا : | * زينب. * فاطمة. * أم كلثوم * رقية. |
| كان يتعبد رسول الله في غار : | * حراء. * ثور. * بيته. |
| نزل عليه صلى الله عليه وسلم الوحي لما تكامل له: | * ثلاثون سنة. * أربعون سنة. * خمس وأربعون سنة. |

5| (أ) As‡ki mv‡\_ mvgÄm¨c~Y© mwVK kãwU (ب) Ask n‡Z wbY©q K‡i Zvi bx‡P `vM `vI|

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| Av‡gbv web‡Z Iqvnve gviv hvb : | * AvenvIqvq * g°vq * gw`bvq |
| gv gviv hvIqvi ci bexRxi jvjbÑ cvj‡bi `vwqZ¡ †bb: | * PvPv Avey Zvwje * `v`v Avãyj gyËvwje * ebx mvÔ` |
| wZwb Lv`xRv iv. †K weevn K‡ib : | * 24 eQi eq‡m * 25 eQi eq‡m * 26 eQi eq‡m |
| bexRxi RxeÏkvq GKRb e¨ZxZ Zuvi mKj †g‡q gviv hvb| wZwb n‡”Qb : | * hqbe * dv‡Zgv * D‡¤§ Kzjmyg * i“KvBq¨v |
| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bev`Z e‡›`wM Ki‡Zb : | * †niv ¸nvq * QvIi ¸nvq * wbR evwo‡Z |
| Zuvi Dci Iwn AeZxY© nq: | * wÎk eQi eq‡m * Pwj­k eQi eq‡m * cuqZvwj­k eQi eq‡m |

6- اذكر بعض صفاته صلى الله عليه وسلم.

6| Zuvi (bexRxi) KwZcq ¸Yvewj D‡j­L Ki|

7- ما أول ما نزل من القرآن على النبي صلى الله عليه وسلم؟

7| bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi Dci me©cÖ\_g KziAv‡b Kvix‡gi †Kvb AvqvZ AeZxY© nq?

wØZxq cvV : الوحدة الثاينة

`vIqv‡Zi Av‡`k الأمر بالدعة إلى الله تعالى:

أمر الله تعالى خاتم رسله وأنبيائه صلى الله عليه وسلم أن يدعو الناس إلى الإســلام، قال تعالي : يَاأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿1﴾ قُمْ فَأَنْذِرْ ﴿2﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿3﴾ . (سورة المدثر)

Avj­vn ZvAvjv me©‡kl bex mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K gvby‡li gv‡S Bmjvg cÖPv‡ii Av‡`k K‡ib| G g‡g© wZwb Bikv` K‡ib, †n Pv`ive„Z e¨w³! IV Ges mZK© Ki|

†Mvc‡b `vIqvZ : الدعوة سرا

امتثل الرسول صلى الله عليه وسلم لأمر ربه، وأخذ يدعو الناس إلى الأسلام سرا، لكي لا يثير عداوة قريس، وبدأ بأهله وأصدقائه، وكانت زوجه خديجة رضي الله عنها، أول من آمن بدعوته إلى الإســلام وكان أول من آمن به من الرجال أبو بكر الصديق رضي الله عنه ومن الصبيان علي بن أبي طالب رضي الله عنه، ومن الموالي زيد بن حارثة رضي الله عنه، وكان مولى لخديجة رضي الله عنها.

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg ¯^xq cÖwZcvj‡Ki Av‡`k h\_vh\_ cvjb K‡ib Ges †Mvc‡b †Mvc‡b gvby‡li gv‡S Bmjvg cÖPvi Ki‡Z ïi“ K‡ib| hv‡Z K‡i KzivBk‡`i we‡ivwaZv cÖKU bv nq| wZwb me©cÖ\_g Avcb cwieviÑ cwiRb I eÜz-eM©‡K Bmjv‡gi `vIqvZ †`b| me©cÖ\_g Lv`xRv iv. Zuvi `vIqvZ MÖnY K‡ib| cyi“l‡`i g‡a¨ me©cÖ\_g Ave~ eKi wmÏxK iv. †QvU‡`i g‡a¨ Avjx Be‡b Ave~ Zvwje iv. Ges µxZ`vm‡`i g‡a¨ hv‡q` Be‡b nv‡imv iv. Bmjvg MÖnY K‡ib| wZwb Lvw`Rv iv. Gi µxZ`vm wQ‡jb|

استمر الرسول صلى الله عليه وسلم يدعو من حوله سرا للإسلام مدة ثلاث سنوات وقد اختار النبي صلى الله عليه وسلم دار الأرقم بن أبي الأرقم أحد سادة قريش الذين أسلموا ليجتمع فيها مع أصحابه.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg wZb eQi ch©š— Zvi wbKU¯’ †jvK‡`i gv‡S Bmjvg cÖPv‡i †MvcbxqZv Aej¤^b K‡ib| wZwb `vi“j AviKvg Z\_v KzivBk †bZv AviKvg Be‡b Ave~ AviKv‡gi evwowU gymjgvb‡`i m‡¤§jb¯’j wn‡m‡e wbe©vwPZ K‡ib|

cÖKv‡k¨ `vIqvZ : الجهر بالدعوة

ثم أمر الله تعالى : النبي صلى اللع عليه وسلم بإعلان الدعوة على الناس قال تعالى : فاصدع بما تؤمر وأعرض عن المشركين. (سورة الحجر)

AZtci Avj­vn ZvAvjv cÖKv‡k¨ Øxb cÖPv‡ii Av‡`k Ki‡jbÑ Bikv` n‡”Q, ÒAZGe Avcwb cÖKv‡k¨ ïwb‡q w`b hv Avcbv‡K Av‡`k Kiv nq Ges gykwiK‡`i ciIqv Ki‡eb bv|Ó (m~iv wnRi : 94)

وأنذر عشيرتك الأقربين. (الشعراء:214)

ÒAvcwb wbKUvZ¥xq‡`i‡K mZK© Ki“b|Ó (m~iv ïÔAviv : 214)

امتثل النبي صلى الله عليه وسلم لأمر الله، ودعا عشيرته والمقربين له إلى اجتماع عند جبل الصفا. ثم أخبرهم بأنه قد جمعهم ليبلغهم رسالة ربه، بترك عبادة الأصنام وأن يعبدوا الله وحده. فقام من بين الحاضرين عمه أبو لهب غاضبا وقال له : تبالك ؟ لهذا جمعتنا؟ فأنزل الله سبحانه فيه وفي زوجته أم جميل: تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿1﴾ مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ﴿2﴾ سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿3﴾ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿4﴾ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ ﴿5﴾ (سورة المسد)

Avj­vn ZvAvjvi Av‡`k †c‡q bex gynv¤§` mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zuvi wbKUZg AvZ¥xqÑ ¯^Rb‡`i‡K mvdv cvnv‡oi cv`‡`‡k GKwÎZ K‡ib| AZtci Zv‡`i‡K g~wZ©c~Rv cwiZ¨vM K‡i GK Avj­vni ÔBev`Z Ki‡Z AvnŸvb K‡ib| mg‡eZ †jvK‡`i ga¨ †\_‡K Zuvi PvPv Ave~ jvnve e‡j DVj: †Zvgvi aŸsm †nvK, G R‡b¨B wK Avgv‡`i‡K GKwÎZ K‡i‡Q? Gi †cÖw¶‡Z Avj­vn ZvAvjv Ave~ jvnve I Zvi ¯¿x D‡¤§ Rvgxj m¤ú‡K© m~iv gvmv` (jvnve) AeZxY© K‡ib : ÒAve~ ivnv‡ei `yÕnvZ aŸsm †nvK Ges aŸsm †nvK †m wb‡R| †Kvb Kv‡R Av‡mwb Zvi abÑm¤ú` I hv †m DcvR©b K‡i‡Q| mZ¡iB †m cÖ‡ek Ki‡e †jwjnvb AwMœ‡Z Ges Zvi ¯¿xI, †h BÜb enb K‡i, Zvi Mj‡`‡k LR©y‡ii iwk wb‡q|Ó (m~iv gvmv` : 1-5)

VvÆvÑwe`ªƒc : مرحلة الاستهزاء

كان المشركون يستهزؤن بالرسول صلى الله عليه وسلم فحينا يقولون عنه إنه مجنون وساحر، وحينا يقولون عنه شاعر وكاهن .. وكانوا يحذرون الناس من مقابلته أو الاستماع إليه، ويضعون الأشواك في طريقه ويلقون الأوساخ عليه وهو يصلي.

gykwiKiv bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K wewfbœ Dcv‡q Dcnvm KiZ| KL‡bv KL‡bv Zv‡K cvMj I hv`yKi ejZ| Avevi KL‡bv ejZ Kwe I MYK| AMvš‘K †jvK‡`i‡K Zuvi mv‡\_ mv¶vr Ki‡Z A\_ev K\_v ïb‡Z evav w`Z| Zuvi PjvP‡ji iv¯—vq KuvUv wewQ‡q ivLZ Ges mvjvZiZ Ae¯’vq Zuvi Dci gqjvÑAveR©bv wb‡¶c KiZ|

wbh©vZb wbcxob : مرحلة التعذيب

كان المشركون يعذبون عبيدهم الذين أسلموا أشد العذاب. فكانوا يقيدونهم ويلقونهم على رمال الصحراء المحرقة وقت الظهيرة، ويضعون الصخور الثقيلة على صدورهم، ويضربونهم بالسياط، ويكو ونهم بالنار ولم يترك الكشركون نوعا من أنواع الإيذاء إلا فعلوه بالمسلمين.

gykwiKiv Zv‡`i gymwjg †Mvjvg‡`i Dci KwVb wbh©vZb Pvjv‡Zv| Zv‡`i‡K nvZÑ cv †eu‡a fi `ycy‡i DËß evjyKvivwk‡Z ïB‡q w`Z Ges fvix cv\_i Øviv Zv‡`i eyK Pvcv w`Z Ges Qwo Øviv cÖnvi KiZ I AwMœ †muKv w`Z| wbh©vZ‡bi Ggb †Kvb c×wZ †bB hv Zviv gymjgvb‡`i Dci cÖ‡qvM K‡iwb|

ˆah© I AwePj : الصبر والثبات على دين الله

كان المسلمون يقابلون كل تلك القسوة والتعذيب من قبل المشركين بالصبر والثبات، لأن النبي صلى الله عليه وسلم أوصاهم بالثبات على الشدائد طمعاً في ثواب الله والجنة فمن أولئك الذين تحملوا أذى المشركين بلال بن رباح وعمار بن ياسر، وغيرهما رضي الله عنهم، وتحت تأثير عذاب المشركين مات ياسر وسمية، وهما أول شهيدين في الإسلام رضي الله عنهما.

gymjgvbMY gykwiK‡`i mKj wbh©vZb I wbcxob ˆah© I `„pZvi mv‡\_ †gvKvwejv Ki‡Zb| †Kbbv bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zv‡`i‡K mvIqve I RvbœvZ jv‡fi Avkvq wec‡` ˆah© aviY I Abo \_vKvi civgk© †`b| gykwiK‡`i wbh©vZb †fvM K‡i‡Qb Ggb K‡qKRb D‡j­L‡hvM¨ mvnvex n‡jb : wejvj Be‡b ivevn I Av¤§vi Be‡b Bqvwmi cÖgyL iv.| Zv‡`i wbh©vZ‡bi wkKvi n‡q wbnZ n‡q‡Qb Bqvwmi I mygvBqv iv. Bmjv‡gi BwZnv‡m GivB me©cÖ\_g knx`|

wØZxq cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الثانية

1- أكمل الفراغات التالية بما يناسبها

1| Dchy³ kã Øviv k~b¨¯’vb c~iY Ki :

بدأ النبي صلى الله عليه وسلم بدعوة ...... و .....................، وكانت زوجه ............. رضي الله عنها ............ من آمن بدعوته إلى الإســلام وكان أول من به من الرجال ....... رضي الله عنه ومن الصبيان ................... رضي الله عنه، ومن الموالي .................. رضي الله عنه، وكان مولى لخديجة رضي الله عنها.

كان من الذين تحملوا أذى المشركين ...... بن رباح و ..............بن ياسر ، وغيرهما رضي الله عنهم وتحت تأثير عذاب المشركين مات ......... و .............. ، وهما أول في الإســــلام رضي الله عنهما.

1. بما ذا كان يقابل المسلمون قسوة وتعذيب المشركين لهم؟

2| gymjgvbMY Kxfv‡e gykwiK‡`i wbh©vZb I wbcxob †gvKvwejv Ki‡Zb?

1. ماذا كان يقول المشركون لرسول الله حينما يدعوهم للإســلام؟

3| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bmjv‡ig `vIqvZ w`‡j gykwiKiv Zuv‡K wK ejZ?

4- كم استمرت دعوة النبي صلى الله عليه وسلم سرا؟

4| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg KZw`b †Mvc‡b `vIqvZ w`‡q‡Qb?

5- اذكر الآية التي أمر الله نبيه بالجهر بالدعوة.

5| cÖKv‡k¨ `vIqvZ `v‡bi wb‡`©k msewjZ AvqvZ †KvbwU?

wØZxq el© . مقرر السنة الثانية

Z…Zxq cvV . الوحدة الثالثة

nvekvq (Avwewmwbqvq) wnRiZ . الهجرة إلى الحبشة

أمر الرسول أصحابه أن يهاجروا إلى الحبشة شفقة عليهم من إيذاء المشركين المستمر لهم، وكان سبب أختيارها ملجأً للهجرة، لأن مكلها النجاشي كان عادلا رحيما، ولم يكن من المشركين وخرج أول فوج من المهاجرين خفيفة، ودون أن تشعر بهم قريس. وكانو عشرة رجال وأربع نساء وكان ذلك في السنة الخامسة من البعثة.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Kv‡di‡`i AbeiZ wbh©vZ‡bi Kvi‡Y mvnvevM‡Yi cÖwZ `qv ciek n‡q nvekv‡Z wnRiZ Kivi wb‡`©k †`b| nvekvi ev`kv bv¾vkx b¨vqcivqY I `qvjy wQ‡jb e‡j nvekv‡KB wnRi‡Zi R‡b¨ g‡bvbxZ Kiv nj| bv¾vkx g~wZ©c~Rvix wQ‡jb bv| beyq¨v‡Zi cÂg eQi gynvwRi‡`i cÖ\_g G `‡j wQ‡jb `k Rb cyi“l I Pvi Rb gwnjv| Zviv KzivBk‡`i ARv‡š— Pzwcmv‡i nvekvi D‡Ï‡k¨ iIqvbv nb|

وبعد مدة لحق بهم مهاجرون آخرون، حتى بلغ عددهم جميعا نحواً من مائة رجل وأمرأة وطفل، فأكرمهم النجاشي وأحسن معاملتهم، وأقاموا عنده آمنين.

wKQyw`b ci Av‡iv GKwU gynvwRi `j Zv‡`i mv‡\_ wgwjZ n‡jb| cyi“l, gwnjv, wkï mn Zv‡`i †gvU msL¨v wQj cÖvq GK‡kv Rb| ev`kv bv¾vkx Zv‡`i m¤§vb †`b| Zv‡`i mv‡\_ my›`i e¨envi K‡ib Ges †mLv‡b wbivc‡` emevm Kivi AbygwZ †`b|

Zv‡qd Mgb. الذهاب إلى الطائف

انتهزت قريش فرصة وفاة أبي طالب الذي كان يحمي النبي صلى الله عليه وسلم وتطاولت على إيذائه أكثر من ذي قبل. في ظل تلك الظروف الصعبة التي مرت بالنبي رأى عليه الصلاة والسلام أن يذهب إلى الطائف لعله يجد عنه أهلها النصرة والمنعة إلا أنه لم يجد إلا السخرية والإساءة، ورجموه بالحجارة فعاد إلى مكة.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi AvkÖq`vZv PvPv Ave~ Zvwj‡ei g„Zz¨‡K KzivBkiv my‡hvM wn‡m‡e MÖnY Kij| Zvi Dci wbh©vZ‡bi gvÎv c~‡e©i †P‡q A‡bK evwo‡q w`j| G KwVb cwiw¯’wZ‡Z mn‡hvwMZv I AvkÖq cvIqvi Avkvq wZwb Zv‡qd Mgb Ki‡jb| wKš‘ †mLv‡b Dcnvm I `ye©¨envi Qvov Avi wKQyB †c‡jb bv| Zviv ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K cv\_i wb‡¶c K‡i AvnZ K‡i| d‡j wZwb g°vq wd‡i Av‡mb|

عرض النبي نفسه على القبائل

wewfbœ †Mv‡Îi wbKU ivm~‡ji Dcw¯’wZ:

أخذ يعرض نفسه على القبائل التي تحضر لمكة في موسم الحج، ويدعوها للإسلام لحمايته من أعدائه، والدفاع عن دعوته.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg n‡Ri †gŠmy‡g g°vq AvMZ wewfbœ †Mv‡Îi wbKU `vIqvZ wb‡q Dcw¯’Z nb| Zv‡`i‡K Bmjv‡gi `vIqvZ †`b Ges kÎ“‡`i †\_‡K AvZ¥i¶v I `vIqv‡Zi wbivcËv weav‡b mn‡hvwMZv Kvgbv K‡ib|

غير أن القبائل لم تستجب له، لأن قريشاً كانت تحذرها منه وتبعدها عنه ولكن حدث أن ستة رجال من يثرب اتصلوا بالنبي صلى الله عليه وسلم وبايعوه على الإسلام سرا خوفا من قريش.

Z‡e †Kvb †MvÎB G‡Z mvov w`j bv| KviY, KzivBkiv Zv‡`i‡K fqfxwZ cÖ`k©b K‡i Ges Zv‡`i‡K Zvi wbKU n‡Z `~‡i ivLvi †KŠkj Aej¤^b K‡i| BZ¨em‡i g`xbvi †bZ…¯’vbxq QqRb †jvK ivm~‡ji mv‡\_ mv¶vr K‡ib Ges KzivBk‡`i f‡q †Mvc‡b Zuvi nv‡Z evBqvZ MÖnY K‡ib|

وعندما عاد أولئك الرجال إلى بلدهم أخذوا يحدثون الناس عن الإســلام وما رأوه من أخلاق الرسول صلى الله عليه وسلم وصدق دعوته.

Zviv wbR †`‡k cÖZ¨veZ©b K‡i gvby‡li mv‡\_ Bmjvg m¤ú‡K© Ges ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi PwiÎ I `vIqv‡Zi mZ¨Zv m¤ú‡K© Av‡jvPbv K‡ib|

وعمل أولئك النفر على نشر الإسلام بين أهل يثرب فاعتنقه كثيرة منهم.

Ges g`xbvevmx‡`i gv‡S Bmjvg cÖPv‡ii KvR K‡ib| d‡j A‡b‡KB Bmjvg ag© MÖnY K‡ib|

AvKvevi cÖ\_g evBqvZ: بيعة العقبة الأولى

في موسم الحج سنة 12 من النبوة خرج اثنا عشر رجلا من يثرب، وقابلوا رسول الله صلى الله عليه وسلم عند العقبة الأولى بمنى، وبايعوه وسميت تلك البيعة بيعة العقبة الأولى، وبعث الرسول معهم عند عودتهم مصعب بن عمير رضي الله عنه ليتلو عليهم القرآن ويعلمهم الدين.

beyq¨v‡Zi Øv`k eQi n‡¾i †gŠmy‡g evi Rb †jvK g`xbv n‡Z †ei n‡q wgbv‡Z AvKvevi cÖ\_g evBAv‡Zi mgq ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi mv‡\_ †`Lv K‡i Ges evBqA‡Z Ask MÖnY K‡ib| G evBqvZ‡K Bmjv‡gi BwZnv‡m ÔAvj AvKvevZzj DjvÕ cÖ\_g evBqvZ ejv nq| g`xbvq wd‡i hvevi mgq ivm~j Zv‡`i mv‡\_ gymÔAve Be‡b Dgv‡qi iv. †K KziAvb wZjvIqvZ Ges Øxb wkLv‡bvi Rb¨ cvVvb|

AvKvei wØZxq evBqvZ: بيعة العقبة الثانية

وفي موسم الحج في السنة الثالثة عشر من النبوة العام التالي لبيعة العقبة الأولى خرج من أهل يثرب ثلاثة وسبعون رجلا وامرأتان قاصدين مكة للحج، وقابلوا النبي صلى الله عليه وسلم في منى، حتى لا تراهم قريش، وبايعوه بحضور عمه العباس وأبي بكر وعلي بن أبي طالب رضوان الله عليهم وتعرق هذه البيعة ببيعة العقبة الثانية، تعهدوا فيها بالدفاع عن النبي صلى الله عليه وسلم بالأموال والأرواح، وقالوا له : إنهم برحبون بهجرته إلى بلدهم ليكون في حمايتهم.

AvKvei cÖ\_g evBqv‡Zi cieZ©x eQi beyq¨v‡Zi †Z‡ivZg eQi n‡Ri †gŠmy‡g mËzi Rb cyi“l, `yB Rb gwnjv g°vi D‡Ï‡k¨ nR cvj‡bi j‡¶¨ g`xbv n‡Z iIqvbv nb Ges KzivBk‡`i A‡MvP‡i †Mvc‡b wgbv‡Z ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi mv‡\_ mv¶vr K‡ib hv‡Z K‡i KzivBkiv bv †`‡L| Avi Zviv mK‡j ivm~‡ji PvPv AveŸvm, Ave~ eKi Ges Avjx Be‡b Avey Zvwj‡ei Dcw¯’wZ‡Z ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi wbKU evBqvZ MÖnY K‡ib| G evBqvZ‡K Bmjv‡gi BwZnv‡m ÔAvj-AvKevZzm mvbxqvnÕ ejv nq| G‡Z Zviv RvbÑgv‡ji wewbg‡q ivm~j m. †K i¶v Kivi A½xKvi K‡ib| Zviv Zuv‡K G g‡g© Avk¦¯— Ki‡jb †h, wZwb hw` Zuv‡`i †`‡k Zuv‡`i wbivcËvq wnRiZ K‡ib Zvn‡j Zviv ¯^vMZ Rvbv‡eb| ivm~‡ji wbivcËvi D‡Ï‡k¨ Zv‡`i †`‡k wnRiZ Kiv‡K ¯^vMZ Rvbv‡bv n‡e|

الهجرة وقرار الخروج من مكة

wnhiZ I g°v Z¨vM Kivi wm×vš— :

أرادت قريش قتل الرسول صلى الله عليه وسلم لكنهم فشلوا وحفظه الله تعالى منهم.

KzivBkiv ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K nZ¨vi lohš¿ K‡i| wKš‘ Zviv e¨\_© nq Ges Avj­vn ZvAvjv‡K Zv‡K †ndvhZ K‡ib|

خرج النبي صلى الله عليه وسلم من داره وقد أعمى الله الكفار، فلم يروه، ومضى حتى التقى بصديقه أبي بكر خارج مكة وسارا معاً حتى وصلا غارا في جبل ثور فاختفيا فيه مدة ثلاثة أيام بلياليها، وكان عبد الله بن أبي بكر ينقل إليهما أخبار قريش، وأخته أسماء تنقل إليهما الطعام والماء، ثم خرج النبي صلى الله عليه وسلم وصاحبه من الغار واتجها صوب يثرب.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg ¯^xq Ni †\_‡K †ei nb Ges Avj­vn ZvAvjv Kv‡di‡`i P¶z AÜ K‡i †`b hv‡Z Zviv ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K †`L‡Z bv cv‡i| wZwb Pj‡Z Pj‡Z g°vi evB‡i ¯^xq eÜz Avey eKi wmÏxK iv. Gi mv‡\_ wgwjZ nb| AZtci Zviv Df‡q GK mv‡\_B c\_ Pjv Avi¤¢ K‡ib| ÔmIiÕ bvgK cvnv‡o †cuŠ‡Q GKwU ¸nvq wZb w`b ch©š— AvZ¥‡Mvcb K‡ib| Avãyj­vn web Ave~ eKi iv. Zv‡`i wbKU KzivBk‡`i msev` †cuŠQv‡Zb Ges Zvi †evb Avmgv Lv`¨ I cvbxq †cuŠQv‡Zb| Zvici bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg I Zvi m½x ¸nv n‡Z †ei nb Ges Bqvmwie (g`xbv) Awfgy‡L hvÎv ïi“ K‡ib|

Bqvmwi‡e (g`xbv) bZzb Aa¨v‡qi m~Pbv : مرحلة جديدة في يثرب

وصل النبي صلى الله عليه وسلم إلى يثرب وأسس أول مسجد أسس على التقوى هو مسجد قباء في المدينة المنورة.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg g`xbvq †cuŠ‡Q ZvKIqvi wfwË‡Z Bmjv‡gi me©cÖ\_g gmwR` wbg©vY K‡ib| eZ©gv‡b g`xbv kix‡d G gmwR`wU ÒgmwR‡` KzÕevÓ bv‡g cwiwPZ|

أول عمل وأول خطوة خطاها النبي صلى الله عليه وسلم هو بناء المسجد النبوي والمؤاخاة بين المهاجرين والأنصار.

g`xbv‡Z ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg me©cÖ\_g †h c`‡¶c MÖnY K‡ib Zv n‡”Q gmwR‡` beex wbg©vY Ges gynvwRi I Avbmvi‡`i gv‡S åvZ…Z¡ ¯’vcb| cÖ\_g KvR I me©cÖ\_g cwiKíbv hv ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg wba©viY K‡ib, Zv wQj gmwR‡` beex wbg©vY Ges Avbmvi I gynvwRi‡`i g‡a¨ åvZ…Z¡ ¯’vcb Kiv|

Z…Zxq cvV ch©v‡jvPbv : تقويم الوحدة الثالثة

1- صل بخط من الفقرة (أ) مع ما يناسبها من الفقرة (ب)

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| \* خرج أول فوج من المهاجرين إلى : | المدينة |
| \* في بيعة العقبة الأولى كان عدد المبايعين: | ثلاثة وسبعون رجلا وامرأتان. |
| \* في بيعة العقبة الثانية كان عدد المبايعين | إثنا عشر رجلا. |
| \* هاجر النبي صلى الله عليه وسلم مع أبي بكر إلي: | الحبشة. |
| \* كان عدد المهاجرين إلى الحبشة أول مرة: | نحوا من مائة رجل وامرأة وطفل. |
| لحق بالمهاجرين إلى الحبشة آخرون بلغ عددهم: | عشرة رجال وأربع نساء |

1| †iLv †U‡b (أ) AskK (ب) As‡ki Dchy³ k‡ãi mv‡\_ wgjvI t

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| gynvwRi‡`i cÖ\_g `j wnRiZ K‡iwQj..... | g`xbvq |
| AvKvevi cÖ\_g evBqv‡Z evBqvZ MÖnYKvix mvnvexi msL¨v wQj ........ | 73 Rb cyi“l I `yÕRb gwnjv |
| AvKvevi wØZxq evBqv‡Z evBqvZ MÖnYKvix msL¨v wQj..... | 12 Rb cyi“l |
| gnbex mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Avey eKi‡K mv‡\_ wb‡q wnRiZ K‡iwQ‡jb ..... | nvekvq |
| cÖ\_gevi nvekvq wnRiZKvix mvnvexM‡Yi msL¨v wQj...... | 100 Rb cyi“l, GKRb gwnjv I GKwU wkï |
| nvekvq cieZ©x‡Z hviv wnRiZ K‡i c~‡e©i gynvwRiM‡Yi mv‡\_ wgwjZ nb Zv‡`i msL¨v.... | 10 Rb cyi“l I PvIhyb gwnjv |

2- متى كانت أول هجرة إلى الحبشة؟

2| nvekvq cÖ\_g wnRiZ KLb nq?

3- من الذين بعثة رسول الله إلى يثر ليدعو الناس إلى الإسلام؟

3| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg g`xbvq Bmjvg cÖPv‡ii R‡b¨ Kv‡K †cÖiY K‡iwQ‡jb?

4- ما سبب اختيار الحبشة دارا للهجرة؟

4| wnRi‡Zi R‡b¨ nvevkv †`k‡K wbe©vPb Kiv nj †Kb?

5- ما أول عمل قام به النبي صلى الله عليه وسلم عند وصوله إلى يثرب؟

5| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg g`xbvq †cuŠ‡Q me©cÖ\_g †Kvb Kv‡Ri c`‡¶c MÖnY K‡ib?

6- متى كانت بيعة العقبة الأولى؟

6| AvKvei cÖ\_g evBqvZ KLb nq?

PZz\_© cvV : الوحدة الرابعة

cÖwZi¶v I cÖwZ‡iva : مرحلة الدفاع

HwZnvwmK e`i hy× . (أ) غزوة بدر الكبرى

قافلة أبي سفيان Ave~ mywdqv‡bi Kv‡djv .

حديث أن قافلة لقريش كانت عائدة من الشام إلى مكة بتجارة عظيمة. فلما علم الرسول صلى الله عليه وسلم بأمرها، عزم على الاستيلاء عليها نظير ما استولى عليه أهل مكة من أموال المهاجرين.

KzivBk‡`i GKwU e¨emvqx `j wmwiqv †\_‡K wekvj evwYwR¨K cY¨ wb‡q g°v cÖZ¨veZ©b Ki‡Q g‡g© msev` Qwo‡q coj| ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg G e¨vcv‡i AeMZ n‡j D³ m¤ú` `Lj Kivi msKí e¨³ K‡ib| KviY BwZc~‡e© g°v evmxiv gynvwRi‡`i m¤ú` `Lj K‡i wb‡qwQj|

ولما علم أبو سفيان، رئيس القافلة بعزم الرسول صلى الله عليه وسلم بعث من يخبر قريشا بالأمر فخرجت قريش لحماية القافلة ولكن أبا سفيان كان قد تمكن من الهرب بقافلته ونجا.

`jcwZ Ave~ mywdqvb ivm~j m. Gi msK‡íi K\_v Rvb‡Z †c‡i GK †jvK‡K KzivBk‡`i wbKU cwiw¯’wZ m¤ú‡K© msev` `v‡bi Rb¨ cvVv‡jb| msev` †c‡q KzivBkiv evwYwR¨K Kv‡djv i¶v‡\_© `ª“Z †ei n‡q Avmj| Gw`‡K Ave~ mywdqvb Av‡MB Kv‡djv mn cjvqb Ki‡Z m¶g nq Ges †eu‡P hvq|

وطلب من قريش الرجوع إلى مكة، إلا أن أشراف قريش وعلى رأسهم أبو جهل أصروا على قتال المسلمين، وواصلوا سيرهم نحو المدينة بجيش قوامه حوالي ألف مقاتل.

KzivBkiv g°vq wd‡i †h‡Z PvBj wKš‘ KzivBk †bZviv we‡klZ Ave~ Rv‡nj gymjgvb‡`i wei“‡× hy× Kivi †NvlYv w`j Ges cÖvq GK nvRvi †hv×vi GKwU †mbv`j g`xbvwfgy‡L cvVvj|

hy‡×i AbygwZ . الإذن بالقتال

لما ازداد طغيان المشركين على المسلمين، أمر الله رسوله صلى الله عليه وسلم بقتالهم بقوله تعالى: وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿190﴾ (البقرة : 190)

gymjgvb‡`i wei“‡× gykwiK‡`i wbh©vZb hLb Amnbxq ch©v‡q †e‡o †Mj Avj­vn ZvAvjv ZLb Avcb ivm~j‡K Zv‡`i wei“‡× hy× Kivi wb‡`©k †`b| Avj­vn e‡jb : Ò hviv †Zvgv‡`i mv‡\_ hy‡× wjß nq †Zvgiv Avj­vni c‡\_ Zv‡`i wei“‡× hy× Ki| Aek¨ Kv‡iv cÖwZ evoevwo K‡iv bv| wbðqB Avj­vn mxgv j•Nb Kvix‡`i cQ›` K‡ib bv|Ó (m~iv evKvivn : 190)

خرج النبي صلى الله عليه وسلم بعد الإستشارة ومعه حوالي ثلاثمائة وسبعة عشر رجلا من المهاجرين والأنصار لقتال المشركين.

bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg civgk© K‡i gynvwRi I AvbmviM‡Yi wb‡q MwVZ cÖvq wZb kZ m‡Zi R‡bi GKwU †mbv`j wb‡q gykwiK‡`i wei“‡× hy× Kivi j‡¶¨ †ei n‡jb|

في 17 رمضان من السنة الثانية للهجرة تلاقى الجيشان في بدر، ودارت هناك غزوة بدر التي انتصر فيها المسلمون على المشركين انتصارا عظيما.

wnRix wØZxq m‡bi 17 ivgvhvb e`i bvgK ¯’v‡b Dfq `j gy‡LvgywL nq Ges †mLv‡bB e`i hy× msNwUZ nq| G hy‡× gymjgvbiv gnv weRq jvf K‡ib|

غنم المسلمون عنائم كثيرة، قسمها الرسول صلى الله عليه وسلم بين المسلمين وقد قتل من المشركين في تلك الغزوة سبعون، وأسر منهم سبعون آخرون، وكان عدد قتلى المسلمين أربعة عشر شهيدا.

G hy‡× gymjgvbMY A‡bK Mwbg‡Zi m¤ú` jvf K‡ib| ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zv‡`i gv‡S †m¸‡jv eÈb K‡i †`b| G hy‡× †gvU mËzi Rb gykwiK wbnZ nq Ges mËzi Rb e›`x nq Avi gymjgvb‡`i knx‡`i msL¨v gvÎ †PŠÏRb|

Dû` hy× : (ب) غزوة أحد

KzivBk‡`i cÖwZ‡kva cÖ¯‘wZ: إستعداد قريش للأخذ بالثأر

بعد أن رجعت قريش إلى مكة حزينة على ما أصابها من هزيمة منكرة ومن قتل كثير من زعمائها، خافت من تهديد المسلمين لتجارتها، اجتمع رؤساؤها وتشاوروا وعزموا على الأخذ بالثأر وظلت قريش مدة سنة تستعد لجمع الأموال والرجال ودعوة حلفائها من القبائل المجاورة لمساعدتها وأعدت جيشا كبيرا يزيد على ثلاثة آلاف مقاتل تحت قيادة أبي سفيان.

e`i hy‡× KzivBkiv †kvPbxq civRq Ges wb‡R‡`i eo eo †bZv nvwi‡q `ytL fvivµvš— ü`‡q g°vq cÖZ¨veZ©b Kivi ci Zv‡`i e¨emvÑevwYR¨ gymjgvb‡`i c¶ n‡Z ûgwKi m¤§yLxb nIqvi Avk¼v K‡i| d‡j Zviv c~Y© GK eQi hver ˆmb¨ I m¤ú` mÂq Ges cÖwZ‡ekx †MvÎxq wgÎ‡`i‡K mnvqZv cÖ`v‡bi AvnŸvb mn †Rvi cÖ¯‘wZ MÖnY K‡i Ges Ave~ mywdqv‡bi †bZ…‡Z¡ wZb nvRv‡ii AwaK GKwU wekvj †mbv`j MVb K‡i|

Dû` Awfgy‡L hvÎv . الخروج إلى أحد

لما بلغ النبي صلى الله عليه وسلم قدوم قريش، خرج لمحاربتهم في جيش ضم نحو ألف مقاتل من المهاجرين والأنصار، ونزل بساحة في سفح جبل أحد، ونظم جيشه، جاعلا الجبل خلفه لحمايته، كما أنه أوقف الرماة على الجبل وراءه للدفاع عن الجيش وأمرهم بعدم مغادرة أماكنهم مهما حدث.

bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi wbKU KzivBk‡`i AvMgb evZ©v †cuŠ‡Qv‡j wZwb gynvwRi I Avbmvi wb‡q MwVZ GK nvRvi †hv×vi GKwU wekvj †mbv`j wb‡q Zv‡`i cÖwZ‡iva Kivi Rb¨ †ei nb Ges Dû` cvnv‡oi Xvjy‡Z Ae¯’vb MÖnY K‡ib| cvnvo wcQ‡b †i‡L wZwb ˆmb¨‡`i mymsMwVZ I web¨¯— K‡ib| †h †Kvb cwiw¯’wZ‡Z ¯’vb Z¨vM bv Kivi Rb¨ Zv‡`i‡K wb‡`©k cÖ`vb K‡ib|

بداية النصر ومخالفة الرماة

cÖv\_wgK weRq I wZi›`vR‡`i `vwq‡Z¡ Ae‡njv :

كان النصر في بداية المعركة للمسلمين وتراجع المشركين، حينها انشغل المسلمون بجمع الغنائم، وترك الرماة أماكنهم طمعا في تلك الغنائم.

H hy‡×i ïi“ fv‡M gymjgvb‡`i Rq nj Ges gykwiKiv wcQy nUj| wKš‘ gymwjg Zxiv›`vRMY Mwbg‡Zi gvj msMÖnY Ki‡Z wM‡q ¯^xq ¯’vb Z¨vM K‡i em‡jb|

التفاف المشركين وانتهاز الفرصة

gykwiK‡`i R‡ov nIqv I my‡hvM MÖnY :

انتهز الكفار هذه الفرصة، واحتلوا موقع الرماة، ورشقوا المسلمين بالنبال من خلفهم، فاختلت صفوفهم، وأعاد الكفار هجومهم، فقتل كثير من المسلمين، منهم حمزة بن عبد المطلب سيد الشهداء، وأصيب الرسول صلى الله عليه وسلم بجروح في وجهه وأسنانه.

Kv‡diiv G my‡hv‡M Zxi wb‡¶‡ci ¯’vb¸‡jv `Lj K‡i wbj Ges gymjgvb‡`i wcQb w`K †\_‡K Zxi wb‡¶c Ki‡Z jvMj| hvi Kvi‡Y gymjgvb‡`i KvZvi QÎf½ n‡q †Mj| G‡Z A‡bK gymjgvb kvnv`vZ eiY K‡ib| Zv‡`i g‡a¨ knx`M‡Yi mi`vi nvghv web Avãyj gyËvwje iv. wQ‡jb| G hy‡× ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi gyLgÊj Ges `š— gyeviK AvNvZcÖvß nq|

وقد وقعت معركة أحد يوم السبت، الخامس عشر من شهر شوال من العام الثالث للهجرة النبوية الشريفة.

Dû` hy× msNwUZ nq wnRix m‡bi Z…Zxq eQi kvIqvj gv‡mi 15 ZvwiL †ivR kwbevi|

PZz\_© cvV ch©v‡jvPbv: تقويم الوحدة الرابعة

1 – صل بخط من الفقرة (أ) مع ما يناسبها من الفقرة (ب)

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| \* كانت عزوة بدر الكبرى في: | \* في 15 شوال من السنة الثالثة للهجرة |
| \* كان عدد قتلى المشركين في بدر: | \* أربعة عشر شهيدا. |
| \* كانت غزوة أحد في : | \* في 17 رمضان من السنة الثانية للهجرة. |
| \* كان عدد قتلى المسلمين في بدر : | \* سبعون رجلا. |
| \* كان النصر العظيم في بدر: | \* للمسلمين. |
| \* قتل أبو جهل في غزوة : | \* أحد. |
| \* استشهد حمزة بن عبد المطلب في غزوة : | \* بدر. |
| \* كان عدد المسلمين في بدر : | \* ألف مقاتل. |
| \* كان عدد الكفار في أحد : | \* ثلاثمائة وبضعة عشر. |
| \* كان عدد المسلمين في أحد : | \* ثلاثة آلاف مقاتل. |
| \* كان عدد المشركين في بدر : | \* ألف مقاتل من المهاجرين والأنصار. |

(أ) Ask‡K (ب) As‡ki Dchy³ k‡ãi mv‡\_ wgjvI :

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| e`i hy× msNwUZ n‡q‡Q | wnRix Z…Zxq eQi 15 kvIqvj |
| e`i hy‡× gykwiK‡`i wbn‡Zi msL¨v | †PŠÏ Rb knx` |
| Dn‚` hy× msNwUZ n‡q‡Q | Z…Zxq wnRix 17 kvIqvj |
| e`i hy‡× gymjgvb‡`i wbn‡Zi msL¨v | mËzi Rb |
| e`i hy‡× gnvb weRq n‡q‡Q | Dn‚` |
| Ave~ Rvnj wbnZ n‡q‡Q | gymjgvb‡`i |
| †h hy‡× nvghv web Avãyj gyËvwje knx` n‡q‡Qb †mwU : | e`i |
| e`i hy‡× gymjgvb‡`i msL¨v wQj | 1000 †hv×v |
| Dn‚` hy‡× Kv‡di‡`i msL¨v wQj | 310 Gi AwaK |
| Dn‚` hy‡× gymjgvb‡`i msL¨v wQj | 3000 †hv×v |
| e`i hy‡× gykwiK‡`i msL¨v wQj | gynvwRi I Avbmvi‡`i ga¨ †\_‡K 1000 †hv×v |

2- بين أسباب وقوع كل مما يلي

2| wb‡gœ ewY©Z cÖ‡Z¨KwUi KviY eY©bv Ki

|  |  |
| --- | --- |
| غزوة بدر الكبرى . | HwZnvwmK e`i hy× |
| غزوة أحد. | Dn‚` hy× |
| نسر المسلمين في بدر | gymjgvbM‡Yi weRq |
| هزيمة المسلمين في أحد . | Dn‚` hy‡× gymjgvb‡`i civRq |

cÂg cvV : الوحدة الخامسة

L›`‡Ki hy× : (ج) غزوة الخندق (الأحزاب)

غدر اليهود ومراد القريش

Bqvû`x‡`i cÖwZkÖ“wZ f½ I KzivBk‡`i lohš¿ :

أرادت قريش أن تقضي على المسلمين في المدينة النبوية وكان السبب المباشر لهذه الغزوة هو أن اليهود الذين طردهم الرسول صلى الله عليه وسلم من المدينة لغدرهم وكيدهم وحقدهم على المسلمين، قد ذهبوا إلى مكة، وأخذوا يحرضون قريشاً على محاربة النبي صلى الله عليه وسلم وأصحابه ووعدوهم بالمال والسلاح.

KzivBkiv g`xbvi gymjgvb‡`i mg~‡j aŸsm K‡i w`‡Z PvBj| hy‡×i cÖK…Z KviY: gymjgvb‡`i mv‡\_ wek¦vmNvZKZv, Zv‡`i wei“‡× lohš¿ I wnsmvZ¥K AvPi‡Yi Kvi‡Y †h me Bqvû`x‡`i ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg g`xbv n‡Z Zvwo‡q †`b Zviv g°vq KzivBk‡`i `jfy³ nq| KzivBk‡`i‡K gymjgvb‡`i wei“‡× hy× Kivi †cÖiYv †RvMvq Ges Zv‡`i‡K Rbej, UvKvÑcqmv I A¯¿Ñk¯¿ w`‡q mn‡hvwMZv Kivi cÖwZkÖ“wZ †`q|

جمع الأموال وتحريض القبائل :

ab m¤ú` GKwÎKiY Ges wewfbœ †MvÎ‡K Drmvn cÖ`vb

ومن ثم فقد قام أهل مكة بجمع الأموال، ودعوا القبائل والأحزاب الموالية لهم من عرب ويهود، فتجمع لديهم جيش يزيد على عشرة آلاف مقاتل سار به أبو سفيان قاصدا المدينة لحرب المسلمين والقضاء عليهم وكان ذلك في شهر شوال من السنة الخامسة للهجرة.

Bqvû`x‡`i civgk© Abymv‡i g°v evmx abÑm¤ú` †RvMvo Ki‡Z Avi¤¢ Kij| KzivBkiv I Bqvû`xiv Zv‡`i ¯^xq †MvÎ I wgÎ‡`i mn‡hvwMZv Kivi AvnŸvb Rvbvj| cÂg wnRix‡Z Ave~ mywdqv‡bi †bZ…‡Z¡ `k nvRv‡iiI †ewk †hv×v g`xbvwfgy‡L iIqvbv nq| Zv‡`i g~j j¶¨ wQj gymjgvb‡`i mv‡\_ hy× Kiv I Zv‡`i wbwð‎ý Kiv|

النبي يستشير أصحابه وسلمان يشير بحفر الخندق

mvnvex‡`i mv‡\_ gZ wewbgq I mvjgvbÑGi cwiLv Lb‡bi civgk© cÖ`vb :

عندما علم النبي صلى الله عليه وسلم بما عزمت عليه قريش، استشار أصحابه فيما يجب أن يعمل فأجمعوا على أن يبقى المسلمون بالمدينة للدفاع عنها، ولما كانت المدينة مكشوفة عند مدخلها من الجهة الشمالية فقد أشار سلمان الفارسي رضي الله عنه بحفر خندق في تلك الجهة يحول دون دخول الأعداء للمدينة فعمل النبي عليه الصلاة والسلام بمشورة سلمان.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg KzivBk‡`i cÖ¯‘wZ I cÖwZÁv m¤ú‡K© AeMZ nIqvi ci KiYxq wba©vi‡Y mnvevM‡Yi mv‡\_ civgk© K‡ib| Zviv wm×vš— K‡ib gymjgvbMY g`xbvq Ae¯’vb K‡i cÖwZ‡iva Ki‡e| g`xbvi DËi cv‡k¦©i mxgvš— Aiw¶Z \_vKvq mvjgvb dvimx iv. g`xbvq `ykgb‡`i cÖ‡e‡k evavMÖ¯— Kivi j‡¶¨ DËi cv‡k¦© cwiLv Lb‡bi civgk© †`b| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg mvjgvb dvimx iv. Gi civgk© MÖnY K‡ib|

وبدأ المسلمون في حفر الخندق والنبي صلى الله عليه وسلم يعمل معهم حتى تم حفره في خمسة عشر يوماً، وأمر النبي صلى الله عليه وسلم أن توضع النساء والأطفال في الحصون وتجمع جيش من المسلمين يزيد على ثلاثة آلاف مقاتل لمحاربة المشركين والدفاع عن المدينة.

gymjgvbMY cwiLv Lbb Avi¤¢ K‡ib Ges ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg wb‡RB gymjgvbM‡Yi mv‡\_ hLb Kv‡R AskMÖnY K‡ib| c‡b‡iv w`‡bi g‡a¨ cwiLv Lbb m¤úbœ nq| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg gwnjv I wkï‡`i `y‡M© AvkÖq MÖn‡Yi wb‡`©k †`b| GK nvRv‡iiI †ewk gymwjg †hv×v gykwiK‡`i mv‡\_ hy× K‡ib Ges g`xbv cÖwZi¶vq wb‡qvwRZ nb|

Kv‡di †mbv‡`i Ae¯’vb : عسكر المشركين

أما جيش المشركين فقد اضطر أن يعسكر خارج المدينة على مقربة من الخندق لأن خيولهم لم تستطع اجتيازه إلا قليلا، ثم ولت منهزمة بعد مقتل فرسانها، عند ما وافق يهود بني قريظة فتح الجهة التي كانت تحميها حصونهم أمام الأحزاب لمهاجمة المسلمين من الخلف، أذن الرسول صلى الله عليه وسلم لنعيم بن مسعود، الذي لم تعلم قريش واليهود بإسلامه أن يوقع بينهما وقد نجح في مهمته.

gykwiK ˆmb¨iv cwiLvi A`~‡i g`xbvi evB‡i Ae¯’vb Ki‡Z eva¨ nq| †Kbbv Zv‡`i Ak¦¸‡jv cwiLv AwZµg Ki‡Z cv‡iwb| AZtci Zv‡`i Ak¦v‡ivnxiv wbnZ n‡j Ab¨iv civwRZ n‡q cjvqb K‡i| G mgq wcQb w`K †\_‡K gymjgvb‡`i‡K Avµg‡Yi j‡¶¨ eby KzivBhvi Bqvû`xiv Zv‡`i wbivcËv weavbKvix `yM©¸‡jvi dUK Db¥y³ Ki‡Z m¤§Z nj| byqvBg web gvmD` iv. hvi Bmjvg MÖn‡Yi Lei KzivBk I Bqvû`xiv RvbZ bv Zv‡K ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zv‡`i g‡a¨ Ø›Ø m„wói AbygwZ †`b| wZwb D³ Kv‡R mdj nb|

Avj­vni ˆmwbK: جنود الرحمن

ومضى شهر والمدينة محاصرة، وذات ليلة مظلمة من ليالي الشتاء الشديدة البرد هبت عواصف اقتلعت خيام المشركين وبعثرت قدورهم ومتاعهم ، ورمتهم بالحصى والرمال، وقذف الله في قلوبهم الرعب.

GK gvm ch©š— g`xbv Aei“× wQj| cÖPÊ kx‡Zi Mfxi AÜKvi ivwÎ‡Z cÖej evZvm I Zzdvb cÖevwnZ nj G‡Z gykwiK‡`i Zvey wQbœÑwew”Qbœ nj Ges Zv‡`i nvwo cvwZj mn hveZxq miÄvg jÊfÊ n‡q †Mj Ges Zv‡`i Dci gi“f~wgi cv\_i I evj~ ewl©Z Kiv nj| Avi Avj­vn ZvAvjv Zv‡`i Aš—‡i fxwZ mÂvi Ki‡jb|

فامتطى أبو سفيان جمله وفر هارباً، وتبعه جنوده، وهكذا انتهت غزوة الخندق أو الأحزاب بفشل المشركين وهربهم من أرض المعركة.

Ave~ mywdqvb Zvi D‡U Av‡ivnb Kij Ges †`Š‡o cjvqb Kij| Ab¨vb¨ ˆmb¨ivI ZviB c`v¼ AbymiY Kij| Gfv‡e gykwiK‡`i e¨\_©Zv I iY‡¶Î †\_‡K cjvq‡bi gva¨‡g Avnhve hy‡×i mgvwß NUj|

وصدق الله حيث يقول: يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آَمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿9﴾ (الأحزاب)

Avj­vn ZvAvjv mwZ¨B e‡j‡Qb: Ò†n gywgbMY! †Zvgiv †Zvgv‡`i cÖwZ Avj­vni wbqvÕg‡Zi K\_v ¯§iY Ki, hLb kÎ“evwnbx †Zvgv‡`i wbKUeZ©x n‡qwQj, AZtci Avwg Zv‡`i wei“‡× SÅv evqy Ges Ggb ˆmb¨evwnbx †cÖiY K‡iwQjvg hv‡`i‡K †Zvgiv †`L‡Z bv| †Zvgiv hv Ki Avj­vn Zv †`‡Lb|Ó (m~iv Avnhve : 9)

û`vBweqvi mwÜ : صلح الحديبية

عزم النبي صلى الله عليه وسلم في آخر السنة السادسة للهجرة على أن يذهب إلى مكة معتمرا لا يريد حربا، وخرج معه ألف وأربعمائة من المهاجرين والأنصار، ولما وصلوا الحديبية نزلوا بها محرمين وعلمت قريش بذلك، وأقسمت أن تمنع النبي صلى الله عليه وسلم ومن معه من دخول مكة.

hô wnRix‡Z ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Dgiv Kivi j‡¶¨ g°vi D‡Ï‡k¨ iIqvbv K‡ib| G md‡i Zuvi hy× Kivi †Kvb B”Qv wQj bv| †PŠÏ kZ Avbmvix I gynvwRi mvnvex Zuvi md‡ii mvw\_ nb| hLb Zviv û`vBweqv bvgK ¯’v‡b †cuŠ‡Qb mK‡j Bnivg euvav Ae¯’vq AeZiY K‡ib| KzivBkiv G msev` Rvb‡Z †c‡i kc\_ Kj †h, Zviv bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg I Zvi mv\_x‡`i‡K g°vq cÖ‡ek Ki‡Z †`‡e bv|

أرسل النبي صلى الله عليه وسلم إليهم عثمان بن عفان رضي الله عنه ليتفاوض معهم على أنه ما جاء لقتالهم، بل جاء للعمرة والحج، فقبلوا التفاوض.

ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Dmgvb iv. †K KzivBk‡`i wbKU G Lei w`‡q †cÖiY K‡ib †h, Zviv hy‡×i Rb¨ g°vi w`‡K iIqvbv nbwb| eis Zviv ïaygvÎ Dgivi D‡Ï‡k¨B g°vq cÖ‡ek Ki‡Z Pvb| Zvici Zviv Av‡jvPbvq emvi Rb¨ m¤§Z nq|

وبدأت المفاوضات التي انتهت بصلح يعرف باسم صلح الحديبية، تم فيه الاتفاق على أن يؤجل النبي صلى الله عليه وسلم عمرته إلى العام المقبل، وأن تقف الحرب بينهما مدة عشر سنوات، وأن يسمح للقبائل أن تنضم إلى أي فريق تختاره، فانضمت خزاعة للمسلمين، وانضم بنو بكر لقريش. ولما انتهى عقد الصلح، قام رسول الله صلى الله عليه وسلم فنحر هديه وحلق رأسه، وتبعه المسلمون ثم عادوا إلى المدينة المنورة.

Av‡jvPbv Avi¤¢ n‡j Zv mwÜi gva¨‡g mgvß nq| G mwÜ‡KB û`vBweqvi mwÜ ejv nq| wm×vš— nq ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zvi Dgiv cvjb‡K GK eQi wcwQ‡q †`‡eb Ges `k eQi hveZ hy× eÜ \_vK‡e| Avi †h †Kvb †MvÎ Zv‡`i B”Qvbymv‡i †h †Kvb `‡ji Aš—f©y³ n‡Z cvi‡e| G Pzw³i d‡j †LvhvAvÕ †MvÎ gymjgvb‡`i mv‡\_ wgwjZ nj Ges eby eKi †MvÎ KzivBk‡`i mv‡\_ wgwjZ nj| mwÜ Pzw³ m¤úbœ nIqvi ci ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg cï R‡en K‡ib Ges gv\_v gywo‡q †d‡jb| gymjgvbMY Zuvi AbyKiY K‡ib| AZtci wZwb gymjgvb‡`i‡K wb‡q g`xbvq †diZ Av‡mb|

cÂg cv‡Vi Abykxjbx : تقويم الوحدة الخامسة

1- صل بخط من الفقرة (أ) مع ما يناسبها من الفقرة ر(ب)

(أ) (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| \* كان صلح الحديبية في السنة : | الخامس للهجرة. |
| كانت غزوة الخندق في السنة : | السادسة للهجرة . |
| \* أذن الرسول صلى الله عليه وسلم أن يوقع بين قريس واليهود : | عثمان بن عفان . |
| أرسل النبي صلى الله عليه وسلم إلى قريش ليتفاوض معهم. | نعيم بن مسعود |
| انضم إلى النبي صلى الله عليه وسلم قبيلة: | بنو بكر. |
| انضم إلى قريش قبيلة: | خزاعة. |

(ب) As‡ki mwVK DËiwU (أ) As‡ki mv‡\_ wgwj‡q †jL :

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| û`vBweqvi mwÜ AbywôZ nq : | cÂg wnRix‡Z |
| L›`‡Ki hy× msNwUZ nq : | lô wnRix‡Z |
| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bqvû`x I gykwiK‡`i gv‡S Ø›Ø m„wói R‡b¨ cvVvb; | Dmgvb Be‡b Avd&dvb‡K |
| KzivBk‡`i mv‡\_ Av‡jvPbvi R‡b¨ cvVvb : | byqvBg Be‡b gvmD`‡K |
| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi mv‡\_ †h †MvÎ wgwjZ nq †mwU n‡”QÑ | eby eKi |
| KzivBk‡`i mv‡\_ †h †MvÎ wgwjZ nq Zv n‡”Q : | LyhvÔAv |

1- من صفات اليهود الغدر والخيانة والحقد والكيد

كيف عرفت ذلك من دراستك لغزوة الخندق؟

1| Bqvû`x‡`i me‡P‡q eo †`vl n‡jv : MvÏvix, wLqvbZ, wnsmv I Pµvš—| L›`‡Ki hy× Aa¨qb K‡i Zzwg Zv Kxfv‡e eyS‡Z cvi‡j|

lô cvV : الوحدة السادسة

g°v weRq : فتح مكة

استطاع النبي صلى الله عليه وسلم أن يوسع كثيرا من نشر دعوته بين القبائل بعد صلح الحديبية، ذلك أن عدد المسلمين قد ازداد خلال عام وقد حدثت خلال تلك الفترة أن اعتدى بنو بكر حلفاء قريش على خزاعة حلفاء المسلمين.

û`vqweqvi mwÜi ci bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg wewfbœ †Mv‡Î Zuvi `vIqvZx Kg©m~Px AwaK cwigv‡Y we¯—…wZ NUv‡Z m¶g nb| d‡j GK eQ‡ii gv\_vq gymjgvb‡`i msL¨v AwaK nv‡i e„w× †cj| GiB gv‡S KzivBk‡`i mv‡\_ ˆgÎx Pzw³‡Z Ave× eby eKi gymjgvb‡`i wgÎ Kexjv‡q LyhvÔAvi Dci AvµgY Kij|

وهذا يعنى أن قريشا وحلفاءها قد نقضوا شروط صلح الحديبية.

Gi A\_© `uvovj KivBk Ges Zvi wgÎiv û`vqweqvi mwÜ Pzw³ f½ Kij|

ولما علم النبي صلى الله عليه وسلم بذلك غضب غضباً شديداً وأعد جيشا كبيرا لفتح مكة قوامه عشرة آلاف مقاتل.

bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqvmvj­vg G msev` †c‡q AZ¨waK µz× nb Ges g°v weR‡qi D‡Ï‡k¨ `k nvRvi †hv×vi GKwU wekvj †mbv`j MVb K‡ib|

وكان ذلك في شهر رمضان من السنة الثامنة للهجرة وعند ما علمت قريش بقدوم النبي صلى الله عليه وسلم إلى مكة أرسلت زعيمها أبا سفيان ليعتذر للنبي صلى الله عليه وسلم يطلب تثبيت الصلح وإطالة مدته.

ZLb wQj wnRix Aóg e‡l©i igvhvb gvm| Gw`‡K KzivBkiv bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi g°vwfgy‡L Awfhv‡bi msev` †c‡q Zv‡`i †bZv I gyLcvÎ Ave~ mywdqvb‡K ¶gv cÖv\_©bv, mwÜ Pzw³ ejer Ges Pzw³i †gqv` Av‡iv evov‡bvi cÖ¯—ve w`‡q bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi wbKU †cÖiY K‡ib|

لم يقبل النبي صلى الله عليه وسلم الاعتذار لأنهم خانوا العهد.

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zv‡`i ¶gvi Av‡e`b bvKP K‡i w`‡jb| †Kbbv Zviv A½xKvi f½ K‡i‡Q|

لم يجد أبو سفيان مفرا إلا أن يسلم فأسلم ، ثم سار ذلك الجيش حتى شارف مكة فلما رأى أهل مكة ذلك الجيش الضخم، استسلموا، ودخل النبي والمسلمون مكة فاتحين منتصرين.

Ave~ mywdqvb Bmjvg MÖnY wfbœ euvPvi Avi †Kvb Dcvq bv †`‡L Bmjvg MÖnY K‡ib| AZtci †mbv`j (g°vwfgy‡L) iIqvbv n‡q g°vi KvQvKvwQ Avm‡j g°vevmx wekvj `j †`‡L AvZ¥mgc©Y K‡i| Avi bex AvKi mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg gymjgvbMY‡K m‡½ wb‡q weRqx †e‡k g°v cÖ‡ek K‡ib|

طاف النبي صلى الله عليه وسلم بالكعبة، وحطم ما حولها من الأصنام بعصاً في يده، وهو يقول كما علمه ربه (وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿81﴾ سورة الإسراء : 81)

bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg evBZzj­vni ZvIqvd K‡ib Ges wbR nv‡Zi Qwo Øviv KvÔevi Av‡kcv‡k ivLv mKj cÖwZgv †f‡O Pzigvi K‡i †`b| Avi ¯^xq i‡ei †kLv‡bv AvqvZ cvV Ki‡Z \_v‡Kb, hvi A\_© :

Òej: mZ¨ G‡m‡Q Ges wg\_¨v wejyß n‡q‡Q, wbðq wg\_¨v wejyß nIqviB wQj|Ó (m~iv Bmiv : 81)

ثم خطب صلى الله عليه وسلم بالناس، وأعلن أن مكة حرم آمن، وأن الله تعالى قد أحلها له وحده ساعة من النهار، ولن تحل لأحد بعد ذلك أبداً.

AZtci bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †jvK‡`i D‡Ï‡k¨ fvlY †`b| †NvlYv K‡ib g°v cweÎ I wbivc`| Avj­vn ZvAvjv ïaygvÎ Zuvi bexi LvwZ‡iB wKwÂr mg‡qi R‡b¨ (hy×) nvjvj K‡i‡Qb| Zuvici Avi Kv‡iv R‡b¨ KL‡bv nvjvj Kiv n‡e bv|

ثم التفت إلى الذين اجتمعوا حوله وقال لهم: ما ترون أني فاعل بكم؟ قالوا أخ كريم وابن أخ كريم، فصفح النبي صلى الله عليه وسلم عنهم وقال لهم : اذهبوا فأنتم الطلقاء ودخل الناس في دين الله أفواجا ونزل قوله تعالى :

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿1﴾ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ﴿2﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿3﴾ (سورة النصر )

Gici mg‡eZ g°v evmxi cÖwZ j¶¨ K‡i ej‡jb: Avwg †Zvgv‡`i mv‡\_ †Kgb AvPiY Kie e‡j †Zvgv‡`i aviYv? Zviv ejj: mnvbyf~wZkxj, D`vniY åvZ…Z¡myjf AvPiY| Avcwb gnr gnvbyf‡ei åvZz®úyÎ| bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zv‡`i mKj‡K ¶gv K‡i w`‡q ej‡jb : †Zvgiv mK‡jB gy³| Gici gvbyl `‡j `‡j Avj­vni Øx‡bi Aš—f©y³ n‡Z jvMj| Avj­vn ZvAvjv AeZxY© Ki‡jb: ÒhLb Avj­vni mvnvh¨ I weR© Avm‡e Ges Avcwb gvbyl‡K Avj­vni Øx‡b `‡j `‡j cÖ‡ek Ki‡Z †`L‡eb|Ó (m~iv bvmi : 1-3)

حجة الوداع: we`vq n¾

في السنة العاشرة للهجرة، دعا النبي صلى الله عليه وسلم المسلمين للذهاب معه إلى مكة، لأداء فريضة الحج وتعلم مناسكها.

`kg wnRix m‡b bex mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg gymjgvb‡`i‡K Zuvi mv‡\_ nReªZ cvjb I n‡Ri AvnKvg wk¶v MÖnY Ki‡Z g°v hvevi AvnŸvb Rvbv|

استجاب له نحو مائة ألف، خرجوا معه إلى مكة في الخامس والعشرين من ذي القعدة وعندما وصلوا الكعبة طافوا بها ثم خرجوا إلى منى في اليوم الثامن من شهر ذي الحجة وبعدها اتجهوا إلى جبل عرفات في اليوم التاسع وهناك وقف الرسول، وألقى خطبته الخالدة التي بين فيها تعاليم الدين الإسلامي ومناسك الحج وتلا على المسلمين قول الله تعالى : الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا (سورة المائدة : 3)

Zuvi AvnŸv‡b GK j‡¶i gZ †jvK mvov w`j| Zuviv hyjKvÕ`vn& gv‡m cuwPk ZvwiL Zuvi mv‡\_ g°v cv‡b †ei nb| evBZzj­vn‡Z †cuŠ‡Q cÖ\_‡g ZIqvd K‡ib| AZtci whjn¾ gv‡mi AvU ZvwiL wgbvi D‡Ï‡k¨ iIqvbv nb| Gici bq ZvwiL Rvev‡j Avivdvn Awfgy‡L hvÎv K‡ib| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †m\_v Ae¯’vb K‡ib Ges gymjgvb‡`i D‡Ï‡k¨ Zvi HwZnvwmK Agi fvlY `vb K‡i Zv‡`i‡K Bmjvgx wewaÑweavb I n‡Ri AvnKvg wk¶v †`b Ges Avj­vn ZvAvjvi wb‡æv³ evYx wZjvIqvZ K‡i ïbvb: ÒAvR Avwg †Zvgv‡`i R‡b¨ †Zvgv‡`i Øxb‡K c~Y©v½ K‡i w`jvg| †Zvgv‡`i cÖwZ Avgvi wbÔAvgZ cwic~Y© K‡i w`jvg Ges Bmjvg‡K †Zvgv‡`i R‡b¨ Øxb wn‡m‡e g‡bvbxZ Kijvg|Ó

cig myü` mvwbœ‡a¨ : إلى الرفيق الأعلى

في العام التالي بعد حجة الوداع، مرض النبي صلى الله عليه وسلم بالحمى، ورقد بيت زوجته عائشة رضي الله عنها.

we`vq n¾ cieZ©x eQi bex AvKivg m. R¡ivµvš— n‡q Amy¯’ n‡q c‡ob Ges wcÖq mnawg©Yx Av‡kqv iv. Gi N‡i kh¨v MÖnY K‡ib|

بعد أن اشتد عليه المرض، انتقل الرسول صلى الله عليه وسلم إلى جوار ربه في يوم الإثنين 12 ربيع الأول سنة 11 هـ وهو في الثالثة والستين من عمره.

c‡i †iv‡Mi ZxeªZv evo‡j wnRix GKv`k m‡bi 12 iexDj AvDqvj †mvgevi 63 eQi eq‡m ¯^xq cÖwZcvj‡Ki mvwbœ‡a¨ P‡j hvb|

حزن المسلمن لوفاة الرسول حزنا شديدا وبكوا، ولكن أبا بكر وقف بينهم خطابا، وقال لهم من كان يعبد محمدا فإنّ محمدا قد مات، ومن كان يعبد الله فإن الله حي لا يموت، وتلا عليهم قوله تعالى: وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿144﴾ (سورة آل عمران : 144)

ivm~j my. Gi wZ‡ivav‡b gymjgvbMY hvi ci bvB †kvKvnZ nb Ges Lye e¨w\_Z nb| G cwiw¯’wZ‡Z Avey eKi iv. fvlY †`qvi D‡Ï‡k¨ `uvwo‡q e‡jb : huviv gynv¤§v‡`i Dcvmbv KiZ Zviv †R‡b ivLyK †h, gynv¤§v` AvR g„Zz¨eiY K‡i‡Qb| Avi hviv Avj­vni ÔBev`Z K‡i, wbðq Avj­vn ZvAvjv wPiÄxe, KL‡bv g„Zz¨ eiY Ki‡eb bv| Gici wb‡æv³ AvqvZ wZjvIqvZ K‡ib : ÒAvi gynv¤§v` GKRb ivm~j ˆe wKQy bb| Zvi c~‡e©I eû ivm~j AwZevwnZ n‡q †M‡Qb| Zvn‡j wK wZwb hw` g„Zz¨eiY K‡ib A\_ev wbnZ nb, Z‡e †Zvgiv cðv`cmib Ki‡e? e¯‘Z: †KD hw` cðv`cmib K‡i, Z‡e Zv‡Z Avj­vni wKQyB ¶wZ n‡e bv| Avi hviv K…ZÁ Avj­vn Zv‡`i mvIqve `vb Ki‡eb|Ó

(m~iv Av‡j Bgivb : 144)

cðv`cmib K‡i, Z‡e Zv‡Z Avj­vni wKQyB ¶wZ n‡e bv| Avi hviv K…ZÁ Avj­vn Zv‡`i mvIqve `vb Ki‡eb|

lô cv‡Vi Abykxjbx : تقويم الوحدة السادسة

1- صل بخط من الفقرة (أ) مع ما يناسبها من الفقرة (ب)

|  |  |
| --- | --- |
| \* السنة العاشرة للهجرة. | \* توفي النبي صلى في : |
| \* السنة الثامنة للهجرة . | \* كانت حجة الوداع في : |
| \* السنة االحادية عشرة للهجرة. | \* كان فتح مكة هو : |
| \* أبا سفيان. | \* سبب فتح مكة هو: |
| \* اعتداء بني بكر على خزاعة . | \* أرسلت قريش لإطالة وتثبيت الصلح: |
| \* إذا جاء نصر الله والفتح. | \* حطم النبي صلى الله عليه وسلم الأصنام وهو يقول: |
| \* اليوم أكملت لكم دينكم.... | \* بعد وفاة الرسول تلا أبو بكر قوله تعالى : |
| \* قل جاء الحق وزهق الباطل... | \* في فتح مكة نزل قوله تعالى : |
| \* وما محمد إلا رسول .. | \* في حجة الوداع تلا النبي صلى الله عليه وسلم قوله تعالى |

(أ) As‡k ewY©Z ev‡K¨i mv‡\_ (ب) As‡ki Dchy³ evK¨wU mshy³ Ki :

(ب) (أ)

|  |  |
| --- | --- |
| bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bnavg Z¨vM K‡ib | wnRix `kg m‡b |
| we`vq nR msNwUZ nq | wnRix Aóg m‡b |
| g°v weRq nq | wnRix Øv`k m‡b |
| g°v weR‡qi KviY.... | Avey mywdqvb |
| û`vqweqvi mwÜPzw³ envj I †gqv` evov‡bvi R‡b¨ cvVvb | eby eKi KZ©…K Kexjv‡q LyhvÔAvi Dci AvµgY |
| bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg cÖwZgv †f‡O P~Y©ÑweP~Y© Kiv Kvjxb cvV KiwQ‡jb | إذا جاء نصر الله ....  hLb Avj­vni mvnvh¨ I weRq Avm‡e |
| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi Bwš—Kv‡ji ci Avey eKi iv. wZjvIqvZ K‡ib... | اليوم أكملت لكم....  AvR Avwg c~Y©v½ K‡i w`jvg........ |
| g°v weRq cÖv°v‡j AeZxY© nq : | قل جاء الحق ....  ejyb mZ¨ G‡m‡Q Ges wg\_¨v wejyß n‡q‡Q... |
| we`vq n‡R ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg wZjvIqvZ K‡ib| | وما محمد إلا رسول ....  gnv¤§` ivm~j ˆe Ab¨ wKQy bb..... |

خامسا

أحاديث مختارة

cÂg cvV

wbe©vwPZ nv`xm

Zvqv¤§yg : التيمم

عن عمار بن ياسر رضي الله عنهما قال : بعثني النبي صلى الله عليه وسلم في حاجة، فأجنبت فلم أجد الماء، فتمرغت في الصعيد كما تمرغ الدابة، ثم أتيت النبي صلى الله عليه وسلم، فذكرت ذلك له، فقال : إنما كان يكفيك أن تقول بيديك هكذا، ثم ضرب بيديه الأرض ضربة واحدة، ثم مسح الشمال على اليمين وظاهر كفيه ووجهه. (متفق عليه)

Av¤§vi web Bqvwmi iv. †\_‡K ewY©Z wZwb e‡jb, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Avgv‡K& †KwU Kv‡R †Kv\_vI cvVvb| †mLv‡b Avwg AcweÎ n‡q cwo| †Kv\_vI cvwb bv †c‡q PZz®ú` Ršy—i b¨vq gvwU‡Z MovMwo[ Kwi| ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi wbKU †cuŠ‡Q welqwU RvbvB| G K\_v ï‡b ivm~j e‡jb, `yÕnvZ Øviv Gfv‡e KivB h‡\_ó wQj| AZtci wZwb `yÕnvZ Øviv GKevi gvwU‡Z AvNvZ K‡i evg nvZ Øviv Wvb nvZ I nv‡Zi Kwâi DcwifvM I †Pnviv gv‡mn K‡ib| (eyLvix, gymwjg)

bdj mvjvZ : صلاة النوافل

عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما قال: صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم ركعتين قبل الظهر، وركعتين بعدها، وركعتين بعد الجمعة، وركعتين بعد المغرب، وركعتين بعد العشاء. متفق عليه.

Avãyj­vn web Dgi iv. e‡jb, Avwg ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Gi mv‡\_ †hvn‡ii c~‡e© `yÕivKÔAvZ c‡i `yÕivKAvZ, RygyAvi ci `yÕivKÔZ, gvMwi‡ei ci `yÕivKÔAvZ Ges Bkvi ci `yÕivKÔAvZ mvjvZ Av`vq KiwQ|

(eyLvix, gymwjg)

وفي لفظ: فأما المغرب والعشاء والجمعة، ففي بيته. في لفظ للبخاري: أن ابن عمر قال: حدثنتي حفصة، أن النبي صلى الله عليه وسلم كان يصلى سجدتين خفيفتين بعد ما يطلع الفجر وكانت ساعة لا أدخل على النبي صلى الله عليه وسلم فيها.

Ab¨ †iIqvqv‡Z ewY©Z Av‡QÑ gvMwie, Bkv Ges RygyAvi bdj (mybœZ) N‡i co‡Zb| eyLvix‡Z Ab¨ GKwU eY©bvq Be‡b Dgi iv. e‡jb, nvdmv iv. eY©bv K‡ib, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg mye‡n mv‡`‡Ki ci ms‡¶‡c `yÕ ivKÔAvZ mvjvZ Av`vq Ki‡Zb| †mwU Ggb GKwU gyn‚Z© wQj hLb Avwg Zuvi wbKU cÖ‡ek KiZvg bv|

Zvwnq¨vZzj gmwR` : تحية المسجد

عن أبي قتادة الحارث بن ربعي الأنصاري رضي الله عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: إذا دخل أحدكم المسجد، فلا يجلس حتى يصلى ركعتين. (متفق عليه)

Avey KvZv`v nv‡iQ web wiehx Avj Avbmvix iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j e‡jb: †Zvgv‡`i †KD gmwR‡` cÖ‡ek Ki‡j `yÕivKÔAvZ mvjvZ Av`vq bv K‡i em‡e bv| (eyLvix, gymwjg)

mvjvZzj Kzm~d . صلاة الكسوف

عن أبي مسعود عقبة بن عمرو الأنصاري البدري رضي الله عنه؛ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله، يخوف الله بهما عباده، إنهما لا ينكسفان لموت أحد من الناس ولا لحياته، فإذا رأيتم منها شيئا؛ فصلوا، وادعوا الله؛ حتى ينكشف ما بكم. (متفق عليه)

Ave~ gvmE` ÔDKevn web Avgi Avj Avbmvix Avj e`ix iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡ib . wbðqB P›`ª I m~h© Avj­vn ZvAvjvi wb`k©Yvejwi g‡a¨ `yÕwU wb`k©b| wZwb GZ `y f‡qi gva¨‡g Avcb ev›`v‡`i fxwZ cÖ`k©b K‡ib| †Kvb gvby‡li Rb¥ ev g„Zz¨i Kvi‡Y m~h© I P›`ª MÖnY nq bv| †Zvgiv G RvZxq wKQy †`L‡j mvjvZ I `yÔAvq wbgMœ n‡q hv‡e hZ¶Y bv Zv `~ixf~Z nq| (eyLvix I gymwjg)

mvjvZzj BmwZmKv . صلاة الاستسقاء

عن عبد الله بن زيد بن عاصم المازنى رضي الله عنه قال : خرج النبي صلى الله عليه وسلم يستسقي، فتوجه إلى القبلة يدعو، وحول رداءه، ثم صلى ركعتين جهر فيهما بالقراءة. في لفظ : أتى المصلى. (متفق عليه)

Ave`yj­vn web hv‡q` web Av‡mg gvwhbx iv. †\_‡K ewY©Z, wZwb e‡jb, bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg BmwZmKv Z\_v e„wó cÖv\_©bvi D‡Ï‡k¨ evB‡i G‡m wKejvgyLx n‡q `yÔAv Ki‡jb Ges Pv`i Dwë‡q cwiavb Ki‡jb| AZtci D”P AvIqv‡h wKivAvZ cvV Ki‡jb| Ab¨ †iIqvqv‡Z G‡m‡Q wZwb gq`v‡b †ei n‡q Avm‡jb| (eyLvix, gymwjg)

A½xKvi c~Y©KiY . الوفاء بالوعد

عن أبي هريرة رضي الله عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال آية المنافق ثلاثة إذا حدث كذب وإذا وعد أخلف وإذا اؤتمن خان. (متفق عليه) وزاد في رواية لمسلم وغن صام وصلى وزعم أنه مسلم.

Avey ûivBiv iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡ib . Ògybvwd‡Ki wb`k©b wZbwU| hLb K\_v e‡j wg\_¨v e‡j, hLb A½xKvi K‡i f½ K‡i, Avi hLb AvgvbZ ivLv nq wLqvbZ K‡i| (eyLvix, gymwjg)

gymwj‡gi eY©bvq Av‡iv ejv n‡q‡Q, hw`I †m wmqvg cvjb K‡i| mvjvZ Av`vq K‡i Ges wb‡R‡K gymwjg e‡j `vwe K‡i|

fq I Avkv . الخوف والرجاء

وعن أبي هريرة، رضي الله عنه، عن رسول الله، صلى الله عليه وسلم أنه قال قال الله، عز وجل: أنا عند ظن عبدي بي وأنا معه حيث يذكرني ـ والله لله أفرح بتوبة عبده من أحدكم يجد ضالته بالفلاة ـ ومن تقرب إلي شبرا تقربت إليه ذراعا، ومن تقرب إلي ذراعا، تقربت إليه باعا، وإذا أقبل إليّ يمشي، أقبلت إليه أهرول. متفق عليه، وهذا لفظ إحدى روايات مسلم، وأنا معه حين يذكرني.

Avey ûivBiv iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb . Avj­vn ZvAvjv Bikv` K‡ib, ev›`v Avgvi m¤ú‡K© †hiƒc aviYv †cvlY K‡i Avwg Zvi mv‡\_ †m iƒc AvPiY K‡i \_vwK Ges †m †hLv‡b Avgv‡K ¯§iY K‡i Avwg Zvi mv‡\_B \_vwK| Avj­vni kc\_, †Zvgv‡`i †KD wbR©b cÖvš—‡i ¯^xq nvwi‡q hvIqv Rš‘ wd‡i †c‡j †hiƒc Avbw›`Z nI Avj­vn ZvAvjv ev›`vi ZvIev Øviv Gi †P‡q A‡bK †ewk Lywk nb| †h e¨w³ GK weNZ cwigvY AMÖmi nq Avwg Zvi w`‡K GK nvZ cwigvY AMÖmi nB| GK nvZ AMÖmi n‡j Avwg GK Kvqv cwigvY AMÖmi nB| Avi †nu‡U †nu‡U AMÖmi n‡j Avwg Zvi w`‡K †`Š‡o AMÖmi nB|

gymwj‡gi Ab¨ GKwU eY©bvq Av‡Q, †m hLb Avgv‡K ¯§iY K‡i Avwg Zvi Kv‡QB \_vwK|

وعن جابر رضي الله عنه قال : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: إذا دخل الرجل بيته، فذكر الله تعالى عند دخوله وعند طعامه، قال الشيطان لأصحابه : لا مبيت لكم ولا عشاء، وإذا دخل، فلم يذكر الله تعالى عند طعامه قال : أدركتم المبيت والعشاء. رواه مسلم.

Rv‡ei iv. †\_‡K ewY©Z, wZwb e‡jb, Avwg ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K ej‡Z ï‡bwQ, hLb †Kvb e¨w³ Avcb N‡i cÖ‡ek Kiv Kvjxb Ges Lvevi mgq Avj­vn‡K ¯§iY K‡i, kqZvb Zvi mnPi‡`i e‡j . AvwR †Zvgv‡`i fv‡M¨ iv‡Zi Lvevi I ivwÎ hvc‡bi e¨e¯’v †bB| Avi hw` Avj­vn‡K ¯§iY bv K‡i ZLb e‡j †Zvgv‡`i iv‡Zi Lvevi I ivwÎ hvc‡bi e¨e¯’v n‡q †Mj| (gymwjg)

mZ¨evw`Zv . الصدق

عن ابن مسعود رضي الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال : إن الصدق يهدي إلى البر وإن البر يهدي إلى الجنة، وإن الرجل ليصدق حتى يكتب عند الله صديقا، وإن الكذب يهدي إلى الفجور، وإن الفجور يهدي إلى النار، وإن الرجل ليكذب حتى يكتب عند الله كذاباً. متفق عليه.

Be‡b gvmD` iv. †\_‡K ewY©Z, bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡ib, wbðq mZ¨evw`Zv †bK ÔAvg‡ji w`K wb‡`©kbv †`q Avi †bK ÔAvgj Rvbœv‡Zi w`‡K wb‡q hvq| GKRb e¨w³ mZ¨ ej‡Z ej‡Z, GK ch©v‡q Zvi bvg Avj­vni wbKU wmÏxK Z\_v gnv mZ¨ev`x wn‡m‡e †jLv nq| wg\_¨v gvbyl‡K cvcvPv‡ii w`‡K avweZ K‡i| Avi cvcvPvi Rvnvbœvg ch©š— wb‡q hvq| GKRb e¨w³ wg\_¨v ej‡Z ej‡Z Zvi bvg GK ch©v‡q Avj­vni wbKU ÒKvhhveÓ Z\_v AwaK wg\_¨vev`x wn‡m‡e †jLv n‡q hvq| (eyLvix, gymwjg)

KziAv‡bi dhxjZ . فضل القرآن

عن أبي أمامة رضي الله عنه قال : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : اقرؤوا القرآن، فإنه يأتي يوم القيامة شفيعا لأصحابه. (رواه مسلم)

Avey Dgvgv iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~jyj­vn mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡jb, †Zvgiv KziAvb wZjvIqvZ Ki| †Kbbv KziAvb wKqvgZ w`e‡m Zvi Abymvix‡`i Rb¨ mycvwikKvix wn‡m‡e Avwef©~Z n‡e| (gymwjg)

وعن عائشة رضي الله عنها قالت : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الذي يقرأ القرآن وهو ماهر به مع السفرة الكرام البررة، والذي يقرأ القرآن ويتتعتع فيه وهو عليه شاق له أجران. متفق عليه.

Av‡qkv iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡ib . †h KziAvb c‡o Ges †h AwfÁ Zvi Ae¯’vb †jLvi Kv‡R wb‡qvwRZ m¤§vwbZ c~Z cweÎ †d‡ikZv‡`i mv‡\_| Avi †h e¨w³ Kó ¯^xKvi K‡i †V‡K †V‡K wZjvIqvZ K‡i †m wØ¸Y mvIqvecÖvß n‡e| (eyLvix, gymwjg)

وعن ابن عمر رضي الله عنهما عن النبي صلى الله عليه وسلم قال : لا حسد إلا في اثنين: رجل آتاه الله القرآن ، فهو يقوم به آناء الليل وآناء النهار، ورجل آتاه الله مالاً، فهو ينفقه آناء الليل وآناء النهار. (متفق عليه)

Be‡b Dgi iv. †\_‡K ewY©Z, bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡i‡Qb . GKvgvÎ `yÕ ai‡bi e¨w³i mv‡\_ Cl©v Kiv hvq| GK e¨w³ hv‡K Avj­vn ZvAvjv KziAv‡bi Ávb `vb K‡i‡Qb Avi †m w`b ivZ Zv Aa¨q‡b e¨¯— \_v‡K| wØZxq e¨w³ hv‡K Avj­vn ZvAvjv abÑm¤ú` `vb K‡i‡Qb Avi †m w`b ivZ (Avj­vni c‡\_) e¨q K‡i| (eyLvix, gymwjg)

KwZcq Av`e : آداب

عن أبي هريرة رضي الله عنه؛ أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : إذا تؤضأ أحدكم فليجعل في أنفه ماءً ثم لينتثر ومن استجمر فليوتر وإذا استيقظ أحدكم من نومه فليغسل يديه قبل أن يدخلهما في الإناء ثلاثا. فإن أحدكم لا يدري أين باتت يده. في لفظ لمسلم. فليستنشق بمنخريه من الماء وفي لفظ : من توضأ.

Avey ûivBiv iv. †\_‡K ewY©Z, ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡ib : †Zvgv‡`i †KD Ihy Ki‡j †hb bv‡K cvwb cÖ‡ek Kivq, AZtci †S‡o †d‡j| Avi †h cv\_‡ii gva¨‡g Bw¯—Äv Ki‡Z Pvq †m †hb †e‡Rvo msL¨vi cv\_i e¨envi K‡i| (†Zvgv‡`i †KD Nyg †\_‡K RvMÖZ n‡j cvwbi cv‡Î nvZ †`qvi c~‡e© wZb evi ay‡q wb‡e| †Kbbv iv‡Z Zvi nvZ †Kv\_vq wQj Zv Zvi Rvbv †bB|

gymwjg kix‡di Aci GK eY©bvq G‡m‡Q . †m †hb bvmvi‡›`ª cvwb cÖ‡ek Kivq| Av‡iKwU eY©bvq Av‡Q . †h IHYy Kivi B”Qv K‡i|

nuvwP †`qv I nvB †Zvjv . العطاس والتثاؤب

عن أبي هريرة رضي الله عنه أن النبي صلى الله عليه وسلم قال : إن الله يحب العطاس ويكره التثاءب فإذا عطس أحدكم وحمد الله تعالى كان حقا على كل مسلم سمعه أن يقول له يرحمك الله، وأما التثاؤب فإنما هو من الشيطان فإذا تثاءب أحدكم فيرده ما استطاع فإن أحدكم إذا تثاءب ضحك منه الشيطان. (رواه البخاري)

Avey ûivBiv iv. †\_‡K ewY©Z, bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg e‡j‡Qb wbðq Avj­vn ZvAvjv nuvwP cQ›` K‡ib Ges nvB †Zvjv AcQ›` K‡ib| †Zvgv‡`i †KD nuvwP w`‡q ÔAvjnvg`y wjj­vnÕ ej‡j cÖ‡Z¨K gymwjg †kÖvZvi Dci يرحمك الله ejv IqvwRe n‡q hvq| Avi nB kqZv‡bi c¶ †\_‡K| Kv‡iv nvB‡qi D‡`ªK n‡j mva¨ gZ `gb Kivi †Póv Ki‡e| †Kbbv nvB Zzj‡j kqZvb Zv wb‡q nvmvnvwm K‡i| (eyLvix)

وعنه عن النبي صلى الله عليه وسلم: إذا عطس أحدكم فليقل: الحمد لله، وليقل له أخوه أو صاحبه: يرحمك الله. فإذا قال له: يرحمك لله، فليقل يهديكم الله يصلح بالكم. (رواه البخاري)

Ave~ ûivBiv iv. e‡jb, bex Kixg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Bikv` K‡i‡Qb : †Zvgv‡`i †KD nuvwP w`‡j ej‡e الحمد لله (mKj cÖksmv Avj­vn ZvAvjvi) Avi Zvi fvB ev cvk¦©¯’ e¨w³ ej‡e يرحمك الله (Avj­vn †Zvgvi Dci `qv Ki“b)| يرحمك الله ejv n‡j †m ej‡e يهديكم الله ويصلح بالكم Avj­vn †Zvgv‡`i wn`v‡qZ `vb Ki“b Ges †Zvgv‡`i Aš—i cwiï× Ki“b| (eyLvix)

AbygwZ cÖv\_©bv . الاستئذان

عن ربعي بن خراش قال: حدثنا رجل من بنى عامر استأذن على النبي صلى الله عليه وسلم وهو في بيت، فقال: أألج؟ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لخادمه : اخرج إلى هذا فعلمه الاستئذان، فقل له: قل: السلام عليكم، أأدخل فسمعه الرجل فقال : السلام عليكم ، أأدخل؟ فأذن له النبي صلى الله عليه وسلم، فدخل. (رواه أبو داود بإسناد صحيح)

wieqx web wnivk eY©bv Ki‡Qb, ebx Av‡g‡ii GK †jvK Avgv‡`i nv`xm ïwb‡q‡Qb †h, wZwb ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg †K wbKU N‡i Ae¯’vb Kv‡j AbygwZ cÖv\_©bv K‡i ej‡jb أألج؟ A\_©vr Avwg wK wfZ‡i cÖ‡ek Kie? ivm~j mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Avcb Lv‡`g‡K ej‡jb, Zzwg wM‡q Zv‡K AbygwZ cÖv\_©bvi wbqgvewj wk¶v w`‡q Zv‡K ej‡Z e‡j : السلام عليكم أأدخل؟ Avmmvjvgy AvjvBKzg, Avwg wK Avm‡Z cvwi? ZLb †m †jvK ej‡jb, السلام عليكم أأدخل؟ bex AvKivg mvj­vj­vû AvjvBwn Iqv mvj­vg Zv‡K AbygwZ w`‡jb Ges †m cÖ‡ek Kij| (weï× mb‡` Ave~ `vD`)

من المراجعة والمصادر

|  |  |
| --- | --- |
|  | 1- القرآن الكريم كتاب الله تعالى |
| للإمام أحمد بن عبد اللطيف الزبيدي | 2- مختصر صحيح البخاري |
| تأليف الشيخ عبد الرحمن بن حسين آل الشيخ | 3- مختصر صحيح مسلم |
| للحافظ أبي زكريا يحى بن شرف النووي | 4- رياض الصالحين |
| تأليف لشيخ عبد الرحمن بن حسن آل الشيخ | 5- فتح المجيد شرح كتاب التوحيد |
| لمحمد بن سليمان رحمه الله | 6- الأصول الثلاثة |
| لمساحة الشيخ محمد بن صالح العثيمين رحمه الله. | 7-أذكار اليوم والليلة |
| تأليف الشيخ الدكتور سعيد بن وهف القحصاني | 8- حصن المسلم |
| للسيد سابق | 9- فقه الســنة |
| للأستاذ صفي الرحمن المبارك فوري | 10- الرحيق المختوم |
| للإمام الحافظ عبد الغني المقدسي | 11- عمدة الأحكام من كلام خير الأنام |

Z\_¨cÄx :

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| bs | wKZv‡ei bvg | †jLK |
| 1 | AvjÑ KziAvbyj Kvixg |  |
| 2 | gyLZvmvi mnxûj eyLvix | Bgvg Avng` web Avãyj jZxd hvevB`x |
| 3 | gyLZvmvi mnxn gymwjg | kvqL Avãyi ingvb web nvmvb Av‡j kvqL |
| 4 | wiqvhym mvwjnxb | nv‡dh Avey hvKvwiq¨v BqvnBqv web kid beex |
| 5 | dvZûj gvRx` ki‡n wKZveyZ ZvInx` | kvqL Ave`yi ingvb web nvmvb Av‡j kvqL |
| 6 | Avj Dm~jym mvjvQvn | gynv¤§` web myjvBgvb in. |
| 7 | AvhKvi“j BqvIwg Iqvj jvBjvn | kvqL gynv¤§` web mv‡jn Avj DmvBgxb |
| 8 | wnmbyj gymwjg | kvqL W. mvqx` web Iqvnvd Avj KvnZvbx |
| 9 | wdKûm mybœvn | mv‡q¨` mv‡eK |
| 10 | Avi inxKzj gvLZzg | D¯—v` mdxDi ingvb AvjÑ gyeviKcyix |
| 11 | Dgv`vZzj AvnKvg | Bgvg nv‡dh Avãyj MYx gyKvÏvmx |

mgvß